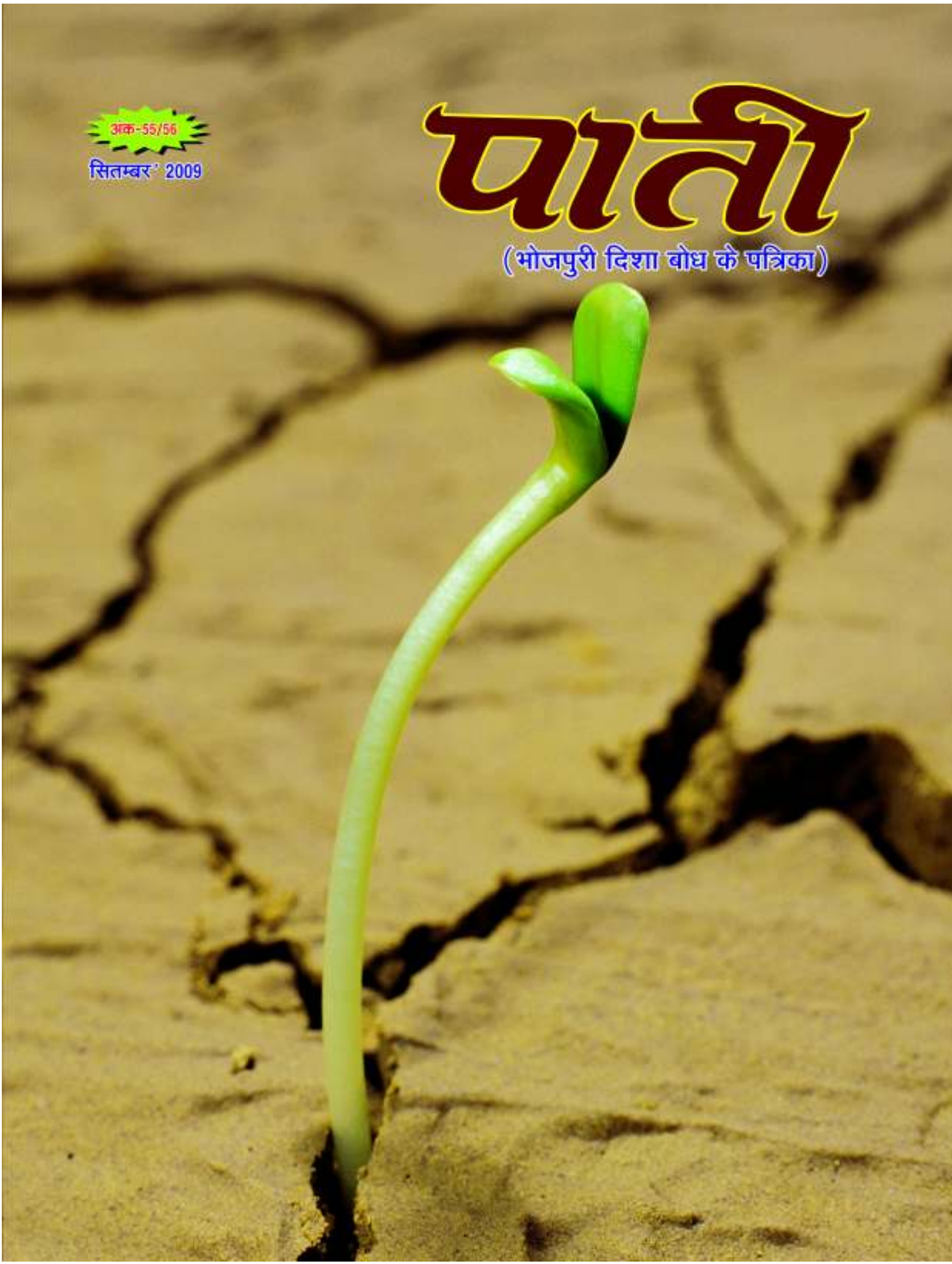

अंक-55/56
सितम्बर' 2009
पाती
(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

बदरा रे बदरा !

(एक) ❑ अशोक द्विवेदी

जाए के कहवाँ,
थथाइल गइलऽ, कहवाँ ?
हाय राम बदरा, बन्हाइ गइलऽ कहवाँ ?

गँउवाँ-गिरउवाँ के
जगहा शहरिया
तहरो के नीक लागे माया-नगरिया
फिल्मी तरज प' हेराइ गइलऽ कहवाँ ?

हदसल लोगवा
हकासल माटी
छछनल धरती पियासल बाटी
निर्दय बररू, भुलाइ गइलऽ कहवाँ ?

काठ क करेज कइलऽ
उजड़ेला खोंता
धनवा के जगहा, पसरि गइले मोथा
बदरू हो बदरू, पराइ गइलऽ कहवाँ ?

गरमी जगावेले
संझा पराती
तलवा-तलइयन क
दरकेला छाती
हुड़के में सब, तूँ लुकाइ गइलऽ कहवाँ ?

बम्बइया धुन प तूँ
कबले थिरकलऽ ऽ
सुनलीं कि ओइजाँ झमाझम बरिसलऽ
आवे के एइजा, उँघाइ गइलऽ कहवाँ ?

●●

(दू) ❑ कन्हैया पाण्डेय

भइया, लड़िकवन के मन भइले अदरा
आइ के झमकि जइतऽ, केनियो से बदरा !

नदिया, पोखरवन क सूखि गइल पानी
अबले चुवल नाहीं, कतौं ओरियानी
तनि एक भेंइ जइतऽ, धरती के अँचरा !

सगरी बिरउवन क जरल जाता पाती
चिरई-चुरुंगवो ले पीटऽतारे छाती
घेरले बा सुखला क सगरो से खतरा !

भइले बेहाल जन, तड़पेली धरती
आधे बोआइल, अधवा बा परती
आइ के बनाइ देतऽ खेतिया क जतरा !

अबकी उजरि जइहें, गरिबा के दुनिया
परले अफदरा में होरी अउर धनिया
झूठ कइ देतऽ आके बम्हना क पतरा !

आइ के झमकि जइतऽ, केनियो से बदरा !!

●●

प्रबन्ध संपादक
प्रगति द्विवेदी
संपादक
डा० अशोक द्विवेदी
संपादन सहयोगी
विष्णुदेव, सान्त्वना
डिजाइन आ ग्राफिक्स
वर्तिका
सज्जा
आस्था
कंपोजिंग
राजीव कुमार 'राजू'

विषेश प्रतिनिधि
सुशील कुमार तिवारी (नई दिल्ली), गिरिजा शंकर राय 'गिरिजेश' (गोरखपुर), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), विष्णुदेव तिवारी (बक्सर, आरा), विनय बिहारी सिंह (कोलकाता), गंगा प्रसाद 'अरूण' (जमशेदपुर), डॉ० ब्रजभूषण मिश्र (मुजफ्फरपुर), डा० कमलेश राय (मऊ, आजमगढ़), डा० प्रकाश उदय, विनोद द्विवेदी (वाराणसी), डा० वशिष्ठ अनूप (जौनपुर), जितेन्द्र पांडे (मुम्बई), मिथिलेश गहमरी, कुबेर नाथ पाण्डेय (गाजीपुर), हीरालाल 'हीरा', कन्हैया पाण्डेय (बलिया)।

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा० ओम प्रकाश सिंह

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
संपादन-कार्यालय :-
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-२७७००१
फोन- ०५४९८-२२१५१०, मो०- ०९४१५८१९४५३
e-mail :- ashok.dvivedi@rediffmail.com

एह अंक पर सहयोग- २५/-
सालाना सहयोग राशि १३०/-

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ : ओसे पत्रिका परिवार क सहमति जरूरी नइखे)

पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)
www.bhojpuripaati.com

अंक 55/56 (संयुक्तांक) जून, सित0 2009

एह अंक में.....

हमार पन्ना
- बासठ बरिस बाद : आजादी क मतलब/२
- कृषि प्रधान देश के विकास-यात्रा/२-३

कबीर जयंती पर विशेष
- साधो ई मुरदन के देस/भगवती प्रसाद द्विवेदी/४-५

सरोकार
- भोजपुरी क्षेत्र के छात्र राजनीति/सान्त्वना/१४-१५

हस्तक्षेप
- भोजपुरिया समाज के कुनैन पियाईं/प्रमोद कु० तिवारी/१०-११

कैरियर -
- युवा-भविष्य आ ओकर "कैरियर"/ आकांक्षा द्विवेदी/६-७

मुद्दा
- आधुनिकता, संस्कृतिकरण, राजनीति/सुशील कुमार तिवारी/१२-१३

सामयिकी
- बिन पानी सब सून../ हीरा लाल 'हीरा'/ ८-६

कविता/गीत/गज़ल
- कमलेश राय/५
- बशर आर.बी./१३
- मिथिलेश गहमरी/२१
- कुमार विरल/२१
- रामेश्वर सिन्हा 'पीयूष'/२०
- अशोक द्विवेदी/कवर-२
- कन्हैया पाण्डेय/कवर/२
- हरिशंकर पाठक 'गुमनाम'/कवर-३

प्रसंगवश
- ब्राह्मणवाद आ राउर भोजपुरी/विष्णुदेव तिवारी/३६-३९

उपन्यास
- दालभात तरकारी/ डा० रमाशंकर श्रीवास्तव/२२-३५

कहानी
- 'अंगुठी के नगीना'/राजगुप्त/१६-१७
- बोलावा/आशा रानी लाल/१८-२०

लघुकथा
- जात बिरादर/मोती बी०ए०/४३
- समानअधिकार/रामभरोसे/७
- घाटा के सउदा/विनोद द्विवेदी/४३
- इमानदारी/भोला प्रसाद आग्नेय/४६
- किरकिटिया बोखार/चितरंजन भारती/४६

कसौटी
- एगो विचार प्रधान कहानी संग्रह 'ठेंगा'/विष्णुदेव/४०
- टेढ़ जिनिगी के सीधा डंड़ार/चउका बइठल महादेव/४१-४२
- भोजपुरी व्याकरण के बेजोड़ किताब 'भोजपुरी-हिन्दी'/सान्त्वना/४२-४३

पंडित जी के पतरा
- डा० नरेन्द्र कु० तिवारी/४४-४५

(एक) बासठ बरिस बाद आजादी क मतलब

'स्वतंत्रता' भा 'आजादी' के जशन मनावत केतने साल बीति गइल बाकिर आजो कुछ सवाल ओही तरे मुँह बवले खड़ा बाड़न स। आजादी का बाद हमहन का देश में का आजो सबके बरोबरी (समानता) के अधिकार मिलल बा? सामाजिक समानता का राह में ऊँच-नीच आ जाति-सम्प्रदाय का अपना दंभ आ श्रेष्ठता का पूर्वाग्रह का जरिये, हमनी का इन्सान इन्सान में भेद नइखीं जा करत? एतना साल बादो का हमहन के सोच आ व्यवहार बदल गइल बा? आर्थिक असमानता के बात अलग बा; बाकिर का मरद-औरत आ लइका-लइकी में भेद कइल छूट गइल बा? हिन्दू-मुसलमान, सिख, इसाई, शहरी-देहाती पढ़निहार आ गँवार से लेले संप्रदायिकता आ क्षेत्रीयता के लेके होखे वाला राजनीतिक गोलबंदी आ नफरत का अब खतम हो गइल बा?

एतना बरिस भइल आजादी आ सुशासन के; बाकिर हमनी का क्षेत्र - उत्तर भारत में निरक्षरता आ गरीबी के खात्मा ना हो सकल। परंपरा आ आधुनिकता के द्वन्द त चलत रही, बाकिर हमहन के अंधविश्वास , पाखण्ड, ढोंग आ गलत रूढ़ियन से छुटकारा कब मिली? मानवीय ज्ञान आ विवेक कबले अतना समर्थ होई कि अज्ञान, अशिक्षा आ अंधविश्वास के अन्हरिया खतम कर सकी? आखिर ई यथास्थिति आ ओही प घूम-फिरि के लवटे क मजबूरी कब खतम होई?

एगो मजबूत विकसित राष्ट्र बने आ ओमे रहे वाला लोगन के सुरक्षित आ खुशहाल बनावे वाला सुराज आ सुदिन कहिया ले आई ? एकरा खातिर हमहन के सोच आ रवैया में बदलाव लउकल जरूरी बा।

(दू) एगो कृषि प्रधान देश के विकास-यात्रा

एकइसवीं सदी में एगो कृषि प्रधान देश के विकास यात्रा के विसंगति ई बा कि ऊ 'दिन भर चले अढ़ाई कोस' का चाल में आपन भविष्य संवार रहल बा। सरकार जेतना चिन्ता कृषि क्षेत्र आ किसानन खातिर देखावत बा ओतना करतब नइखे लउकत। मिले वाला फायदा घोषणा आ कागजी योजना में अझुरा जात बा। दरअसल कृषि जगत के आधारभूत संरचना सिंचाई, उत्पादन-संरक्षण, भंडारण, यातायात, जल-प्रबन्धन, पर्यावरण-संरक्षण आदि का ममिला में आज एह देश के जतना मजबूत आ स्वावलंबी होखल चाहत रहे, ओतना नइखे हो सकल। सरकारी आश्वासन , आ उतजोग में जइसन गंभीर प्रयास, ईमानदारी आ 'फालोअप' के जरूरत रहे ओइसन ना भइल। तबे नू लगातार, सूखा, बाढ़, पर्यावरण विसंगति, जल प्रदूषण, भूजल-स्तर में गिरावट, बिजली संकट, उत्पादन के समुचित भण्डारण आ वितरण के अभाव आदि के लेके आजुओ सब जूझ रहल बा।

मध्य प्रदेश, बुन्देलखण्ड, उत्तर प्रदेष आ बिहार के किसान लगातार नियति के मार आ प्रकृति कोप त झेलते बाड़न, सरकारी मशीनरी के ढिलाई, आ क्षेत्रीय दुर्व्यवस्था शिकार होके बड़ बड़ शहरन में मजदूरी आ रोजगार खातिर पलायन करे प मजबूर बाड़न। एह क्षेत्र क सबसे विकराल समस्या बा अनियमित बरखा, आकस्मिक सूखा, अनियंत्रित बाढ़ का प्रदूषित जल स्रोत। भूजल स्तर में लगातार हो रहल तेज गिरावट, सिंचाई आ जल-संरक्षण के खस्ता हाल आ दुर्दशाग्रस्त स्थिति अगले धिरावत बा।

कवनो आपदा-प्रबन्धन आ ओसे निपटै के तइयारी क पोल तब खुल जाले जब आपदा आवेले। ई पोल बार बार खुलत रहल बा; बाकि जइसन कि ऊपर कहल गइल बा कि भर दिन चले अढ़ाई कोस।' भारी बारिश आ बाढ़ से निपटे क जवन मजबूत तइयारी साठ बरिस में होखे चाहत रहे, आजु ले ना भइल। अब त खैर बरखवे नइखे। जुलाई का अंत ले जतना बरखा होखे के चाहीं ओसे कहीं चालीस कहीं पचास कहीं साठ प्रतिशत ले कम बा। उत्तर प्रदेश के अन्ठावन गो जिला सूखाग्रस्त हो गइल बाड़न स5 आ पूरा देष में १६१ गो सूखा से यू०पी० आ बिहार सबसे अधिका प्रभावित बा।

भूजल-स्तर में लगातार गिरावट दिन ब दिन बढ़त जात बा। पूर्वांचल के गंगाक्षेत्र में भूजल में बढ़त आर्सेनिक के मात्रा चिन्ताजनक स्थिति में बा। वर्षा-जल के संरक्षण के कवनो पुख्ता इंतजाम आ तइयारी ना रहला से, आवे वाला जल-संकट अउर गहिर होत लउकत बा। पूर्वांचल के कृषि-विज्ञानी, प्रतिभा आ खोज में पाछा नइखन, बाकिर उनहन के सुझाव आ खोज पर ना त सरकारे गंभीर बा, ना क्षेत्रीय किसान। उदाहरण में; पुरान नदी नाला, नहर, ताल, सरोवर, कुंड, दह आदि जहाँ बटुराइल जल, क्षेत्रीय जल संकट के कम करत रहे, पुख्ता तकनीकी देखभाल ना रहला आ क्षेत्रीय लोगन का अपेक्षा का कारन सूखि गइलन या भठा गइलन स। बारंबार चेतावनी का बादो किसानन के रासायनिक खाद पर निर्भरता कम ना भइल।

अब पैदावार में लगातार हो रहल गिरावट का कारन किसानन में, क्रय शक्ति घटल जात बा। अखबारी सूचना का मोताबिक एहर का किसानन में दरिद्रता आ गरीबी २० फीसदी बढ़ल बा। सरकार एह कमी के पाटे खातिर, बैंकन से कृषि कर्जा का क्रेडिट कार्ड बंटवा के संतुष्ट हो गइल। कृषि खातिर दिहल गइल, वित्तीय सहायता के शत प्रतिशत उपयोग कृषि कार्य खातिर ना होके, दोसरा अनुत्पादक कामन खातिर ज्यादा भइल। ऋणमाफी से कर्ज के ना लौटावे के एगो नया प्रवृत्ति पैदा भइल- ई सोच के कि सरकार एक न एक दिन कर्जवे माफ क दी। पछिला कर्ममाफी एह 'सोच' के अउर उत्साहित कइलस।

हमनी का प्रदेश उत्तर प्रदेश में, सरकारी स्तर पर सत्रह जिला, पिछड़ा का रूप में रेघरियावल गइल बाड़न स, जबकि ई संख्या कमसे कम पचीस गो होखे के चाही। 'पिछड़ा' का रूप में चीन्हे आ चिन्हावे वाला काम सरकार के हऽ, बाकि एह काम में ऊ खुदे पिछड़ल बिया। बलिया, गाजीपुर, मिर्जापुर, सोनभद्र के स्थिति बहुते खराब बा। दुसरा ओर देवरिया, गोरखपुर, जौनपुर, सिद्धार्थनगर बाड़न स। ऊपर से मानसून के बेरूखी एह जिलन के अउर पिछड़ा आ दयनीय बना देले बा। खरीफ फसल आ धान के उत्पादन प गरहन लाग गइल बा। छोट किसानन आ कृषि मजदूरन खातिर आगा आवे वाला समय अउर कठिन आ भयावह होई। दुखद स्थिति इहो आ सकेले कि अनाज के कीमतन में बेतहासा बढ़ोत्तरी से भुखमरी के लड़ाई अउर कठिन हो जाई।

मानसून फेल भइला आ भावी सूखा के देखि के सरकारी आश्वासन इहे बा कि - चावल, गेहूँ के भरपूर बफर-स्टाक बा। पछिला बेर भंडारण-व्यवस्था क त्रुटि से बफर-स्टाक के अनाज बेचे के परल रहे। गनीमत बा कि एह साल बेचाइल नइखे- बाकि ५.५ करोड टन अनाज से केतना दिन तक, केतना लोगन के पेट भरल जाई? आवे वाला पूरा साल, जवना सूखा से प्रभावित रही अन्न के भारी अभाव के, ई बफर स्टाक सँभार पाई कि ना?

कृषि मंत्रालय के एगो रिपार्ट पढ़े सुने के मिलल, जवना से मालूम भइल कि समुचित भण्डारण आ परिवहन का ठीक ना रहला का कारन ३० फीसदी सब्जी आ २० फीसदी फल बर्बाद हो गइल। सरकार 'उत्पादन' के अपना उपलब्धि के रूप में त गिना देले बाकि एह बर्बादी के कवनो जिमवारी ना लेले। ३० से ४० फीसदी सब्जी आ फल सड़ला क मतलब होला। लगभग ४० हजार करोड़ के बर्बादी। किसान बेचारा त अधिका पैदा कइयोके दुखी बा। बिचौलिया दलाल दूनों में खुशहाल बाड़न - चाहे कम पैदावार होखे चाहे अधिका। मानसून-विफलता आ अनाज-उत्पादन के भावी संकट का कोखी में अउरी अनगिनत समस्या जनम लेबे खातिर कुलबुलात बाड़ीसन। ओह कूल्ही से निपटे खातिर सरकारी महकमा में कवनो तइयारी लउकत नइखे। काहे कि मानसूने पर आश्रित आ निर्भर रहे वाला कृषि क्षेत्रन खातिर आजु ले कवन ठोस उपाय, प्रबन्ध आ उतजोग कइल गइल बा? आज के संकट एह असलियत के पोल खोल रहल बा। सबुर, आस आ भरोस पर आवे वाला समय ना काटल जा सके।

(अशोक द्विवेदी)

-: कबीर जयन्ती पर विशेष :-

साधो, ई मुर्दन के देस !

❑ भगवती प्रसाद द्विवेदी

अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के रेणुकूट अधिवेशन में, जवना के सदारत डॉ० विद्यानिवास मिश्र जी कइले रहलीं, सर्वसम्मति से ई निरनय लिहल गइल रहे कि भोजपुरी के आदि कवि कबीर के जयन्ती हरेक बरिस 'भोजपुरी दिवस' का रूप में मनावल जाई आ ऊ तारीख मुकर्रर कइल गइल रहे- बीस जून। ओकरा बाद अउरियो संस्था भोजपुरी दिवस मनावल शुरू कइली स।

ओइसे त कबीर-काव्य के भाषा के केहू सधुक्कड़ी मनले बा, त केहू पंचमेल खिचड़ी, बाकिर सही माने में ऊ ठेठ भोजपुरी ह, जवना के काशी के लोग काशिका कहेला। कबीर बाबा खुदे सँकरले बाड़न- 'भासा मेरी पूरबी।' एक जगहा ऊ अउर साफ-साफ कहले बाड़न :

बोली हमरी पूरब की, हमें लखे नहिं कोय
हमको तो सोई लखे, जे पूरब के होय।

ई पूरब के बोली-बानी खाँटी भोजपुरी ह, जवना के पूरबियो कहल जाला आ जहवाँ के बेमिसाल लोकधुन ह पूरबी, जवना के प्रवर्तक अउर बेताज बादशाह महेन्दर मिसिर के मानल जाला। एह से भोजपुरी के आदि कवि कबीर के भाषा का बारे में अब कवनो शक-सुबहा के गुंजाइशे नइखे बाँचत।

खाली भोजपुरी हलका में जनमले से ना, बलुक कबीर के व्यक्तित्व के कई गो खूबी एगो खाँटी भोजपुरिया के इयाद दियावत रहे। एगो भोजपुरिया मनई मतिन उनकर अक्खड़ सुभाव रहे। बेगर कवनो लाग-लपेट के साफ-साफ आ दू टूक कहे में ऊ विश्वास राखत रहलन। जवन कुछ ऊ ठानि लेत रहलन, कइए के दम लेत रहलन। रामानन्द के जब ऊ गुरू बनावे के ठानि लिहलन, त उन्हुका ना-नुकुर कइला के बावजूदो अइसन तरीका अपनवनल कि आखिरकार गुरू रामानन्द के उन्हुका के चेला बनावहीं के परल। उन्हुका आपन घर फूँकि के तमाशा देखे में मजा आवत रहे। तबे नू, लुआठी लेके ऊ आपन घर जरावे वाला के सँघतिया बनावल चाहत रहलन :

कबिरा खड़ा बजार में, लिए लुकाठी हाथ
जो घर जारे आपनो, चले हमारे साथ।

भोजपुरिया मनई के इहे त खासियत होला कि ऊ अपना नफा-नुकसान के कतई परवाह ना करेला आ अपना गोड़ पर अपने कुल्हाड़ी मारे से गुरेज ना करे। नतीजतन, भोजपुरिया राष्ट्रपति आ प्रधानमंत्रियो भोजपुरी खातिर कुछऊ ना कइलन। जवना घरी आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी साहित्य अकादमी के अध्यक्ष रहलीं, ओह समय में भोजपुरी के मान्यता के सवाल पर एगो सदस्य त पक्ष में रहलन, बाकिर दोसर जाना विरोध में आ अध्यक्ष के मत पर अन्तिम निरनय होखे वाला रहे। अध्यक्ष जी एह कारन से विरोध में मत देले रहलीं कि उहाँ पर भोजपुरी के पक्षपात कइला के आरोप मति लागो। एकर खुलासा खुद उहाँ के अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के पटना अधिवेशन के अध्यक्षता करत कइले रहलीं। आपन घर जारे के एह से बढ़ि के अउर कबीरी दर्शन के नमूना का हो सकेला ?

अपना व्यंग्योक्ति, वक्रोक्ति आ उलटबांसी खातिर कबीर मशहूर रहलन। एही से चोट भा प्रहार करे से ऊ कबो पाछा ना हटत रहलन आ एकर खामियाजा उन्हुका ताजिनिगी भोगे-भुगते के परल रहे। चाहे राजसत्ता होखे भा लोकसत्ता- एगो साँच-साफ भोजपुरियो कबो राजसुख भोगे खातिर ना ललचल आ हरदम विरोधे के झंडा गाड़िके इंकलाबी सुर बुलंद करत आइल बा। एही से राजशाही आ लोकशाही एकरा से डेरात-घबरात आइल बिया आ भोजपुरी अउर एकरा बोलनिहारन के घोर उपेक्षा करत साजिश के तहत वाजिबो हक से वंचित कइल जात रहल बा। बाकिर अइसन बड़मुंहवन से जूझ आ लोहा लेबे में ना त कबीर पाछा रहलन, ना भोजपुरी आ भोजपुरिया। तबे नू अइसना लोगन आ शासन-तंत्र के कोपभाजन बनला के बावजूद कबीर के जनकवि का रूप में अमरता हासिल भइल। आजु अगर केहू सबसे जियादा प्रासंगिक बा त ऊ कबीरे बाड़न। बाकिर सरकार-शासन के त बाते छोड़ीं, खुद भोजपुरियो लोग उन्हुकर जयन्ती मनावे से काहें कतरा रहल बा ?

इहो बेवजह नइखे। कबीर ताजिनिगी जवना बुराइयन से दूर रहे के आह्वान कइलन, समाज ओही मय बुराइयन में आकंठ डूबल बा। ऊ बेरि-बेरि बतवलन कि हिन्दू-मुसलमान आ धरम-मजहब के टंटा बेकार बा, काहें कि दूनो के मंजिले ना, राहो एकही बा- 'हिन्दू-तुरक की राह एक है, सद्गुरू इहे बताई।' बाकिर तबो उहे मजहबी मारकाट आ खून-खराबा। अब त धरम-मजहब से आगा बढ़िके जात-पांत, अगड़ा-पिछड़ा आ ऊंच-नीच ले ममिला पहुंचि चुकल बा। जवना कठमुल्लापन, पोंगापंथी,

कुरीति, अंधविश्वास आ ढकोसला से बाबा के दिली नफरत रहे आ जवना के खिलाफ ऊ सामाजिक बदलाव खातिर जनचेतना जगावत रहलन, समाज उन्हनिएं में लिप्त होके गौरवान्वित महसूस करत बा। 'पंडित होके आसन मारे, लम्बी माला जपता है/अंतर तेरे कपट कतरनी, सो भी साहब लखता है' आ 'कांकर-पाथर जोरि के मस्जिद लई बनाय/ता चढ़ि मुल्ला बांग दे, का बहरा हुआ खुदाय' का जरिए ऊ दूनो धरम के आडम्बर पर जमिके चोट कइलन आ ई चुनौतियो दिहलन- 'तू बाभन, मैं काशी का जुलाहा, बूझो मोर गियाना।'

धरम आ पूजा-पाठ का जगहा ऊ करम आ मेहनत के महातम बतवलन आ साफ-साफ कहलन- 'पाहन पूजे हरि मिले, तो मैं पूजूं पहाड़/ ता तैं ई चाकी भली, पीस खाय संसार।' अनाज पीसे वाला जांत का जरिए ऊ, ना खाली श्रम के, बलुक नारी शक्ति का ओर संकेत कइले रहलन, काहें कि तब चक्की चलावे वाली मेहरारूए लोग रहे आ एही से ऊ पाथर-पहाड़ पुजला का जगहा चाकी आ स्त्री के पूजे के वकालत कइले रहलन।

'कागज के लेखी' का जगहा 'आंखिन देखी' के माने वाला कबीर के विचार आजु जो सर्वाधिक प्रासंगिक बा त ओकर सबसे बड़ कारन बा ठोस जमीन से गहिर जुड़ाव। समाज में कुकुरमुत्ता-अस फइलल सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आ राजनीतिक प्रदूषण के जदी जरी-सोरी कबारि फेंके के बा, त कबीर के विचार के तहेदिल से आत्मसात करहीं के परी। बाकिर का ई सम्भव बा ? काहें कि - साधो, ई मुर्दन के देस !

कइसे गीत रचीं ?

❑ कमलेश राय

आखर-आखर लगे धुँवाइल
सबद-सबद संगीन तनाइल
कइसे गीत रचीं?

बेचि-बेचि दियना बाती घर आँगन कऽ
अब अंजोर जोहे सब, चांद सितारन में
सूरूज पर डाका, अकास में पहरा बा
भोर के चर्चा बा अखबारन में।
कइसन नया बिहान गढ़ाइल
राति अउर लागे गर्हुआइल
कइसे गीत रचीं ?

क्रौंच नियर जिनिगी छपिटात मिले
उठत दरद कऽ ऊ तूफान कहाँ
दर दर कलपत मिलें अबो होरी धनियां
पीर पढ़े वाला ऊ 'गोदान' कहाँ ?
भीतर के सब आगि झंवाइल
संवेदना लगे कठुवाइल,
कइसे गीत रचीं ?

मन में लेके टीस, लोर भर- आँखिन में
फागुन नियर हँसल मजबूरी बा
छन्द छन्द में गमक राग-दरबारी कऽ
हर अलाप के संगे आज जरूरी बा
अइसन हाट-बजार छनाइल
कलम आज बिन मोल बिकाइल
कइसे गीत रचीं?

जब उछाह के राग-मल्हार रचल चाहीं
मन गा उठे मर्सिया रो-रो के
घाव हिया के फूटि-फूटि के बहि जाला
अरमानन कऽ ताजिया ढो ढो के
जब कवनो सपना अँखुवाइल
पलकन बीच दबल मुर्झाइल,
कइसे गीत रचीं ?

●●●

कैरियर

युवा-भविष्य आ ओकर "कैरियर"

❑ आकांक्षा द्विवेदी

"मजाके मजाक में आज एम बी ए हो गइल यार !" ई कहनाम रहे लगभग साठ पर्सेन्ट लइका-लइकिन के; जवन हाले में चउथा 'सेमेस्टर' के आखिरी 'पेपर' बड़ा (आत्मविश्वास) 'कन्फिन्डेन्स' से बिना पढ़ले दिहले रहलन स। कुच्छे दिन बाद रिजल्टो आ गइल। सचहूँ पंचानबे प्रतिशत लइका-लइकी, अच्छा नंबर पाके पास रहलन स।

कैम्पस से बहरी-भितरी आवत जात खा जवन सहपाठी (क्लासमेट) भेंटइलन, सबसे एक्के बात सुनलीं - 'अरे यार, आज एम.बी.ए. डिग्री मिल गइल !' ओमे अधिकांश लइका-लइकिन के, 'बाडी-लैंग्वेज' आ हाव-भाव से "कैरियर" का प्रति गंभीरता आ इमानदारी का बजाय, मजाकिया अंदाज झलकत रहे। एक तरह से ऊ अपना आप के बेवकूफ बनावे में, खुद ब खुद शामिल लउकत रहलन स।

ई स्थिति कवनो साधारण इन्स्टीच्यूट के नइखे। नॉमी गिरामी-स्टैन्डर्ड शिक्षण संस्थान का युनिवर्सिटी क इहे हाल-माहौल बा। मुम्बई में, डॉ० डी० वाइ, पाटिल यूनिवर्सिटी आ 'मैनेजमेन्ट इन्स्टीच्यूट' एगो ऐतिहासिक आ भव्य शिक्षण संस्थान मानल जाला। उहाँ के इन्स्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट के साठ प्रतिशत छात्रन क मैनेजमेन्ट कोर्स, एही टाइप के लउकल जवन हम ऊपर बतवलीं हँ।

आज के युवा-पीढ़ी आ ओकर अपना 'कैरियर' का प्रति, जागरूकता आ गंभीरता आ उपलब्धि ओइसन नइखे, जवना के हउवा खड़ा क के भोजपुरिया जगत क लोग भौकाल बनावेला, भा प्रतिभा क ठसक देखावेला। युवा पीढ़ी के 'कैरियर', ओकर विकास (डेवलपमेन्ट) सफलता (सक्सेज) आ उपलब्धि के जवन मायने होखे के चाहीं आ ओसे उपजल जवन बदलाव लउके के चाहीं ओइसन कुछ नइखे। युवा पीढ़ी के 'कैरियर' खाली ओकरे 'हाट प्वाइन्ट' नइखे, ऊ ओकरा परिवार, समाज, राष्ट्र आ सरकारो खातिर महत्वपूर्ण बा। मैनेजमेन्ट, मेडिकल, साफ्टवेयर आ आइ.टी. क्षेत्र में बढ़त प्रतिस्पर्द्धा, एकरा गंभीरता के रेघरियावत बाड़ी स।

कवनो युवा खातिर 'कैरियर' बनावे क 'दबाव' कई स्तरन प बा। पहिले 'कैरियर' खातिर संजीदा होके, कवनो राय (ओपिनियन) बनवला के दबाव, फिर 'कैरियर' चुनला क दबाव, ऐडमिशन लिहला खातिर प्रतियोगी परीक्षा पास कइला से लेके 'मेरिट' आ इन्टरव्यू तक क दबाव। केहू तरह से प्रवेश मिलियो गइल त, बढ़िया तइयारी का साथ, परीक्षा पास कइल आ मेरिट में जगह बनवला के दबाव। एह कूल्हि से अलगा, प्रतिभाशाली आ गंभीर लइकन पर एगो अउर दबाव होला- महतारी-बाप के अपेक्षा पर खरा उतरे क दबाव, जवन कइसे कइसे फीस आ बढ़िया संस्था में लइका के रहला खातिर रुपया जुटा के भेजेला, कवना उमेद पर ऊ आपन कूल्कि मूलभूत जरूरतन क गला घोंटि के, अपना लइका-लइकी खातिर साधन, सुविधा आ रुपया पइसा के इंतजाम करेला। एकर दूसर पहलू ई बा कि हाइ-फाइ कालेज भा इन्स्टीच्यूट में ऐडमिशन लेके, बढ़िया कपड़ा, महँगा मोबाइल सेट, रईसजादा सहपाठियन के संग साथ कवनो लइका लइकी के 'इम्प्रेशन' आ 'स्टेटस' बनावे आ 'मेनटेन' करे खातिर मजबूर करेला।

शहरन में, आजकाल जहाँ माई-बाप के अपना-अपना आफिस, रोजगार सेन्टर, भा नौकरी प गइला के देरी आ चिन्ता रहेले; लइकन के एल.के.जी., यू.के.जी. से ही 'आत्मनिर्भर' बनावे के 'थ्यूरी' पर बेसी धेयान दियाला। मध्यवर्गीय भा निम्न मध्यवर्गीय परिवार में, विकसित होत लइकन के रहन सहन, पास-पड़ोस, सोसाइटी का लिहाज से अभिभावक लइकन के अनावश्यक जरूरतन आ माँग के आर्थिक मजबूरी में पूरा नइखन कर सकत। हमनी के समाज चाहे अनचाहे, एह गैरजरूरी जरूरतन के पूरा कइला के अपना 'स्टेटस' आ समाजिक 'इम्प्रेशन' से जोड़ि के देखेला। तेज, होनहार, मेहनती लइका अगर आर्थिक रूप से कमजोर बा त समाज ओके कवनो खास तवज्जो ना देला; ओके 'हाइलाइट' होत देखल ना चाहेला। व्यवहार में, ओह लइका लइकी के 'बिलो-स्टैन्डर्ड' देखल जाला, जवन गरीब भा कमजोर बा। आमतौर प हमनी का इलाका में कवनो लइका-लइकी के, प्रतिस्पर्द्धा में उतर के सफल होखे के दबाव में, ई कूल्कि कई किसिम के पारिवारिक, सामाजिक दबाव में शामिल होला; कहीं कहीं देखा-देखी, 'सफलता' पवला के चाह में, कुछ महतारी-बाप, अपना लइकन के; ओह जगह खड़ा क देला, जहाँ खड़ा होके आगे बढ़े खातिर मानसिक रूप से तइयारे नइखे। जेकर बेसिक तइयारिये अधूरा बा। अइसन लोग पड़ोसी भा कवनो परिचित के लइकन के प्रशंसा करत अपना लइकन के हूँसे-डाँटे आ उपेक्षित करे शुरू क देला। जवन आखिरकार ओह लइकन में कुंठा आ हीनता 'फ्रस्टेशन' पैदा करेला।

हमनी का व्यवस्था में; अतना अंदरूनी खोट बा कि हमनी किहाँ के 'युवा' में भटकाव, आ 'फ्रस्टेशन' सुभाविक बा। पारदर्शिता के अभाव, सोर्श, पिछला दरवाजा से फेरबदल, परीक्षा प्रणाली में भ्रष्टाचार, लापरवाही, तिकड़म आ जुगाड़ त जइसे हमनी का क्षेत्र के युवा का नसीब में लिखा के मिलल बा। बड़ बड़ कालेज, शिक्षण संस्थान, इन्स्टीच्यूट अधिका से अधिका धन उगाही आ मुनाफा कमाये में पक्षपात, धांधली, घूस, लीक होत पर्चा, आ जाँच-प्रणाली में लापरवाही- प्रतिभावान आ होनहार मेहनती लइकन का भविष्य खातिर खेलवाड़ त बटले बा, समाज आ राष्ट्र के भविष्यो-निर्माण में नुकसानदेह बा।

युवा पीढ़ी के "कैरियर"- निर्माण में, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, केन्द्रीय आ राज्यस्तरीय विश्वविद्यालय, एन.जी.ओ. आ अउर शिक्षण संस्थान आ इन्हनी के आर्थिक सहायता आ मान्यता देबे वाला कमीशन, ट्रस्ट, संस्थान आ फंड, लगातार ओही उखड़ल-भखठल लीक पर चल रहल बा आ युवा-पीढ़ी का कैरियर के खरामा-खरामा चला रहल बा। युवा भविष्य गढ़े आ राष्ट्रीय हित खातिर ओके तराशे वाला संकल्प नइखे लउकत।

प्रतिभाशाली लइकन क दिनों दिन बढ़त खुदकुशी आ बेरोजगारी झेलत युवा, 'कैरियर' का दिसाईं सचेत आ जागरूक ना रहला के प्रमाण बा - व्यवस्था में अंदरूनी खोट आ कमी के प्रमाण बा। अपना कमजोरी आ गलती प पर्दा डलला भा 'रिसेशन प्रूफ' क बहाना ढुँढला से काम नइखे चले वाला। कैरियर के सफलता कवनो 'शो-केश-मंत्र' ना ह; कवनो 'डिग्री' आ 'डिप्लोमा' दिहल ना हऽ बलुक ऊ सही रास्ता आ मंजिल दिहल हऽ, जवना से कवनो युवा- अपना, अपना परिवार, समाज आ राष्ट्र खातिर बेहतर ढंग से योगदान देबे में कवनो बाधा, अवरोध आ दिक्कत के सामना ना करे।

अब वक्त आ गइल बा कि, सब मिल-जुल के, इमानदारी से पूरा सिस्टम के खराबियन आ कमजोरियन के दृढ़ता से दूर कइल जाव। सोच में बदलाव, देखला-समझला आ कइला में बदलाव के जरूरत बा। लइका-लइकिन के, परिवार, समाज आ राष्ट्र खातिर उपयोगी आ रचनात्मक युवा-शक्ति में तब्दील करे के जिमवारी सबकर बा; खुद युवा के, ओकरा परिवार आ समाज के आ सबसे ज्यादा ओके गाइड, नियंत्रित आ उपयोग करे वाली व्यवस्था आ ओकरा संचालक वर्ग के। असली-नकली, खराब आ अच्छा, उपयोगी आ कामचलाऊ, सोद्देश्य आ निरुद्देश्य में फर्क करे आ अलगावे के पहिल जिमवारी सरकारे के उठावे के परी। भितरी के भखड़ल, नोनियाइल देवाल के पपड़ी ओकाचि के पलस्तर आ चूनाकली से, खड़ा कइल मकान ढेर दिन ना चले। आज जरूरत नया निर्माण के बा। एकरा खातिर नया तौर तरीका जोहल आ जल्दी क्रियाशील भइल पर आगा क राह आसान होई।

●●●

लघुकथा

समान अधिकार

❑ अनन्त प्रसाद 'रामभरोसे'

हमनी के बस पुलिस थाना के सोझा रुक गइल। शायद कवनो पुलिस के जवान हाथ देके रूके के इशारा कइलस। कंडक्टर बस से उतर के पुलिसन से बतिअवलस फेरू थाना के भीतर दरोगा जी से मिले चल गइल। थोड़ी देर बाद लवट के आइल आ सब यात्रियन से उतरे के कहे लागल। लोगन के विरोध आ हल्ला गुल्ला क कवनो असर ओकरा प ना भइल पुछला प मालूम भइल कि, दरोगा जी का हुकुम से ओके कवनो बड़का आदमी के बरात ले जाए के रहे। कंडक्टर अतना किरिपा जरूर कइलस कि हमनी के पाछा से आवत बस में, गठरी-मोटरी नियर ठूँस ठाँस के आगा भेजववलस।

शहर में घुसे के पहिले ओहू बस के रोक दिहल गइल। आगा पुलिस खड़ा रहलन स। पता चलल कि शहर में मंत्री जी के कार्यक्रम बा आ उनका सुरक्षा खातिर अइसन कइल गइल। हमनी का आपन बोरिया-बक्सा आ सामान कपारे आ कान्ही लदले पैदले चल दिहनी जा।

टाउन हाल में मंत्री जी के भाषन के कुछ लाइन, सड़क पर लागल लाउडस्पीकर से सुनाइल- 'जनता का राज में केहू बड़ भा छोट नइखे, सब बराबर बा आ सबके समान अधिकार मिलल बा।"

●●●

बिनु पानी सब सून...

नाहिं आषाढ़ गगन घन गाजा

❑ हीरालाल 'हीरा'

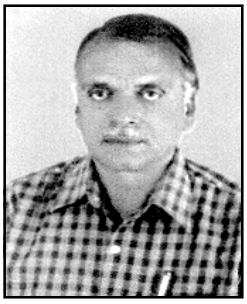

कवि जायसी लिखले बाड़े कि चढ़ते आषाढ़, आसमान में घनघोर बादर घुमड़े लागेलन स। अउरियो कवि लोग बरखा के बारे में ढेर लिखले बा। घाघ त प्रकृति आ मौसम के पहिलका वैज्ञानिके घोषित रहलन। खेती के सुतार वाला बरखा के उनकर एगो कहावत ह-

'रोहिनी बरिसे मृग तपे, कुछ-कुछ अदरा जाय।कहे घाघ सुन घाघनी, श्वान भात ना खाय।'

मतलब ई, कि एह परिस्थिति में अतना पैदावार होई कि कुकुर ले भात ना पूछी। कवि लोग के एगो सुभाव ह कि जवन देखेला, ऊहे लिखेला। पहिले का समय में बरखा समय से जरूरे होत रहल होई, तबे एक से एक वर्णन भइल बा। हमनी किहां त सउंसे आषाढ़ बीत गइल बाकिर बादर ना लउकले स।

कई साल से अइसन देखे में आवता कि मोका पर भरपूर पानी नइखे बरिसत। जवना घरी ना चाही, ओह घरी के बरखाऽ से फायदा के बजाय नुकसाने करऽता। कई साल त खरिहाने में अनाज आ भूसा सरे लागल। बचपन में हमनी का जेतना बरखा देखले रहलीं जा, ओतना अब नइखे होखत। हमनी के पुरनिया कहसु कि हथिया नक्षत्तर खातिर सोरह दिन के खरची आ लवना जुटाइ लिहल जाव। डर का मारे केहू शादी बियाह के दिन आषाढ़ में ना धरे। बाकिर आजु सभ उल्टा पुल्टा हो गइल बा। बइसाख जेठ का दिंसाई, आषाढ़ में बियाह, नीके बिना बाधा के सम्पन्न हो जात बा।

आजु ई सभका महसूस होता कि, प्रकृति गवें गवें बदलि रहलि बाटे। बाकिर एहपर कवनो सरकार भा समाज गम्भीर होके नइखे सोचत। रोज-रोज नया खोज आ आविष्कार अदिमी के फितरत आ आदति हऽ। एह में प्रकृति के साथ ओकर खिलवाड़ो शामिल बा। लोग अपना आवश्यकता, भोग आ संसाधन खातिर पृथ्वी/प्रकृति के अन्धाधुन्ध दोहन करत जात बा। मनुष्य भा जगत के सगरी प्राणी सोरहो आने प्रकृति पर निर्भर बा। ओकरा से कटि के भा अलगा होके एकदम जीयल ना जा सकेला। नीक से जीये खातिर प्रकृति से तालमेल बनावहीं के परी।

आजु के वैज्ञानिक युग में अदिमी मय संसाधन आ उन्नति से भरल बा। बाकिर विडंबना देखीं कि, चढ़ते आषाढ़ सभे ऊपर मुँह उठा के मानसून के ताकता। मानसून के सूचना देबे वाला कम्प्यूटर आ विज्ञान के भविष्यवाणी सालन से झूठ हो जाता। आँकड़ाबाजी में माहिर सरकार, जवन बरखा के शुरुआते कूल्हि उपज बता देले, ओकरा मुँहे फेंफरी परल बा। हमनी के प्रधानोमंत्री जी चिंता कइलीं। बिजली नइखे मिलत, काँहे कि एकर उत्पादन कम होता। उत्पादन ए से कम बा कि, बाँध (डैम) में पानी कम बा। पानी एह से कम बा कि, समय से मानसून ना आइल। सगरो से घूमि के मये बाति, मानसूने पर टिकत बा। मतलब साफ बा कि सभ कुछु, या निए पर निर्भर बा। बिना पानी के, अदिमी के पानी बाँचल संभव नइखे लउकत।

प्रकृति, महतारी के दोसर रूप ह। महतारी अपना संतान से हाली नाराज ना होखेले। अगर अइसन बाति बा तऽ, ई निश्चित बा कि ओकरा प्रति औलाद के करनी नीमन नइखे। रोटी, कपड़ा, आ मकान हमेशा से मनुष्य के आवश्यकता रहल बा। ओहू घरी एकरा खातिर दोहन होत रहे बाकिर आजु नीयर ना। ओह घरी के विज्ञान आ सोच आजु नीयर ना रहे। साले-साल ऊगे आ खतम होखे वाली घास-पात के छप्पर आ माटी के घर बनाइके संतुष्ट। तनिकी आज से तुलना करीं। सगरी बड़का पेड़ कटि के घर के ठढ़िया, केवाड़ी थूनी-थेग, फरनीचर आ जरवना में खपि गइले। जवना पीपर के देव वृक्ष मानि के केहू एगो पतई ना तूरी, अब ओकरो के काटि के पलंग आ घरेलू सामान बने लागल। कतहीं सुबहित पीपर, बर आ पाकड़ि नइखे लउकत कि केहू गर्मी में बइठि के जुड़ाउ। सगरी बाग-बगइचा काटि के कालोनी, मकान, दउरी दोकान आ उद्योग धंध ले लागल आ बनल चलि जाता तबो पूर नइखे परत। पुरनिया अभावे में खून पसेना जरा के, काँवरि से पानी ढो के कइसे-कइसे बगइचा लगवले कि हमार अगिली पीढ़ी एके भोगी। बाकिर लायक संतान के देखीं कि एके कटवावत में तनिको संकोचत नइखे। अपना बुद्धि, बल आ विज्ञान के जोम में अदिमी धरती पर, आपन निर्माण आ प्रकृति के विध्वंस करत जात बा कि पूजा में आम के पल्लो खातिर कई गाँव घूमे के परत बा। हवन के लकड़ी खातिर कोसन दूर से कीनि के आवति बा, तबो, ई पक्का नइखे कि आमे के ह। बस आपन विश्वास, सरध ा आ भावना ओह हवन में जरत बा। धरती माता केतना ले बर्दास्त करिहें ? पर्यावरण के प्रदूषण आ असंतुलन के नतीजा भूकंप, आन्ही, चक्रवात, बिजली गिरल, पहाड़ गिरल, जमीन धँसल आ सुनामी जइसन आपदा समय-समय पर देखे के मिलेला।

जले से जीव के उत्पत्ति भइल बा। कहलो बा 'जल ही जीवन है'। आजु धरती पर पानी के मात्रा दिनों दिन घटल जात बा। बिना एकरा जिनिगी के कल्पना ना कइल जा सकेला। भू जल स्तर लगातार नीचे खिसकल जाता। अगर ईहे हालि रही, त आवे वाला दिन में पानी सबसे कीमती तत्व हो जाई आ एकरे खातिर लड़ाई होई। एह पानी के बचावे खातिर सही मन से सरकार के संगे-संगे हमहनों के ठोस पहल करेके समय आ गइल बा। सबके मिलि के कुछ अइसन करे के चाहीं कि प्रकृति हमनी पर मेहरबान बनल रहो।

सबके तन-मन से वृक्ष आ वन के रक्षा करे के चाहीं। मन में ई भावना आवे कि जब चारि गो फेड़ लागे, तब एगो कटे। वन विभाग आँकड़ा के बजाय ठोस धरातल पर आपन काम देखावे। वन संरक्षण खातिर कानूनो बनल बा, बाकिर क्षरण बन्द नइखे। वन विभाग सोगहगे हरियर फेड़ कागज पर सूखल देखाइ के ठेकेदारन का मिली भगत से कटवावता। वन के संगे-संगे जल संरक्षण के जिमवारी त बने विभाग के दिहल जाये के चाहीं। दूनो के एक दोसरा से अटूट नाता बा। जल से वन आ वन से जल आबाद रही।

वन संपदा प्रकृति के संपदा ह। ओही से जुड़ल बाड़न स वन्य जीव। वने पर आश्रित बाड़े, वन में आ ओकरा आस पास रहे वाला वनवासी, आदिवासी। एह सब के रखरखाव आ विकास खातिर संकल्प लेबे के चाहीं। सरकार के सचेत रहे के चाहीं कि वनवासियन के हक केहू दोसर मति छीने पावे। जहाँ अइसन नइखे हो पावत, तरह-तरह के राष्ट्र विरोधी मानसिकता आ आन्दोलन पनपत जात बा।

विकास के नाँव पर जवन कंकरीट के शहर रोज-ब-रोज बढ़ल जात बा, आ आवागमन के सुविधा के नाव पर फेड़न के काटि के कई लेन के सड़क बनि रहल बा; ओह पर विचार होखे के चाहीं। हम विकास के खिलाफ नइखीं। बाकिर ई सोरहो आना सांच बा कि विध्वंस के तुलना में निर्माण ढेर कठिन होला। देखते-देखत हजारो पेड़ कटि गइले, बाकिर सालन बाद, ओह स्थान भा ओकरा आसपास के क्षेत्र में दोसर वृक्ष ना लगावल गइल।

कल कारखाना के निर्माण होखे के चाहीं, बाकिर वन संपदा आ नदी नाला के कीमत पर ना। सगरी कारखाना नदियन के किनारहीं लागल बा आ उनुके कचरा आ गंदा पानी से नदी, नाला नीयर हो गइली आ नाला झुरा गइले। प्रदूषण रोके वाला विभाग आजुओ बा, बाकिर खलिसा कागज पर। गर्मी में त गंगा जी कहीं-कहीं हेलातु हो जात बाड़ी, त अउरी सब के बाते छोड़ीं। सरकार गंगा जी के राष्ट्रीय नदी घोषित कइले बिया। बाकिर टिहरी में रोकि आ बान्हि दिहला से गंगा बेदम हो गइल बाड़ी। इनके शुद्धो करे खातिर केतना खर्च आ उपाइ भइल, बाकिर परिणाम सबका सोझा बा। जवना गंगा जल के पी के आदिमी आपन मोक्ष बनावत रहल हा आ नहाइ के मये पाप धोवत रहल ह। ऊहे गंगा जल सपना हो जाई। लागता कि गंगा आ उनुकर जल भविष्य में खाली इतिहास बनि के रहि जाई।

हमहन का कतनो विकसित हो जाइबि जा बाकिर गाँव, खेत-खरिहान, बाग-बगइचा, कुँआ, तालाब, पोखरा, आ बावली आदि से कटि के सुखी ना रहि पाइबि जा। अपना संगे इनिके लेइ के चलले में सभकर भलाई बा। आज घर-घर टुल्लू आ चाँपाकल बा। बाकिर सरेहि में चिरुआ भरि पानी नइखे कि चिरइयो आपन पियासि बुझाओ। कतहीं अगिलगी में सरकारी दमकल जाइ के पानी के अभाव में खाड़ हो जाता। तब कुँआ आ पोखरा के महत्व समुझ में आवता।

भागमभाग के जिनिगी में आजु अदिमी एतना टेंसनाइज हो गइल बा कि ओकर तनिको सुकून नइखे। चैन खातिर खूब तीरथ-वरत आ पूजा-पाठ करता बा। काँहे कि आर्थिक स्थिति आ पइसा पहिले से बेहतर आ ढेर बा। बाकिर धरती खातिर, धरती पर रहे आ धरती से जीये वाली अगली पीढ़ी खातिर कुछ करे के ललसा ओकरा मन में नइखे जागत। अनेक गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.) समाज हित के नाम पर सरकारी धन लेइ के खर्च करत बाड़े स। इन्हनियो के, समाज आ धरती के हित खातिर ललसा जगावे के चाहीं। आजु जे समर्थ बा, ओकरो जनहित में कुँआ, तालाब, पोखरा आ बाउली आदि बनवा के भा ओमें मदद देके, एही बहाने पुण्य अर्जित करे के चाहीं। बुद्धिजीवी, लेखक आ पत्रकारन के गंभीरता से एह सामाजिक आ जीवन जगत के सरोकारन से जुड़ल विसंगतियन पर जागरूक होखे के चाहीं आ अपना सामरथ भर, एह दिसाईं ब्यवस्था, सरकार आ सरकारी तंत्र के जगावे आ क्रियाशील (ऐक्टिव) करे खातिर आंदोलन चलावे के जिमवारी उठावे के चाहीं।

●●●

हस्तेक्षप

आईं भोजपुरिया समाज के कुनैन पियावल जाव

❑ प्रमोद कुमार तिवारी

आदरणीय भोजपुरिया बहिन भाई लोग,

पेश बा महान भोजपुरिया समाज के दूगो दृश्य आ कुछ सवाल -

दृश्य नं० एक :- बाहर भीतर से खचाखच भरल एगो बस... बस के छत प बइठल आ पेड़ के डाल से सफाई से अपना के बचावत, नवहा लोग... "आजा रानी तनी सट जा. .." के तेज बेसुरा आवाज के साथे बाजत एगो घिसाइल टेप. .. खलासी, दरवाजा प खाड़ एगो अधेड़ से किराया मांगेला. .. ठीक-ठाक कपड़ा पहिनले अधेड़ खलासी के बात के अनसुना क देवेले... कुछ देर के बाद खलासी दोबारा पइसा मांगेला... अधेड़ तनी ठसक के पाथे पान चबावत कहेले - आगे चल... आगे चल... आखिरी बस स्टॉप आवे से पहिले खलासी तिसरका बेर किराया मांग देला अउर तभिए एगो जोरदार तमाचा के आवाज सुनाई देला... बस रूक जाले... पिछिला गेट से उतर के दउड़त कंडक्टर आवेला, तब ले खलासी प दू-तीन तमाचा अउर पड़ चुकल रहेला... कंडक्टर खलासी के किनारे खींच के खुद एक तमाचा अउर मार के कहेला - "का... रे... बोका... अदिमी ना चिन्हेंले" अउर अधेड़ आदमी से माफी मांगत कहेला - "जाए दीहीं... नया हऽ अबहीं अदिमी के पहचान नइखे..." अधेड़ अपना के ना चिन्हला प जान जाए के खतरा के धमकी देत बस में सवार हो जाला अउर बस आगे चल देवेले...फेर से घिसल टेप के भोंड़ा आवाज कान में पड़ेला-"एगो चुम्मा दे द राजाजी..."

दृश्य नं० दू :- बस स्टैंड आ महिला कॉलेज के बीच के पातर सड़क... करीब १० बजे के समय...सड़क के किनारे थोक भाव में उगल पान के गुमटी... दुकान के बीच में लागल बड़ा सा शीशा... शिवजी के एगो मूर्ति जवना के जटा से निकलल पाइप से पान प गिरत पानी...अधनंगी हिरोइनन के कुछ फोटो... करीब १५ से ३० के उमिर के भोजपुरिया समाज के भविष्य... जादातर के नजर कॉलेज जाए वाली लइकिन प. .. ढीठाई के साथे नजर जमवले पुरान कवलेजिहा... लइकिन के शीशा में निहारत कुछ नया आशिक... गुमटी के दरवाजा में फिट दू-दू गो स्पीकर तेज आवाज में बाजत गाना... "जा झार के... अइहऽ अतवार के..."

ई भोजपुरिहा समाज के दू गो चित्र हऽ। एगो महान आत्म- मुग्ध अउर अतीतवासी समाज, जहाँ बहुत लोगन खातिर कवनो कमजोर के हक के दू रूपिया बचा लीहल बड़ अउर महान होखे के निशानी मानल जाला अउर खूब नमक-मिर्ची के साथे तमाम लोगन के सुनावल जाला कि कइसे हम दू थप्पर मरलीं हँ त फलनवा मिमियाए लागल ह। एह समाज में कवनों काम आ धंधा शुरू करे से पहिले जवना योग्यता के सबसे जादे जरूरत पड़ेला ऊ ह "आदमी चिन्हल"।

'आदमी चिन्हल' एह समाज के एगो खूब चलताऊ मुहावरा ह जवना के कई गो मतलब निकलेला, यानी रउआ के मालूम होखे के चाहीं कि फलाने ठाकुर साहब हवन, फलाने पंडीज्जी हईं, फलाने के भाई हिस्ट्रीशीटर ह, फलाने के मामा के लइका दरोगा ह, फलाने के फूफाजी के चाचा विधायक हईं. .. आदि आदि। अगर रउआ परिवहन अउर बस गाड़ी के ध ंधा में बाड़ीं त फेर इहो याद राखीं कि कहाँ से केकर इलाका शुरू हो रहल बा। जवना आदमी या फेर लइका से रउआ बेअदबी से किराया मांग रहल बानीं, कहीं ओकर गांव बस के रूट में त ना पड़ेला! ना त रउआ के आदमी ना चीन्हे के कीमत चुकावे के पड़ सकेला।

दृश्य दू के पान ! ई समझल कठिन बा कि भोजपुरिया लोग पान खातिर बनल ह कि पान एह लोग खातिर ? बाकिर पान, कसैली, जर्दा, सुर्ती, बीड़ी-सिगरेट अउर पान के दुकान से एक समाज अउर एकरा संस्कृति के घनिश्ठ रिश्ता बा! बार-बार ई सवाल परेशान करेला कि एह इलाका में पान दुकान के अनंत संख्या के राज का ह ? हमनी के धर्म ग्रंथ से ले के पूजा-पाठ अउर तमाम संस्कार तक में घुसल पान भोजपुरी समाज के निर्माण में कवन सकारात्मक भूमिका निभवले बा ? एह प्राचीन विषय प शोध होखे के चाहीं। एह शोध में इहो पता करे के चाहीं कि एह पान के अंतरराश्ट्रीय ख्याति दिलावे वाला एगो भोजपुरिया अउर तथाकथित सदी के महानायक अमिताभ बच्चन साढ़े तीन बजे अपना हीरोइन के पान के दुकाने प काहें बोलावेलन ? (सन्दर्भ- फिल्म : 'आज का अर्जुन'; जवन बाकी समाज में त फ्लाप भइल रहे बाकिर

भोजपुरिया इलाका में उनकर कई गो बकवास फिल्म सफल रहल रहे)।

एक से बढ़ के एक दार्शनिक अउर क्रांतिवीर पैदा करे वाला ई समाज आजुओ कवनो राजनीतिक आ आर्थिक सुधार से कहीं जादे सामाजिक अउर सांस्कृतिक सुधारक के जरूरत महसूस कर रहल बा। भारत के दिशा देवे वाला सबसे जादे महापुरूष शायद एही समाज में उपजल बाड़े महावीर जैन, गौतम बुद्ध, सरहपा, गोरख, कबीर, रैदास आदि तक जाने केतना नाम बा जे कि कबहूं प्यार-दुलार से त कबहूं डांट-फटकार से एह समाज के जगावे के कोशिश कइले बाड़े। एही लोग से जुड़ल सवाल इहो उठत बा कि एतना सारा समाज सुधारक लोगन के एही समाज के आखिर जरूरत काहें पड़ल ? रोशनी के जरूरत त अंधकारे के पड़ेला ? एगो नानक सिख समाज के कहां से कहां पहुंचा देले दूसरा ओर एतना सारा महान लोगन के धरती होखला के बादो ई समाज आजो अइसन काहें बा ? एही माटी के एगो अउर क्रांतिकारी कवि धूमिल याद आ रहल बाड़न -

पता नहीं कितनी रिक्तता थी मुझमें
जो भी मुझमें होकर गुजरा- रीत गया
पता नहीं कितना अंधकार था मुझमें,
मैं सारी उम्र चमकने की कोशिश में बीत गया।

ऊ कवन ताकत ह जवना के कारण तमाम प्रतिभावान लोगन के बादो ई समाज एतना खोखला अउर कमजोर बा। कबहूं सुनले रहीं कि कमजोर आदमी अकड़ के जोर-जोर से बोलेला अउर हारल-लजाइल आदमी अपना अतीत के ढोंढ़ी टोअत पुरान उपलब्धियन के लगातार ढिंढोरा पीटत रहेला। बेर-बेर ई सवाल पीछा करेला कि आखिर एह समाज में मोंछ के एतना जादे महत्व काहें बा? मोंछ बचावे के उ कवन मजबूरी ह, जवना के कारन अपना खेत में त लोग काम ना करे, बाकिर कीड़ा-मकोड़ा जइसन शहर में रहेला अउर सेठ के रोज गारी सुनला के बादो ओकरा फैक्ट्री में हाड़-तोड़ मेहनत करेला ? ई कइसन मोंछ ह, जवन कमजोरन के हक मारत घरी, अउर नारी आ दलित सब प अत्याचार करत घरी कबहूं नीचा ना होखे ? पावर के पीछे पागल अउर सनकी जइसन भागत एक समाज में सामंती संस्कार अउर देखावा के संस्कृति के पीछे कवन ताकत काम कर रहल बा ? हर आदमी सुख- सुविधा अउरी नाम चाहेला बाकिर काहें भोजपुरिए समाज के जादातर लोग अपना लइकन के आइएएस बनावल चाहेले ? भोजपुरी गीतन में दारोगा जी के एतना प्रमुखता काहें बा ? काहें एगो हवलदार अउर सिवाही कवनो प्रोफेसर, डॉक्टर, शिक्षक, लेखक आ पत्रकार प भारी पड़ जाला ? एह समाज में कवनो अपराधी अउर गुंडा के सेलिब्रिटी के दर्जा काहें दीहल जाला ? सोना के सिकड़ी अउर पेट्रोल भरवावे के औकात ना होखला के बादो दहेज में मोटर साइकिल दीहल जरूरी काहें मानल जाला ? शादी के शामियाना में नथुनिया प गोली मरवावे वाली एगो बाईजी के हर बेर उपस्थिति के ई समाज विरोध काहें ना करे ?

ई भला कवन संस्कृति ह कि एगो सबडिविजन में पान, गांजा, भांग, कट्टा, हेरोइन तक त आसानी से मिल जाला बाकिर बकायदा कई गो विद्यालय अउर महाविद्यालय होखला के बादो पूरा शहर खंगालियों देला प भूगोल के एटलस ना मिल पावेला ?

एह तमाम सवाल न से अउर कुछ पता चले चाहे ना चले, बाकिर एतना साफ हो जात बा कि ई समाज अत्यंत गौरवशाली अतीत, अपना तमाम खूबी अउर बहुसंख्यक शरीफ लोग (बाकिर सूतल) के होखला के बादो एगो बेमार समाज ह। एगो अइसन समाज जहां शरीफ होखल सबसे बड़ गुनाह जइसन देखल जाला, जे भी तनी बेहतर बा उ या त एह इलाका से बहरा निकल के खुद के समाज से काट लेवेला या फेर राजनीति, पुलिस आ धन के धौंस देखा के अइसन बन जाला कि लोग ओकरा के चीन्हे लागस। अइसन हालत में रउआ सब से एकरा अलावा अउर भला का कहल जाव कि रउओ हमनी के साथ आईं अउर एह समाज के कुनैन पियावे में मदद करीं। अब ना त कब इलाज होई एह बेमार समाज के।

निवेदक.... एगो आहत भोजपुरिया

●●●

मुद्दा

आधुनिकता, संस्कृतीकरण, राजनीतिकरण आ भोजपुरी समाज

❑ सुशील कुमार तिवारी

संस्कृति के मोटा तौर पर धर्म, रीति-रिवाज आ रहन सहन के आधार पर परिभाषित कइल जाला, बाकिर, "इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका" में दिहल जइसन कि परिभाषा से स्पष्ट बा "संस्कृति एगो व्यापक आ गतिशील प्रक्रिया ह। जैविक परिस्थिति के साथ मनुष्य अनुकूलन के स्थापना के खातिर संस्कृति सबसे अनिवार्य घटक होला । संस्कृति जीवन के सहजता प्रदान करे में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेला। अगर व्यक्ति के अपना आस-पास के परिवेश के साथ सानुपातिक या सहजीवी सम्बन्ध स्थापित करे के बा त संस्कृति सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण हो जाला।"

संस्कृति स्वानुभूति के ऊपर समाज के अनुभूति के आरोपण करेला। जवना कारण इ आवश्यक हो जाला कि ई गतिमान, सामाजिक आ प्रगतिशील होखे अगर संस्कृति बन्हाइल आ पाछा पडे घुसुकल होखे। त ई आदमी आ समाज दूनों के विकास प्रक्रिया के अवरूद्ध कर सकेला। आधुनिकता के प्रक्रिया में संस्कृति में होखे वाला बदलाव लगातार समाज के व्यक्ति के उपर 'आरोपण' के कम करेले तथा संस्कृति में सामाजिक से ज्यादा वैयक्तिक अनुभव के तरजीह मिलेला । जवना समाज में वैयक्तिक स्वतंत्रता आ विवेक पर सामाजिक बाध्यता ज्यादा हावी हो जाला, ओह समाज में संस्कृति के खिलाफ विसंस्कृतीकरण आ पुनरूत्थानवाद के खतरा बढ़ जाला ।

भोजपुरी समाज में आधुनिक संदर्भ में संस्कृतिकरण के प्रक्रिया एह दूनो खतरा से एक साथ गुजर रहल बा । सांस्कृतिक शुद्धता के नाम पर तरह-तरह के रीति-रिवाज, धार्मिक, नैतिक आ सामाजिक बंधन चेतना के स्तर के आधुनिकता के तरफ बढ़े से रोक रहल बाड़े । आधुनिक समाज निर्माण के प्रक्रिया में पैराडइम शिफ्ट (एगो प्रतिमान के स्थिर होखला से पहिलहीं दूसर प्रतिमान के ओकर स्थान ग्रहण करे के प्रक्रिया) बड़ा तेजी से होला । परन्तु भोजपुरी समाज में पैराडइम शिफ्टसे ज्यादा पैराडइम रिफ्ट (परिवर्तन के स्थान पर प्रतिमानन के बीच खाई आ संघर्ष भा तनाव के स्थिति ज्यादा बा । संस्कृतिकरण के प्रक्रिया में विवेक आ बुद्वि से ज्यादा आस्था आ विश्वास के तरजीह मिल रहल बा । जवना कारण समाज में कवनो प्रकार के वैज्ञानिक ढ़ग के सोच के थोर अभाव बा । मनुष्य चाँद तक पहुँच गइल परन्तु ए समाज में अभी भी टोना-टोटका में लोग विश्वास कइ रहल बाड़े । धर्म के बंधन जोंक के तरह चिपकल बा । नैतिकता के पांरपरिक प्रतिमान में वैयक्तिकता के दम घुट रहल बा । स्त्री ओइसही बंधन में बा तथा विवाह-संस्था पर रूढ़िवादी आ पोंगापथी वर्ग आ विचारधारा के वर्चस्व बा ।

संस्कृतिकरण के प्रक्रिया में मनुष्य के चेतना विकासमान होखल बहुत जरूरी ह, लेकिन भोजपुरी समाज में इ स्टैंगनेट (गतिहीन) हो गइल बा । एक तरफ सांस्कृतिक निर्माण के प्रक्रिया पश्चगामी अथवा बद्धमूल बा त दूसरा तरफ एगो बहुत बड़ा वर्ग के बीच विसंस्कृतीकरण (संस्कृतिहीनता) के स्थिति बा। बहुसंख्यक युवा एह वर्ग में शामिल बांड़न। बाजार आ पाश्चात्य संस्कृति के कुप्रभाव, रोजगार के अवसर के अनुपलब्धता से उत्पन्न कुंठा आ सामाजिक रूढ़ि से त्रस्त एगो बड़ा वर्ग अनुशासनहीनता आ अराजकता के तरफ बढ़ रहल बा। संस्कृतीकरण के प्रक्रिया में उत्पन्न अंतर्विरोध, समस्या आ विरोधाभास से लड़े के बजाय युवा वर्ग अव्यवस्था, पलायन आ असुरक्षा-बोध से ग्रस्त बा। भोजपुरी साहित्य आ कला (संगीत, फिल्म) आदि में बढ़ रहल अश्लीलता, समाज में बढ़ रहल अपराध आ कुंठा के इ विसंस्कृतीकरण (संस्कृतिहीनता) प्रमुख कारण बा। आधुनिक संस्कृति एवं समाज में वैयक्तिक चिंतन एवं प्राथमिकता सामाजिक जरूरत आ बाध्यता के लगातार कम करत जाला; फलस्वरूप सामाजिक दबाव आ प्रतिमान संकुचित होके इतना कमजोर हो जाले कि वैयक्तिक स्वतंत्रता के दमन बहुत मुश्किल हो जाला। जवना संस्कृति आ समाज में वैयक्तिकता आ स्वानुभूति खातिर अधिकाधिक अनुकूल माहौल होला उ ओतने आधुनिक होला। संस्कृति सामाजिक परिवेश में व्यक्ति के सहजता अउर परिपूर्णता प्रदान करेला, परंतु अगर समाज के साथ व्यक्ति के सम्बन्ध के इ असहज, तनावपूर्ण या समस्यामूलक बनावे लागे त ओकरा में परिवर्तन आ संशोधन जरूरी हो जाला। भोजपुरी संस्कृति आज एही प्रकार के संक्रमण से गुजर रहल बा। आधुनिकता के बयार विकृति ये अधिक आ अच्छाई कम पैदा कइले बिया काहे कि आधुनिकता के ग्रहण करे खातिर जवना प्रकार के मानसिक-विवेक आ संस्थागत तैयारी के जरूरत बा उ समाज में नइखे। एकरा खातिर गंभीर आ निर्णायक प्रयास करे के जरूरत बा। समाज में स्वस्थ राजनीतिक चिंतन आ प्रक्रिया के विकास खातिर सर्वाधिक जरूरी ह ओकर आधारभूत संरचना के लोकतांत्रीकरण आ मूल्य चेतना में समृद्धि आ लचीलापन। सार्वजनिक जीवन में नैतिकता आ कार्य-संस्कृति में ईमानदारी राजनीतिक प्रक्रिया के संचालन के महत्वपूर्ण उपक्रम ह। राजनीतिक चेतना के निर्माण में शिक्षा के सर्वाधिक निर्णायक योगदान होखेला।

हमनी किहाँ आजादी के बाद लोकतांत्रिक शासन पद्धति जरूर स्थापित भइल परंतु ओकरा खातिर आवश्यक तैयारी ना

कइल गइल बलुक उ जइसे-तइसे समाज पर थोप दिहल गइल। भोजपुरी समाज अभी एगो प्राक्-आधुनिक समाज बा लेकिन राजनीतिक तंत्र में सर्वाधिक आधुनिक व्यवस्था लोकतंत्र से एकर साबका बा। नतीजा खंडित आ विकृत राजनीतिकरण आ समस्यामूलक लोकतंत्र।

जाति आ धर्म के आधार पर आसानी से चुनाव जीतल जा सकेला। विकास के मुद्दा आ चिंता कभीओ एइजा के राजनीतिक तंत्र में नाज मुख्य धारा में रहल बा ना अब्बो बा। राजनीति के अपराधीकरण आ वोट के खरीद-फरोख्त सबसे बड़ बीमारी बा। राजनीतिक नेता आ राजनीतिक दल के पास विकासमूलक या भविष्योन्मुखी विचारधारा आ योजना निर्माण के घोर अभाव बा। सही राजनीतिक समझ भा संस्कृतिक के अभाव में न कवनो प्रकार के नया उद्योग- धन्धा, कारखाना या व्यवसायिक संस्थान के स्थापना हो रहल बा ना ही तकनीकी आ अत्याधुनिक शिक्षा खातिर संस्थान बाड़े। नतीजा बेरोजगारी, अंध ाकार आ पथ-भ्रष्टता।

परिवहन, सड़क बिजली, पानी, कानून-व्यवस्था आदि आधारभूत संरचना धूल फांक रहल बाड़े आ चुनाव में सामाजिक न्याय, आ धर्मनिरपेक्षता तथा साम्प्रदायिकता जइसन भावनात्मक मुद्दा उठाके जनता के बरगलावल जाता। बुद्धिजीवी आ शिक्षित वर्ग अपना के राजनीति से दूर खींच लेले बा। ओकर राजनीतिक प्रक्रिया में कवनो उल्लेखनीय आ निर्णायक दखल नइखे।

वास्तव में राजनीतिक अस्वस्थता से समाज के हर अंग अस्वस्थ हो जाला। विकास के प्रक्रिया अवरूद्ध हो जाले बाद में राष्ट्र-निर्माण के प्रोजेक्ट असफल हो जाला। एगो आधुनिक, विकसित आ समृद्ध समाज के निर्माण में राजनीतिक तंत्र के सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान आ जिम्मेदारी होखेला। अगर भोजपुरी समाज के निर्माण आ विकास के प्रक्रिया के सही दिशा में बढ़ावे के बा त इ विकृतिमूलक आ समस्याग्रस्त राजनीतिकरण के स्वस्थ आ निर्माणकारी राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण के तरफ बढ़ावे के परी। ओकरा खातिर समाज के राजनीतिक रूप से शिक्षित करे में स्वयंसेवी संस्था, सामाजिक कार्यकर्ता, ईमानदार राजनेता, बुद्धिजीवी अउरं शिक्षित युवा वर्ग के महत्वपूर्ण भूमिका अदा करे के परी। विकास के प्रमुख चुनावी मुद्दा आ पारदर्शिता तथा जवाबदेही के प्रशासनिक संस्कृति के विकास करे के पड़ी। राजनीतिक दल आ नेता के चाल, चरित्र आ चेहरा के पहचाने के पड़ी। जब तक भोजपुरी समाज के स्वस्थ राजनीतिकरण ना होई तब तक आधुनिक समाज के रूप में एकर विकास आ निर्माण असम्भव बुझात बा।

●●●

गज़ल

❑ 'बशर' आर.वी.

(एक)

तकबियत खाली मिले चारों तरफ।
बेलिहाजी दुश्मनी चारो तरफ।

धर्म आ इमानदारी बा मगर
कंटकित पथ दलदली, चारो तरफ।

बेहतरी के बाग अब बर्बाद बा
मीर होता आदमी, चारो तरफ।

भेद नफरत के 'बशर' सौदागरी
जलजला फूली-फरी चारो तरफ।

●●●

(दू)

दरिया कहाँ गइल अउर सागर कहाँ गइल
देके भरोस लोग के अवसर कहां गइल।

जे ला सके, बहार का सुरभित बयार के
केहू बतावे बाग से पतझर कहां गइल।

आतंकियन के दहशती कदमन के रोकि के
कइलस लहूलुहान ऊ पत्थर कहां गइल।

हर घर उदास रास्ता आंगन इनार-दर
बाँटत रहे सकून, ऊ मंजर कहां गइल।

हर राह 'बशर' जा रहल अन्हरे सुरंग में
पाईं जहां निजाते-गम ऊ दर कहां गइल।

●●●

सरोकार

भोजपुरी क्षेत्र अउर छात्र राजनीति

❑ सांत्वना

छात्र राजनीति, मुख्यधारा के राष्ट्रीय राजनीति में प्रवेश के पहिली सीढ़ी हऽ। माध्यमिक आ उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षा के बाद कॉलेज भा विश्वविद्यालय में प्रवेश करे वाला छात्र पहिली बार सीधा-सीधा राजनीति से जुड़ेले। हालांकि अपना देस में मताधिकार के उमिर १८ वर्ष बा, बाकिर स्नातक स्तर के कक्षा में प्रवेश लेबे वाला अधिकाधिक छात्र अट्ठारह से कम उमिर के होलें। माने कि मुख्यधारा के राजनीति में वोट डाले के अधिकार भले उनुका पासे ना होला, बाकिर विश्वविद्यालय आ कॉलेज स्तर के राजनीति में वोट डाल सकेलें। समस्या खाली उमिर के नइखे। परिपक्वता के, उमिर से ढेर अनुभव से संबंध होला। ध्यान देबे लायक बात ई बा कि भोजपुरी समाज में ऊ कवना प्रकार के अनुभव से गुजर के कॉलेज भा विश्वविद्यालय स्तर तक पहुंचेले।

उत्तर भारत के ग्राम्यांचल में चले, पले, बढ़े वाली शिक्षा व्यवस्था बड़ी अजीबोगरीब हालत में बिया। मिथिला क्षेत्र के जनकवि नागार्जुन के एगो प्रसिद्ध कविता क कुछ लाइन इयाद आवत बा –

घुन खाये शहतीरों पर, बारहखड़ी विधाता बाँचे
फटी भीति है, छत चूती है, आलें पर विसतुइया नाचे।
बरसा कर बेबस बच्चों पर, मिनट मिनट में पांच तमाचे
ऐसे ही दुखहरन मास्टर, गढ़ता है आदम के साँचे।।

गाँव देहात के प्राइमरी इस्कूलन के एसे जियतार अभिव्यक्ति साइत ना मिली बाकि बाबा नागार्जुन के ई प्राइमरी स्कूल अब अउर खराब हालत से गुजर रहल बा। अब दुखहरन मास्टर क चेहरा, रहन-सहन आ तौर तरीका बदल गइल बा। स्कूल-बिल्डिंग, दुपहरिया क खाना (मिड डे मील), ड्रेस आ किताब, कापी खातिर सरकार खूब रूपया खरच करऽतिया आ एकरा खातिर ऊ गाँव के मुखिया-परधान आ स्कूल के हेडमास्टर के माध्यम बना लेले बिया। ईमानदार कोशिश आ पारदर्शी-प्रबंध क ई हाल बा कि कहीं हेडमास्टर त कहीं ग्राम प्रधान आ कहीं दूनों मिल के खानापूर्ति क देत बाड़न। कहीं कहीं राजनीतिक दबाव आ संघर्ष हावी बा। इस्कूल के सबसे बड़ अंदरूनी दुख ई बा कि ओमे नया शिक्षा आ तौर-तरीका के अभाव का कारन पढ़े वाला लइके नइखन स जुटत। गाँवन में एह घरी के लइका-लइकी, बगल में चले वाला प्राइवेट आ अंग्रेजी इस्कूलन में ज्यादा जा ताड़न। जमाना आ जमाना का मांग का मोताबिक सरकारी प्राथमिक शिक्षा तंत्र अपना शिक्षा-व्यवस्था में रूझान बढ़ावे खातिर एकदम गंभीर नइखे। अइसने हाँच-पाँच आ विसंगति भरल प्राथमिक शिक्षा तंत्र से भोजपुरी क्षेत्र के लइका निकल के माध्यमिक आ उच्चतर माध्यमिक में पैर रखेलन।

पूरा भोजपुरी क्षेत्र में प्राथमिक, माध्यमिक, उच्चतर माध्यमिक शिक्षा के स्तर दयनीय बा। सरकारी ईस्कूल संसाधन अउर नियमन का अभाव में लगभग बेकार हो गइल बाड़े। कुछ मात्रा में खुलल प्राइवेट ईस्कूल में भेजे के आर्थिक क्षमता सबका पासे नइखे। नतीजा ई बा कि कॉलेज में पहुंचे वाला बहुसंख्यक छात्र बीमारू शिक्षातंत्र से होके ओइजा ले पहुंचऽतारे। जवना कारण ऊ बौद्धिक आ आधुनिक चेतना के ओह स्तर पर नइखन पहुंच पावत; जवन चाहीं। कुछ मिलाके शिक्षा के जरिये विकसित होखे वाला विवेक आ संस्कार के उच्च स्तर से ओ लोग के महरूम होखे के पड़त बा।

चेतना निर्माण के दूसर मुख्य अधिगम समाज अउर परिवार होला। भोजपुरी समाज के ध्यान से देखला प ई दूनो संस्था लगभग समस्याग्रस्त बाड़ी सन। बहुसंख्यक परिवारन में आधुनिक ढंग के सोच आ समझ के अभाव बा। सीमित आ लगभग, लीक प चले वाला कार्य प्रणाली के कारण ई नौजवान कवनो खास सार्थक आ सामयिक दिशा पावे आ देबे में सक्षम नइखे। सामाजिक स्तर प आपसी वैमनस्य आ फूट के कारण स्थिति घोर निराशाजनक बा। एही परिवेश में निर्मित चेतना का साथे छात्र उच्च शिक्षा का ओर बढ़ेलन।

कुल मिलाके ई स्पष्ट बा कि राजनैतिक विवेक खातिर जवना तरह के परिवेश आ शिक्षा के आवश्यकता होला, ऊ भोजपुरी क्षेत्र में नइखे। नतीजा छात्र राजनीतिक रूप से दिग्भ्रमित बाड़न। कॉलेज अउर विश्वविद्यालय में शिक्षण तंत्र आ शिक्षा के स्तर एतना विसंगतिपूर्ण आ समस्याग्रस्त बा कि स्वस्थ राजनीतिक निर्माण के अपेक्षा ना कइल जा सकेला। ज्यादातर शिक्षक अपना विभागीय राजनीति में आ 'सेल्फ डेवलपमेन्ट' में मस्त बाड़े। जवन अच्छा शिक्षक बाड़ें, ऊ संशय, डर आ झंझट में आवाज ना उठावेलें। शिक्षा प्रक्रिया चलताऊ आ अनियमित बा। ना समय प 'परीक्षा' होई, ना समय से 'रिजल्ट' आई। ओकरा ऊपर नकल के बेमारी। शिक्षा माफिया के आतंक आ छात्रन के रंगबाज बने के चस्का। सड़क छाप मजनूँ, किताब आ पाठ्यक्रम का बदले श्योर सीरीज आ कुंजी। ऊहो पढ़े के नइखे, बल्कि दिमाग एह में फंसावे के बा कि कवन प्रश्न परीक्षा लायक फंसे वाला बा। आ कइसे परीक्षा हाल में चिट भितरी जाई ? परीक्षा भइला के बाद पइसा लेके नंबर बढ़वावे खातिर यूनिवर्सिटी तक के दौड़-धूप आ जुगाड़। एही में चाहे चनचाहे त्रस्त बाड़न बहुसंख्यक छात्र। गंभीर आ मेधावी छात्र, व्यवस्था के पुर्जा में फिट नइखन हो पावत, नतीजा, ऊ हाशिया पर छिटक जात बाड़न। जिनका के तनी-मनी साधन आ सुविधा होला, ऊ पढ़े खातिर बड़े-बड़े शहरन में निकल जालें। आ लवटला के बाद एक तरफ त समाज के सुधार अउर जन जागरूकता खातिर कवनो सार्थक कदम ना उठावेले। उल्टा शहर में जाके अपना के माडर्न देखावे खातिर ओही भोजपुरी

समाज के गरियावेलें अउर गंवार कहेलें जवना से ऊ जनमल बाड़े। अपना सभ्यता, संस्कृति आ भाषा से उनकर इज्जत घटेला।

क्षेत्र का छात्र नेतन के हाल तनी दोसर बा। पान चाहे गुटखा मुँह में लेले कॉलेज के गेट प' मिल जइहें। कबो सीट बढ़वावे खातिर, कबो परीक्षा के डेट बढ़वावे खातिर, कबो फीस घटावे खातिर, त कबो नकल करावे खातिर धरना, गोलबंदी आ मार-पिटाई में व्यस्त रहिहें। ऊ कवनो रचनात्मक विचारधारा आ राजनीतिक समझ के जरूरत ना समझेलें। साँच कहीं त ऊ राजनीतिक भटकाव आ दिग्भ्रम के शिकार बाड़न। अगर रउवाँ दबंग भा गुंडा बानी, आ नेतन से चंदा के रूप में कुछ रकम के जुगाड़ बना सकऽतानी, जातिगत समीकरण के साथ सकतानीं, जरूरत परला पर मार-पिटाई क सकतबानी, स्कूली आ विभागीय राजनीति के अनुकूल खुदो के ढाल सकत बानी, वोटिंग आ गिनती में सेटिंग क सकत बानी, त रउँवें जीतब। भाड़ में गइल विचारधारा आ भाड़ में गइल राजनैतिक नैतिकता।

चुनाव खातिर मिले वाला फंड, अलग-अलग राजनैतिक दल के स्थानीय नेता मुहैया करावेलें, बदला में विधानसभा आ संसद के चुनाव में छात्र नेता लोग उनका खातिर प्रचार करेलें, भीड़ इकट्ठा करावेलें। जब बड़भैया अइसन करऽ ताड़े, त छुटभैया काहें न करिहें ? कुछ पइसा रंगबाजी के जरिये क्षेत्रीय सेठ आ व्यापारियन से वसूलल जाला आ कुछ पइसा नंबर बढ़वावे खातिर, टी० सी० निकलवावे खातिर, मार्कशीट आ सनद निकलवावे जइसन छोट-मोट तकनीकी विभागीय काम के जरिये क्लर्क आ आम छात्रन के बीच सेटिंग में दलाली खाइल जाला। शिक्षकों लोग संस्था में एक दूसरा पर कीचड़ उछाले खातिर छात्र नेतन के कबो कबो उपयोग करेलन।

कुल मिलाके छात्र राजनीति के निर्माण आ परिचालन दूनों प्रक्रिया अनैतिक आ भ्रष्ट बा। राजनीति निर्माण आ ध्वंस दूनों में सक्षम हऽ। विकास के प्रक्रिया के सकारात्मक दिशा देबे खातिर राजनीतिक दृष्टि अउर इच्छाशक्ति सबसे महत्वपूर्ण होला। छात्र स्वभाव से स्वप्नजीवी, भविष्यदर्शी आ आधुनिकतावादी होला। सामाजिक निर्माण के प्रक्रिया में युवा वर्ग के सबसे महत्वपूर्ण अउर गुणात्मक योगदान होला। अतीत के नया तरीका से खोज, वर्तमान के संतुलन आ भविष्य के आगत तीनों के साधे के क्षमता शिक्षित युवा का पासे होला। राष्ट्र निर्माण के परियोजना जब-जब दिक्कत में पड़ल बा, समाज में जब-जब आशंका अउर निराशा के माहौल फइलल बा, तब-तब युवा सार्थक आ उल्लेखनीय योगदान कइले बाड़े। उदाहरण खातिर, आजादी के लड़ाई में युवा क्रांतिकारियन के योगदान होखे चाहे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में युवा नेतन के योगदान। असहयोग आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन में युवा वर्ग के उल्लेखनीय योगदान रहे। आजादी के बाद के 'संपूर्ण क्रांति आंदोलन' में त छात्र राजनीति के निर्णायक भूमिका रहे। आगे चल के धीरे-धीरे ऊ राजनीतिक भटकाव आ दिग्भ्रम के शिकार भइल।

भोजपुरी क्षेत्र में आज छात्र के सामने अनिश्चित भविष्य, बेरोजगारी, स्तरहीन शिक्षा, परंपरा के जकड़न जइसन गंभीर समस्या बाड़ी सन। शिक्षित युवा वर्ग में निराशा के माहौल बा। कैरियर के दौड़ में ऊ लगातार बाकी दुनिया से पिछड़ल जाता। छात्र राजनीति एह समस्या के उठा सकेले, सार्थक समाज के निर्माण में अपन महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेले, लेकिन अइसन होत नइखे, काहे कि एह काम खातिर गहन वैचारिक आधार, उच्चतर नैतिक मूल्य आ राजनैतिक ईमानदारी के जरूरत बा। छात्र राजनीति एकरा से अछूता बा। आधी आबादी कहाये वाला स्त्री वर्ग (छात्रा वर्ग) में अइसने अराजक माहौल आ चिन्ता बा। भोजपुरी क्षेत्र में ओकरा दयनीय दशा के कारण छात्र राजनीति आ भोजपुरी क्षेत्र के उत्थान में लड़कियन के कवनो उत्साहजनक भूमिका भा सहभागिता नइखे। ई सबसे बड़ कारन बा कि भोजपुरी क्षेत्र से सशक्त वैचारिक नेतृत्व आ प्रतिनिधित्व करे वाली सशक्त महिला नेता 'न' के बराबर बाड़ी। राजनीति में भलहीं महिला सशक्तीकरण, ३३ फीसदी आरक्षण आ समाजिक, राजनीतिक उत्थान में महिला प्रतिनिधित्व के बात होखे, बाकि एतना साफ बा कि ऊ छात्र-राजनीति से ना उपजेली। स्कूल, कॉलेज, युनिवर्सिटी के अंदरूनी माहौले अइसन नइखे। उहाँ त मूल्यहीन, अराजकता आ असुरक्षा आ दबंगई फइलल बा। पढ़े-लिखे आ प्रतिभावान छात्र-छात्रा ए पचड़ा से दूरे रहला में आपन भलाई समझत बाड़े। अगर अइसने हाल रही त भोजपुरी क्षेत्र के छात्र-राजनीति भविष्य में कवनो सार्थक आ रचनात्मक भूमिका कइसे निबाह पाई। एकरा खातिर सोच, बिचार आ दृष्टि में आमूलचूल बदलाव जरूरी बा।

●●●

"अँगुठी के नगीना"

❑ राजगुप्त

बेचारू के कइसे घायल नाँव पड़ि गइल, एहू के एगो अजबे कहानी बा। केहू के रोवाई देखि के रोवे लागसु त केहू के हंसल देखि के दांत निपोरि देसु। नीक आ सुन्नर मेहरारून के देखि लेसुं त करेजा पर हाथ धइ दरियें बइठि जासु। पूत के पांव पलने में चिन्हा गइल कि इ कवना खेत के होरहा होखिहें। गांव-जवार के बाति पर माई-बाबू बबुआ के रहनि चाल पर घायल नांव ध दिहल।

उमिर बीति गइल रहे। झरनाठ-खोरनाठ लुआठ - जुआठ भइला पर माथे मउर चढ़ल रहे। ककन छूटि गइल रहे। बाकिर जवन गोड़ रंगले रहे ओकर रंग अबे फीका ना पड़ल रहे। भागि-भागि के बाति ह। घायल जइसन बहेड़ रहले, उनकर मेहरारू ओतने चलबिधुर, आ काम कर्ता रहे। एक बाति अउरी रहे कि घायल जेतने अब्बर दिल के रहले, उन कर जनाना ओतने कड़ेर करेजा के रहलि। रहनि-चाल सोभाव सगरे नीक रहे। तब्बे न अपना सासु के पलंगरी पर बइठा के घर के सज्जी काम अपना माथे ओढ़ि लेले रहे।

एक दिन के बाति ह घायल हरवाही से सेकराहे, लवटि अइलें। गांव के बजार जे रहे। जेठ-बइसाख के गरमी से थाकल-मांदल आइल रहलें। ओसारा में बसखटिया पर सुस्ताये खातिर बइठ गइले। उनकर जनाना हाथ भर के घूंघट कढ़ले आइलि। घायल के गोड़ धोवा के नइहर से आइल करनी पानी पिये के धके चलि गइल।

पानी-ओनी-पियला के बाद घायल के मन फरहर भइल। उ खटिया से उठले आ मने मन सोचत घर में जाये लगले कि दिने दिन माई का सोझा कइसे पूछबि अपना जनाना से कि अपना खातिर कुछ किने-बेसाहे के होखे त बोलऽ। चउकठ अबे लांघही के रहले कि सोझा अंगना के ओसारा में आखि अचल हो गइल। ओइजा के वाकया जवन देखले कि देखते रहि गइले। बुझाइल जइसे उनका काठ मारि देले होखे। चउकठ की लगे थथमि गइले आ आंखि फारि ताके लगलें।

घायल अपना माई-बाबू के बड़ी मानसु। का मजाल कि अपना माई-बाबू के सोझा नजर उठा देसु। कहू कसम ले ले आजु तकले कब्बो ना। माई-बाबू से एतना लजासु कि ओ लोगन के सोझा अपना जनाना से किछु ना बोलसु - चालसु। लाजे सोझा ताकसु ना आ अन्हें रहियो ना जाय। इहे एगो कारन रहे कि बियाह के एतना दिन बादो सुरूज-चान के अंजोरिया में अपना मेहरारू के सूरति ना देखले रहले। कबो काल्हु जो सोझा पड़ियो जाऊ त हाथ भर के घूघ काढ़ि लेव। भेंट होखे तब जब राति खा सास ससुर के खिया-पिया के उनकर खायका लेके अपना कोठरी में आवे। ढ़िबरी दियरखा पर राखि, बुझाय बइठि पंखा हांकि हांकि घायल के खिआवे। दूर के ढोल सुहावन। फरके ढिबरी रखला से मुंह पर का अंजोर परी ? तब्बो खात का बेरी घायल अपना जनाना के मुंह के गढ़नि देखि लेसु। ढिबरी त राति भर जरे ना। खयका पानी के बाद बुता दिहल जाव। होत भिनसारे लाज के मारे घायल अपना कोठरी में से बहरिया जांसु। बैलन के सानी-पानी करस ना त ओसारा में सूति जांसु। सोहाग राति के दिने ढिबरिये के अंजोरा में अपना जनाना के मुंह के गढ़नि देखि घायल घवाही हो गइल रहलें ? आजु दिन के अंजोरा में अपना बेकति के रूप देखि काठ हो गइले। अंगना में उनकर मेहरारू ओसरि में चाउर छांटति रहे। बेगर घूंघ के आंचर भुइयां लसरात रहे। खुलल माथ रहे। बार बन्हले बेगर हवा में लहरात रहे। जइसे करिया-करिया बादर बरफ के पहाड़ पर मेलछत होखे। आधा हाथ आधा मुंह लउकत रहे। हाथ आ गाल के गोराई ? हे भगवान, चानो के अंजोरिया फेल रहे। पांव के पायल आ कान के झुमका अइसे रून-झुन बाजत रहे जइसे सरग के परी धरती पर नाचत होखे। महतारी सूप में चाउर फटकत मुसुकी काटत रहली।जनाना महीन राग में गारी गावत चाउर छांटत रहली। कलाई के चूड़ी राग जइसे मिलावत रहे -

चाउर छांटू रे नेटुआ, चाउर छांटू,
ननदी के ओखरी में चाउर छांटू,
छांट तानी रे नेटुआ, छांट तानी
मुसरा भुलाइल बा टकटोरत बानी !

घायल त घवाही होइये गइल रहले। इ दृश्य देखि के इन्द्रासन के इन्द्र भी डोले लगते। बड़ी देरी ले सरग में बिचरला के बाद घायल होस में अइले। सोचले, इची दायें बायें होके दिन के अंजोरा में जनाना के मुंह के गढ़नि भर सीकम का, कि हींक भर देखि लेतीं। इहे सोचि के चोर की तरे गवें-गवें गोड़ धरत चउकठ फानि आगा बढ़ले। सोझा ईया परि गइली। ईया के देखि घायल सकेता में पड़ि गइले। का सोची ईया कि केतना बेसरम बा। बिना आवाज दिहलें घर में हलि आइल ह। एतना सोचि के घायल फट् सेना खंखारि दिहलें।

आवाज पाइ कछुआ आपन मूड़ी सिकोरला में जेतना झकवाहीं करी कि पलक झपकते कहीं कि फट् से उनकर जनाना

आंचर कपार पर ध के घूंघ काढ़ि तकली। अनझिटके में दिन में मुंह के गढ़नि लउकि गइल। फजीरे के उगत सुरूज अस लिलार पर भोर के शुकवा जोन्ही अस टिकुली आ समुन्दर में बूड़त साझीं खा के सुरूज के ललाई अस मांगि के टहकत सेनुर आकास में इन्द्र धनुष अस चमकत रहे। एतना देखि के फेरा में पड़ि गइले कि महतारी के सोझा अपनी बकिति से कइसे कहीं कि हो हमरा बाजारे जाये के बा। किछु कीने बेसाहे के होखे त बोल। बेचारू ईया-महतारी के सोंझा कहि ना पवले। एतने में शरम का मारे मेहरारू ओइजा से टकसि गइल। अब कहसु त दिल के बाति केकरा से कहसुं। मन के बाति मनहीं में राखि हारि-पाछि अंगना से बहरी आ गइलें। ओसारा में टांगल गमछा कान्ह पर राखि अफसोस करत बजारी के रस्ता लिहले।

कुछ सोचत चलल जात रहले कि सोझा मोड़ का किनारा अपना ओसारा में एगो मेहरारू चाउर छांटति रहे। ओकर रूप अन-मन उनका जनाना अस रहे। माथ खूलल, आंचर गिरल उगत सुरूज अस टिकुली आ इन्द्र धनुष अस ओकरि मांगि के सेनुर चमकत रहे। ओकर रूप देखि धायल मनहीं मन भुनभुनाये लगले। लगे पहुँचते बकार जोर से निकलि गइल।

धामक - धूमक कूटन लागे, लट छटकाये केस।
हम तचललीं हाट बजरिया, कहबू कुछ सन्देस ?

धायल के मुंह खुले के खुलि गइल बाकिर पछताये कि कहवां ई बाति कहल चाहत रहे आ कहवां कहाइ गइल। ठांव-कुठांव बुझले बेगर इ का कहि दिहलीं। मेहररूआ मने मने खिसिआत होई।

देखन में छोटन लगे, घाव करे गम्हीर। मेहरारू के जात धायल से दू हाथ आगा निकलल। उनसे ढेर समझदार रहे। एह से जबाब दिहलसि -

लाता तर के पता लिअइहऽ, गज हन्सी के दन्त।
तीन बेसहिया हमके लिअइहऽ, तू ही रहिह कन्त।।

मेहरारू हमार परीक्षा लेत बिया। हमरा के कुछ बेसहे के कहलसि ह। धायल बड़ा खुश भइलें। खुशी-खुशी बजारी में चोंहपते। दोकान-दोकान घुमत अन्हमुन्हार हो गइल। बड़ा फेरा में पड़ले। अब का करीं ? रोज के उहे रस्ता बा। जो सउदा ओकर ना ले जाइब त ओरहन दीही। रस्ता चलल मोसकिल क दी। चारू ओरि दिया-लेसान होखे लागल। धायल बेचारू मन मारि के घरे लवटि अइलें।

घरे आके खटिया पर चिताने सूति रहले। पहर-भर राति गइला उनकर जनाना खयका आ ढिबरी ले के अइली। अपना मरद के रोवां गिरल आ उतरल मुंह देखि सकपका गइली।

"उठीं, खाइ लीं" गंव से कहली।

"आजु देकइसन मन मइल बा। खाये के मन नइखे करत।"

"मुंह के रोशनी बतावत बा कि जरूर कवनो बिपति पड़ल बा। आपन दुख हमरा से ना कहब त केकरा से कहब। हमरी किरिये, बताईं।" धायल के दुख पर मरहम वाली बाति बुझाइल। उ अंगना से ले के ओइजा तकले के सगरे बाति उगिल दिहलें।

पति परमेसर के बाति सुनि धायल के जनाना कहलसि। उठीं उठीं, खयका सेरात बा। खुशी मन से खाईं। इ कवन बड़ बाति बा। फजिरे उनकर समान चोहंपा देइब। हमरी लगे उनकर तीनों बेसाह बा।

होत फजीरे धायल के जनाना एगो मोटरी देत उनका से कहली। हई ले जाईं बड़की बहिन के दे आईं। मोटरी लेके धायल चललें। उनका बिसवास ना होत रहे कि जवन बेसाह सउंसे बजार में ना मिलल ऊ हमरी जनाना के पास कइसे आ गइल। जरूर दालि में कुछ करिया बा। एतना शंका क के धायल बान्हल मोटरी खोलि के देखले।

ओमे ईया के पनबट्टा में के पान हाथी दांत के चारिगो चूड़ी आ टिकुली रहे। कुछ समुझि-बुझि के फेनु मोटरी जस के तस बान्हि दिहलें। जो मेहरारू के मोटरी दे के लवटे लगलें। तब ऊ मेहरारू बोललि। "सुन हो, भल अइलऽ इभल जात काहां बाड़? बइठऽ पानी ओनी पीलऽ!"

धायल ना-नुकुर करते रहले तबले औरत के सासु एक डाली भूजा-गुर आ एक लोटा पानी ध दिहली। ना ना कहला के बादो औरत के सासु के मन राखे के परल। बड़ैं के बाति टारी के ? भुजा खात के बेरी औरत पूछलसि। "हो, तू त काल्हु बजारे गइल रहल। एह बेरा लवटत बाड़।" धायल बोललें। सांच बात त ई रहे कि तोहार सउदा सज्जी बजार खोजला के बादो ना मिलल त उदास मन ले के घरे लवटलीं लटकल मुंह देखि हमार जनाना कारन जनुये। हम बतउवीं। तब ऊ कहुवे कि एतने बाति खातिर हेतना उदासल बानीं। खाईं, सूती-बइठीं फजिरे उनकर सउदा पहुंचा देइब। ओकर बचन सुनि हम निश्चिन्त हो खा पी के सुतलीं। सबेरे उठलीं। बुझला भोरे जनाना मोटरी बान्हि राखि देले रहुवे। देत कहुवे "ले जाईं बड़ बहिन के दे आईं।"

एतना बाति सुनि औरत के सासु कहुवी। "बड़भागि बा तोहार बबुआ, जनाना अंगुठी के नगीना पवले बाड़ऽ।" सासु के बाति सुनि धायल मुस्कियात घर लवटि अइलें।

●●●

कहानी

बोलावा

❑ आशा रानी लाल

अपना जिनगी के चालिस-पचास गो ले बसन्त आ बरसात फूआ दूनू देख चुकल रहीं। अब ऊ मय गाँवें के फुआ रही। सबके जानत बूझत रही। सबसे बतियावत रही। ठीक से कहीं त सभकर रग-रग ऊ चिन्हत रही। एह उमिर में अइला पर, बूढ़ा तऽ गइले रही, बार पाके लागल रहे, कान से सुनातो कमे रहे, आ अँखिया से धुधुआइले अउकत रहे बाकी बोलिया बड़ा टनकार रहे। निहुर के चलत रही बाकी फरहर रही। उठे-बइठे में उनका तनिको अहस ना बुझाय। सयान जवान मेहरारून आ लइकिन के तऽ हरदवें अपना काम आ बुद्धि से मात देत रही, यानी हर बाते में पछाड़ देत रहीं उनका चिकन-चाकन खाए पीए के कवनो चाह ना रहत रहे। एह गाँव के ऊ बेटी तऽ कुल्ही लोगिन के घरवा उनही के रहत रहे। मय गाँव के भउजी लोग उनके छिउँकी काटल करे आ ऊहो केहूवे के छोड़ँस ना। बूढ़ भउजी आ बूढ़ फुआ के हँसी-ठिठोली से गाँव हरदम गुलजार भइल रहत रहे।

गाँव में केहू के घरे बेटा-बेटी के बियाह परे तऽ भउजी लोग पहिलहीं से फुआ के डोमवा-चमरा-मुसहरवा हाथे त बेचते रहे लोग आ मोका पा के कबो गदहवा आ हथियों साथे भेंजे के तइयार रहत रहे। ओह गाँव में जेतना मोछैला चाहे पहलवान लोग रहे ओह सबके फुआ जी लगे अपना गीतिए में लोग भेज दे। फुओ जी अपन आँख-नाक हाथ आ मुँह नचा-नचा के खूबे मजा लेंस आ देंस। गाँव के बेटी लोगिन के त एह सब बात के छूट बियाहे-शादी में न मिलेला।

अपना बियाह के बाद फुआ तीन-चार बरिस ले अपना ससुरा रहली, फिर जब एक बेर बिदा करा के नइहर अइली तब से बुझाइल कि नइहरे के होइए गइली । उनकर दुलहा अब खुल्म-खुल्ला कौनो दुसर छैल-छबिली के साथे रहे लगलन । जब ऊ नइहरे में रहे लगली तऽ अब एके घर के ना मय गाँव के बेटी बन के उनकर जिनगी बीते लागल। अपना गाँव के गर्मी-बरसात-आ जाड़ा के रंगीनी के फुआ खूबे न निहरले रही। ऊ देखस कि जाड़ा अवते भर दिन कोदो के पुअरा पीटात रहे तऽ राती खानी ओकर बिछौना बने। एह पुआर के बिछौना खातिर आदमी के साथे-साथे कुकुरो-कुकुरिया ओह में घुस के बइठ आ सुत जात रहनसन। फुआ के जोड़ा बिखर गइल रहे त उनका गहिरे ओंघी त आवे ना। मन के साथे देहों छटपटायल करे। ऊ रतिया के जब अँखिया ना लागे त देखँस कि कबो कलउतिया बाबू साहेब किहाँ रहे, तऽ कबो बाबूए लोग उन्हनीए के घरे जाके पुअरा में लुकाए लोग। जेतना सेयान-जवान लइका-लइकी भर दिन खेती-बारी आ काम-धन्धा से थाक के चूर रहत रहे लोग, उन्हन लोगिन के जाड़ा के रात में ई पुअरवे ठेकान रहत रहे। जब ले दिन के उजियार रहे तब ले छूआछूत के बिचार होखे, बाकी सूरज के डूबते सब एके रंग के करिया चदरा ओढ़ लेवे। एह घरी देंह से देंह छुअइला के डर ना रहत रहे काहे कि कबो-कबो इ मुँहवो एक दूसरा से छुआ जात रहे।

फुआ के उनका गाँव में अब केहू बबुनी आ बचिया कहेवाला तऽ बाँचल ना रहे, एह से ऊ छूट से घुमत रहत रही आ अपना धूमिल आँखी से गाँव के पूरा नजारा देखत रही। कहँस कि घर-घर के लीला अपरमपारे बा। पाँडे-बाबा घरे बियाह रहे तऽ खूबे धूम मचल रहे। मटकोर के साँझी खानी घर के कुल मेहरारू आ दाई मजूरिन माटी कोड़े गइल रही लोग। फूआ त अवरी आगे-आगे चलत रही- काहे कि गारी गावे के रहे, नेग लेबे के रहे। आज भउजी उनके डोमवा हाथे बेचिहन तऽ आँख मँटका के जिनगी के भुलाइल सुख के फुआ इयाद कर लिहन। कुल मेहरारू राती के अन्हार में एक-दूसरा के बनरा से नोचवावत आ गावत-बजावत चलल आवत रहे कि फुआ भागल-भागल आगे चल अइली आ देखली कि सून घरवा में से पाँडे बाबा निकसऽतान, तऽ फुआ माथे के लुगा आगे खींच के आ कगरिया के घर के भितरी चल गइली। ऊ देखली कि धनौती आपन साड़ी सरिहावत रहे। फूआ के नजर ओकरा पर परल, कुल बुझ गइली आ कहली कि अबे तूँ चउका में मत जो- नहा के जइहे। ना तऽ मटकोर के पूड़ी हम ना खाइब। धनौती सोचते रह गइल कि इनका तऽ सूझेला ना, आ कहतारी कि नहइबे तबे खाइब। ठीक बा नहा ले तानी।

पुरनवासी निगिचा गइल रहे। घरे में धीव ना रहे। निबिया तर के माई के पूजा ओही दिने होला। भर गाँव से पूरी सोहारी ले के लोग चढ़ावे जाला। एह से फूआ अहिरटोला धीव के पता करे जात रही। ऊ देखली कि सरेह में जवन पानी के पम्प लागल रहे ओही घरवा में सून देख के नगीनवा आ दिलसाद मियाँ के बेटिया दिलरी घुसल जात रहीस। फुआ ई देख के चुप-चाप चल त गइली, बाकी जन्दिए लवटि के खेतवा में बइठ गइली। दिलरी तऽ थोड़े देर बाद ओमें से निकलसल आ अपना घरे चल देलस बाकी नगीना के नजर फुआ पर पड़ गइल। फूआ ई कहते उठली कि - का हो नगीना गाँव घर के का हाल बा। ओह दिलशाद भाई घरे निकाह कहिया होखे वाला बा। नगीना बतवलन कि काल्हे

साँझी खानी उनका घरे गइल रहन त पता चलल कि दुइए दिन बाद दिलरी के ससुरा से आवे वाला बा लोग। फुआ दिलशाद भाई के घर के गरीबी से दुःखी रहीं। दिलरी के निकाह नीके-नीके अपना भाई बिरादरी में जो जाय, आ दिलशाद बो भउजी अपना दामाद के सेहरा देखलेंस के आशीर्वाद देते नगीना से उनकर सहारा बने के कहली। ऊ सोचे लगली कि माई के खुशी त दमादे परिछला में न रहेला। हमरो माई तऽ अपना दामाद परिछलहीं न होइहन। इ सोचते फूआ मुरझा गइली आ मने मने कहली कि इ नगिनो तऽ केहू के दमादे न बानऽ। इनकरो ससुर तऽ इनकर गोड़ धो के पूजलहीं होइहन। एहू घरी नगीना के चउका में चूल्हा लगे बइठल रच-रच-के इनका खातिर जेवनार बनावत होइहन। जब नगीना घरे चहुपिहन तब उनके खियाइए के तब बेचारी खइहन। नगीना के अपना मेहरारू के एह तपसिया के भनक कहाँ बा। ऊ तऽ दिलशाद के बेटी के रूप निहारे में बाझल बानऽ। ऊ जानतानऽ कि काल्ह निकाह होते ऊ एह गाँव से बिदा हो जाई आ फेरू कवनो मोका ना भेंटाई। भर गाँव नगीना के इमानदारी आ लायकियत के चर्चा अइसन फइलल रहे कि फूओ के ना रहल गइल, तऽ दिलशाद के बेटी के बियाह में भरपूर मदद करे के कह दिहली।

बियाहे के दिने फुआ दिलशाद का घरे गइली, आ ओकरा बेटी के बिदा होते घरे आ गइली, बाकी फुआ के देह में चैन कहाँ लिखाइल रहे। चैन करे के रहित तऽ अपना ससुरा में रानी बन के ना रहितीं। कहगो रखैल उनकर दुलहा रखलन, उनका ओही के चसका लाग गइल रहे, एही से अपना मेहरारू के कबो ना बोलावन। कहगो अइली स आ गइली सऽ बाकी फुआ के ना रहला से उनकर खानदान त नाहीं न चलल। फुआ के रोंआ के कलपल कहीं गइबो ना कइल। ऊ पूरा के पूरा उनकरा ससुरे पर परल, तऽ जइसे राजा के राज बिला जाला ओसहीं ओह ससुरा के घरो उजड़े लागल।

फुआ अपना नइहर के मय गाँव के अपने घर बना लेले रहीं। सबकर दुःख-सुख के ऊ साथी रहीं। केहू के बेटी के बिदाई कऽ के, ओके अपना आशीर्वाद से भर देंस आ चैन के नींन सुतँस, तऽ केहू के घर में पतोह बोला के दिन-रात गाबँस बजावँस, आ ओकरा से दलभरुई पूड़ी आ ठेकुआ भर गाँवे बटवावँस। फुआ के कहना के टारी ? ऊ भर गाँवे के भार अपना कपारे उठवले रहत रहीं।

तेतरी तऽ अइसन रहे कि ओकरा बियाह खातिर ओकरा माई के तरहा झुराइल रहत रहे, न रात नीन-न दिन चैन रहे। तबो फुआ हिललीं ना। ऊ तेतरी के माई के समझवली आ कहली कि चमइनियाँ के ऊ अइसन ठोंक-बजा के बरिज देले बाड़ी कि केहू तेतरी के बारे में कुछु जानिए ना पाई। ओकर तऽ अभी तीने महिना के न रहल हऽ, तबे रातों-रात गिरवा दियाइल, आ इ बात केहूवे ना जान पावल। तऽ अब ओकर बियाह त होइए जाई। ई बेटी कुल एके घर के ना भर गाँवें के न इज्जत होलीसन। ओह फुआ पर सभकर भरोसा रहे, आ सबे देखल कि केतना शान से तेतरी के बियाह भइल। बराते में एतना हाथी-घोड़ा आइल कि लागे कि कवना रजवाड़ा घरे ऊ जातिया। ओकर माई-बाबूजी कन्यादान क के अपन जाँघों परित्तर कर लिहल लोग। तेतरी के बिदा क के ओकरा माई-बाबूजी के कपार तऽ हलुक होइए गइल फूओं के हिरदया एह से जुड़ा गइल, आ चैन के सांस लेबे लगली- कि ई बात खाली मेहरारूए लोग तक रह गइल गाँव के एको मरद एह राज के ना जान पावल।

ओह गाँव के बूढ़-पुरनिया जे बाँच गइल रहे- ऊ फूआ के भईए-भउजी लागत रहे। एह बूढ़ लोगिन के कामें का होला ? जवान-सेयान लइकन के जब देख तब बाते-बात में टोकल आ बोलल-डपटल करेला लोग। हरदम सीखे देत रहेला लोग। रघुवो के बाबू के इ कहत फुआ सुन लेली- कि जबसे एकर बियाह भईल बा तब से दिनों में घरवे में घुसरल रहता- कि फुआ से ना रहल गइल। फुआ उनके बरजली आ कहली कि सेयान लरिका के हरदम ना बोले के। अपना दिन कबो ना भुलाए के चाँहीं कि बियाह के पहिलहीं एह खोज में एके गाँव के ना कई गाँवन के चक्कर लगावत रहन। बेयला बनल घूमल करँस। गली-गली आखेत खरिहान में ताकल-झाँकल करँस। कवनो खेते-खरिहाने जाये वाली बनिहारिन आ दूध-दही वालिन के चैन ना लेबे देंस। सबका नाक में दम कइले रहँस। ई रघुवा तऽ बियाहे के बाद अपना मेहरारू लगे न जाता। ऊ केहूवे के इज्जत पर नजर तऽ नइखे न लगावत। अपन दिन सबका भूला जाला, आ लागेला बेटा-बेटिन के सीख देबे।

फूआ ओह गाँव के रग-रग से वाकिफ़ रही। रघु जइसन कइगो लइकन के अपना हाथे पोसले-पलले आ खेलवले रहीं। उनका अनियाय बर्दाश्त ना होखत रहे। एक दिन अइसन भइल कि चरितर के जनाना के कीरा काट देलस। फुआ अन्हारे धुन्हारे, एगो जड़ी लेले ओने धउरल चलल जात रही, ई कहे खातिर कि फकीर बाबा एह जड़ी के देले बाड़न। एके सूँघा दियाई आ झरवा दिहल जाई तऽ ओकरा कुछु ना होई। चरितर बो जब ले अपन आँख नाहीं खोललीं फुआ उनके छाप के बइठल रही, एह से कि बेचारी अपना बाल-बच्चन खातिर उठ के खड़ा हो जाय, नाही तऽ सब मीली, चरितर के मेहरारू मिल जाई बाकी ओह लरिकन के माई

ना मिली। फूआ सभकर दुःख-सुख के साथी रही।

एगो अइसनों दिन आइल, जहिया एगो बटोही फूआ के ससुरा से ई संदेस ले के अइलन कि फूआ के दुलहा अब उनकर आ उनका सिन्होरा के आस जोहतानऽ। फूआ न आव देखली न ताव। एगो लुगा में अपन सिन्होरा गठिया लिहली आ गाँवे के अपना एगो भतीजा पाँचू बाबू के साथे अपना ससुरा चल देली। उनका बुझा गइल कि ई अब अन्तिम समय के बोलावा हऽ। उहाँ जाते घर के बहरा देखली कि लोग उनके घेरले बा। अब तब लागल बा, बाकी इ परान तऽ एक दूसरा के निरखे खातिर अँटकल रहे। एही से फूआ आपन गठरी खोल के, ऊ सिन्होरा उनके सँउप देहली। फिर उनकर आँख हरदमें खातिर फूआ के हाथ घइले चैन के नींद सुत गइल।

पाँचू बतावत रहन कि फूआ के आँखी में तनिको लोर ना रहे। ऊ अपना दुलहा के दरसन पा ले-ले रही, आ बिना बोलवले आ बे दिन बार के अइले ऊ ससुरा गइल रही, एह से ऊ घरे के भितरी ना घुसली। सीधे आपन माँग के सेनुर धोवे घाटे-नदी के ओरी चलल चल गइली। आज ले ओह नदी से ऊ बहरा ना निकसली।

नइहर से तऽ बेटी बे बोलवले आ बिना दिन बार के ससुरा जाली ना। कुल बेटी-पतोह एगो शुभ साइते पर नइहर ससुरा जाली-आवेली। राधा अइसन-राजा के बेटी रही, जे कृष्न के बोलावा के राहे देखत अपना गँवही कदम्ब के डार थमले ठाढ़े रहि गइली, बाकी कृष्न लगे ना गइली। असहीं फूओ के साथे भइल। ऊ आपन सिन्होरा बड़ा जतन से धइले रही ओही बोलावा के आस में। उनका तऽ अपना बेटी भइला के साथे-साथे अपना गाँव घर के इज्जत-आबरू न बचावे के रहे। तऽ भइल ई कि "फूआ एही गाँव में यानी अपना नइहरे में आजो बाड़ी आ मय गाँव के रक्षा कर रहल बाड़ी-" इहे इहाँ के लोग के सोच बन गइल।

कवनो शुभ काम में अब पहिले आशीर्बाद लेबे खातिर एह गाँव के लोग फुआ के जरूर ईयाद करेला, आ पूजेला। फूआ एह गाँव में अब देबी बन के बइठल बाड़ी आ पुजातारी।

●●●

गज़ल

❑ रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष'

राह चल के देख लऽ !
तूँ मचल के देख लऽ !!

हौसला लीही उठा -
तूँ फिसल के देख लऽ !

सांच हऽ कड़ुवा बहुत
तूँ उगल के देख लऽ !

जिन्दगी मुसुका उठी -
मन बदल के देख लऽ !

नेह के सरिता बही
बस पिघल के देख लऽ !

●●●

गज़ल

❑ मिथिलेश गहमरी

हताश मन के तपावे में कुछ कसर नइखे
धुआँ बा आँख में बस, आग पर नजर नइखे।

पहाड़ काट के हिम्मत नदी बहा देले
बनावे वाला के कहवां भला डहर नइखे।

हमेशा नाव उदासल रहेले पानी में
बहाव साथे जो, दरियाव में लहर नइखे।

बनाके ताजमहल, हाथ सब कटा गइलन
उहे पुजात बा जेकरा में, कुछ हुनर नइखे।

हमार आँख में सपना तोहार सवँरत बा
मगर, ए बात के तोहके तनिक खबर नइखे।

हँसी के साथ हमेशा अबाद लोर रहे
कवन बा मोल तब अमरित के, जब जहर नइखे।

गजल मशाल अस जब जल उठे अन्हारा में
जरत चिराग से 'मिथिलेश' अब गुजर नइखे।

●●●

गीत

कइसे आकास बीच...

❑ कुमार विरल

कहाँ बोईं बियना आ नेह से पटाईं
मन-माटी ऊसर बा कइसे जमाईं ?

अँखिया से जोती ले, रूपवा के धरती
कहिये से भाग मोर असहीं बा परती
सुनुगत सनेहिया के कइसे बुताईं ?

अदबद के अँखुवाइल पीरा के बिरवा
देहियाँ के रेती पर सिहके ना पुरवा
माया-मचान झूठ कउवा उड़ाईं!

चूना से टीकल तन पतुकी करिखाहा
पुतला-पुअरा के खाड़ जेकर रखवाहा
आत्मा अनेरिया के कहवाँ बेलाईं ?

चरन धूरि गइला से, चान बा लेटाइल
सपना के हासिल ना कबहूँ गोटाइल
कइसे आकास बीच शब्द के उगाईं ?

●●●

उपन्यास

गतांक से आगे ....

'दालभात तरकारी...' के अगिला भाग

पाँचवां कलछुल (पाँचवां अध्याय)

❑ डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव

निर्मला के बियाह हो त गइल बाकिर हम कर्जा से लदा गइनी। सांचे कहल जाला कि कर्जा के खाइल आ पुअरा फूंक के तापल एके होला। कर्जा भेंटा गइला पर मन आकासी खिले लागेला। खल-बेखल के खर्चा मुंह बा देला। कवनो तरह के कोताही ना कइनी। मिल के पइसा थोड़ा-बहुत अड़लस, बाद में सूद भरना पर खेत रखे के पड़ल। अब त बड़कू बेटा से उमीद रहे। भगवान के अइसन कृपा भइल कि बी.ए. करते एगो बड़का आदमी के सिफारिश से उनकर नौकरी लाग गइल।

दिनेश हमार बड़ बेटा रहलन। घर के माली हालत उनकरा से छिपल ना रहे। एक दिन उ हमरा से कहबो कइले कि अब चिन्ता फिकिर कइला के जरूरत नइखे। हम अपना तनखाह से धीरे-धीरे कर्जा चुका देब। उनकर नौकरी सूरत शहर में लागल रहे। छुट्टी में आवस त कुछ रूपया दे जास। उनकरो शादी खातिर लोग जोर देबे लागल।

एगो पार्टी बढ़िया मिलल रहे। दान-दहेज देबे में कौनो कोताही ना करीत। लड़की ग्रेजुएट रहे। एबके बाद तिलके के रूपिया से हमार कर्जा भी सध जाइत। मगर शकुन्तला के मन में दोसर डर बइठल रहे। बी.ए. पतोह आई त ना मालूम हमनी के मानी-जानी कि ना। कहीं फैशन-फर्माइश में रह गइल त घर के हालत अउरी बिगड़ जाई।

दिनेश के मन शादी करे के रहे बाकिर फैसला हमनिए के ऊपर छोड़ दिहले। एगो चिट्ठी में जरूर लिखले रहले कि खाना अपने हाथे बनावे के पड़ेला। दिनेश के शादी होखो कि ना एह विषय पर हमनी दूनू प्रानी में कबो-कबो तकरारो हो जाव। शकुन्तला ना मालूम कवना जमाना में जीयत रहली। देश-दुनिया एतना बदल गइल रहे। जब हमार बात नइखे चले के त इ फैसला महतारी-बेटा करो लोग।

एही बीचे शकुन्तला बीमार पड़ गइली। महीना भर से ऊपरे उ खटिया धइले रह गइली। लोग हालचाल पूछे आवे। एक दिन टोला पर के चाची अइली। कहली - ए दुलहिन अब तहरो देह पुरान भइल। घर-गृहस्थी के काम छोट ना होला। बेटा के कबले कुंवार रखबू ? अब पतोह उतारऽ आई त ताहार सेवा-टहल करी।

-चाची जी, हमरा भाग में होई तबे नू उ सेवा-टहल करी। कहीं बबुआ जी अपना नौकरी पर बोला ले गइले त का फरक पड़ी। हमरा त अपने जांगर पर भरोसा बा।

-पहिलहीं तू अइसन बात काहे सोच लेहलू ? दिनेश अइसन लइका ना ह जे बाप-महतारी के दुःख में छोड़के अपने परदेस में सुख भोगी।

चाची शकुन्तला के मन में बइठा गइली। निरोग भइला पर एक दिन उ हमरा से खुदे कहली- 'नीमन लड़की मिले त दिनेश के बियाह कर दीहल जाव।' उनकरा मन देहला भर के देरी रहे। दू महीना बीतल। जेठ के अंजोरिया में दिनेश के शादी रोपा गइल। दान-दहेज कम ना मिलल। घर में पतोह आ गइली।

हल्ला त पहिलही से रहे कि मथुरा प्रसाद के पतोहिया बी.ए. पास बिया। लोग खल-बेखल के बात कहे। बहू के बात-विचार आ रहन-सहन देख के मन ही मन हम प्रभु के धन्यवाद देहनी। मन डेराइल रहे कि दामाद खोजे से अधिका ध्यान पतोह के चुनाव में दीहल जाला। पतोह जीवन भर खातिर परिवार के अंग बन जाले। नीमन स्वभाव के आइल त घर के स्वर्ग बना दी आ कहीं कुलछनी के पउरा पड़ल त नरक बन जाई।

पतोह के शील-स्वभाव तारीफ करे लायक रहे। शकुन्तला जइसन चाहत रहली बइसन पतोह मिलल। अब शकुन्तला दिन भर अपना बहू मंजरी के ना रटत रहस। अइसन लागल कि मंजरी हमरा परिवार खातिर वरदान बनके आइल बाड़ी। घर के व्यवस्था बढ़िया हो गइल। सर-सफाई पर धेयान दियाए लागल। मंजरी सुन्दर त रहबे कइली, बोली-व्यवहार के भी सलीका केहू के मन जीत लेव। बुझाव जे उनकरा से हरदम बतियावते रहीं। दिन भर में नाहियो त उ दसो बार हमार दुख-सुख पूछस। कबो कहस- पापाजी, रउआ आज उदास लागत बानी। कौनो बात बा का ? नया-नया कनिया घर में आइल बिया, अभिये से सब हाल का बता दीं। एक दिन खुदे उनकरा सब मालूम हो जाई। ओह नवछा कनिया के का बतावल उचित होई कि कुशल के बी.ए. के पढ़ाई में खर्च कम नइखे। खेतवाला कर्जा अलगे मूंड़ी पर चढ़ल बा। भगवान जानस कइसे पार पावल जाई।

अंगना में बइठल हम केतना-केतना बात सोचत रहीं अपना बाबूजी संघर्ष हयाद आवे। गांव के गोंड़रा वाला खेत पर जवना आदमी से झगड़ा रहे उ कवना जमाना में बाबूजी के लंगोटिया इयार रहले। हमेशा हमनी के घर आना-जाना रहे। तले

कवनो बात पर बाबूजी से उनका अनबन हो गइल। बाबूजी ओह दिन गंभीर चेहरा बनवले घर में घुसते हमारा माई से कहनी- अब मोकदमा लड़हीं के पड़ी। माई चिहा के पूछली- कवना बात के मोकदमा जी ? हमनी का उनकर कवनो खेत कटले बानी सन ? कहसन जमाना आ गइल। आदमी के बदलत देरी नइखे लागत। नगीना सिंह त राउर लंगोटिया इयार रहले। बाबूजी कहनी- उ सब अब मन से बिसार द। लंगोटिया इयार उ कबो रहले। अब त लंगोटा लंगोटा के लड़ाई बा। पहिलके तारीख पर उनकरा के हम ना पदा मरनी त हमरो शिवरतन प्रसाद नाम ना। एह लालची के हम सबक सिखा के रहेब। कहत बा कि शीशोवाला खेत ओकरा खतियान में बा। ध्यान ना देहला से उ खेत छूट गइल रहे। नगीना सिंह अब चालीस साल के फसल जोड़ के हिसाब मांगत बाड़े।

हमरा इयाद बा कि बाबूजी ओह खेत खातिर नौ-दस साल ले मोकदमा लड़ते रह गइनी। खेत में के गाछ काटे के नौबत ना आइल। उ ओहीं तरे सूख गइल। बाद में लकड़ी भखड़ाए लागल। एकरे चिंता में बाबूजी दिल के मरीज हो गनी। आपरेशन खातिर उहां का तइयार ना भइनी। एक दिन खेत के मेंड़ी पर गिर के बेहाश हो गइनी। अस्पतालो ले जाए के मौका ना मिलल तले प्राण पखेरू उड़ गइल। पांच साल बाद माई मर गइली। मोकदाम अभी ले जिन्दा बा। ओने नगीना सिंह भी गोड़ के घाव से बीमार पड़ले। कंजूसी में दवा बीरो में खर्चा ना कहले। उहो बैकुंठ गइले। आज उ मोकदमा उनकर बेटा ढोअत बाड़े। बाप दादा के रोपल मोकदमा आगे के बेटा-पोता लड़ेले। इहे हाल बा एह देश के।

अंगना में बइठल इहे सब सोचत रहनी कि चाय लेके मंजरी आ गइली। चुपचाप खड़ा होके हमार चाय पियत देखे लगली।

- कौनो बात बा ? - हम मंजरी से पूछनी।

- जी, कुछ कहे के रहल ह।

- का ?

- अपना परिवार में कवनो मोकदमा चल रहला बा। हमरा सब हाल मालूम हो गइल बा। रउआ के हमेशा चिन्ता में डूबल देखत बानी। देर रात तक ले पता ना आलमारी आ बक्सा में रउआ कौन-कौन कागज खोजत-मिलावत रहिले। मंजरी से हम कुछ छिपवनी ना। परिवार के सारा हाल बता देहनी। उनकर दू टूक विचार रहे कि हम मोकदमा के तिलांजलि दे दीं। ओह जमीन के जेतना कीमत नइखे ओह से ज्यादा मोकदमा में खर्चा हो जाई। भेंटाई कुछु ना, उल्टे आपन तंदुरुस्ती आ धन के बर्बादी होई।

सांचे कहली मंजरी। आजकल के लड़का-लड़की जियादा समझदार होत बाड़े। घाटा-नाफा सोचे में पूरा कुशल बाड़े। बाकिर इ मोकदमा खाली जमीन गाछ के लड़ाई ना रहे। इ तऽ अपना आनबान के महाभारत रहे। कवनो दोस्त के विश्वासघात के चोट से तड़पत आत्मा के सवाल रहे। अधिकार के अखाड़ा में अपना प्रतिद्वन्द्वी के चित्त करे के चिन्ता रहेला।

शकुन्तला हमार भावना के समझत रहली, मगर बड़का बेटा दिनेश के एह झमेला में कवनो दिलचस्पी ना रहे। फैसला हमरे करे के रहे। एक ओर मोकदमा आ दोसरा ओर अपना तन मन धन के बर्बादी। हमार बाबूजी आजो स्वर्ग से देखत होखेब कि बेटा मथुरा प्रसाद हमार रोपल आम के पौधा गांछ उखाड़ के फेंक देहले आकि सींचत बाड़े। आपन सब व्यथा दुनिया से सुनाइयो देहल जाव तबो कवनो लाभ ना होला। अनका के दुख से आपन मनोरंजन होला। आपन दुख हम केकरा से कहीं। मोकदमा जारी रखीं कि समझौता कर लीं, एह दोहमच में महीनवन पड़ल रह गइनी। आपन जायज अधिकार आसानी से छोड़ल ना बनेला। जे ओपर धावा बोलेला ओकर बांह मरोड़ के पटकनिया देबे के संकल्प जागेला।

हमार मोकदमा द्रौपदी के चीर बन गइल रहे। तारीख पर तारीख पड़े। हर बेर आस बंधाव कि आज जज साहिब फैसला सुना दीहें।एतना साल बीत गइल। बुझात बा जे एकर फैसला हमरा जिनिगी में ना हो पाई। कोर्ट-कचहरी दउड़त-दउड़त मोकदामा बाज लोग के देह दसा देख के डर लागे। कहीं एक दिन कहूं पागल मत हो जाईं।

एह छन हमरा बाबूजी के एगो मोकदमाबाज ममियाउत भाई इयाद आवत बाड़े। जाड़ा के रात में दुअरा पर पुअरा फुंकाइल रहे। बाबूजी अपना कुछ दोस्त लोग के साथे अलाव घेर के आग तापत रहनी। बात चलत रहे कि ए साल भारी पाला पड़ रहल बा। दिन में पछुआ बहत बा आ रात खान पाला गिरऽ ता। जेकरा घरे पूरा ओढ़ना-बिछवना बा ओकर जाड़ा त कट जाई बाकिर ओह गरीब-गुरबा के का होई जेकरा तन पर एगो सुबहित गंजियो नइखे। एगो गंजी दस जगह से फाटल बा हाथ कांपत बा, दांत कटकटात बा। घूर के लगे बइठल लोग में एक जाना जाड़ा पर एगो कविता सुनवले- 'लइका के छूअब ना, ना जवानका से जूझब बाकिर बुढ़वा के छोड़ब ना।' बूढ़ लोग के जाड़ा बड़ा सतावेला।

देहात में गोंसार आ कउड़-अलाव इ इगो अइसन जगह ह जहां देस दुनिया से लेके घर-घर के हाल के उदिया-गुदिया निकालल जाला। कउड़ के आगे अभी हंसी ठठा चलते रहे कि दूर से केहू के बोली सुनाई पड़ल। बाबूजी आवाज के पहचान गइनी। ओह आदमी के देखते हमरा मुंह से निकलं गइल- एह रात में इ कौन पागल आ गइल ए भाई। भगाव। भगाव ! तले बाबूजी हमरा

के सनकियवनी- ऐ मथुरा, चुप रहऽ। इ हमार ममियाउत भाई लागेले।

- का भइया ! एह बेरा कइसे ?

- बाबूजी उनकरा से पूछनी।

- के बेरा के पूछत बा हो ? पहिले पूअरा डाल के अंजोर करऽ। हम ओ आदमी के तनी चेहरा देखीं।

पूअरा डाल के धंधोर क दीहल गइल।

- हम हईं शिवरतन प्रसाद ! - बाबूजी कहनी।

- रे बाबू, अभी छओ ना बजल तले तहरा खातिर रात हो गइल ?

- एतना बोल के उ अपना कलाई के घड़ी देखले। कलाई में दूगो पतई बान्हल रहे। पतइए के उ घड़ी नियर देखे लगले। मूंडी पर गमछी रहे। देही पर गंदा-फाटल कपड़ा। गोड़ बिना जूता-चप्पल के। फीली के लगे एगो पट्टी बन्हले रहले। झोरा में कागज के कुछ टुकड़ा, ईटा-पत्थर के रोड़ा, बेलना आ एगो छोट डिब्बा।

- इहां का पागल हईं का ?

- हम बाबू जी पूछनी।

बाबूजी हमरा के फेनु डँटनी

- चुप ना रहब ऽ।

- हं रे ! हं रे ! लइका ! हम पागल हईं। हमार नाम जनेसर प्रसाद दीवान ह। बाइस साल मोकदाम लड़ले बानी। चउदह कीता मोकदमा अबो बा। देखऽ सन बाबू। - झोरा में से कागज के दू गो टुकड़ा निकाल के उ कउड़ के रोशनी में देखे लगले। हई सुप्रीम कोर्ट के फाइल ह, हई तनी गो मिसिल पटना हाई कोर्ट के ह। जज साहेब हमरा के बोला के कहलन- जनेसर प्रसाद जी, सब फाइल - मिसिल जतन से रखियेगा। एही पर जजमेंट होगा। आप मोकदामा जरूर जीतिएगा। हम भी बोल दिए - आई विल विन माई सूट। जज बोला - सियोर, सियोर। हम खुश होके बोले - हुजूर। जब हम चउदह कीता मुकदामा जीत जाएंगे तो आपको सजाव दही खियायेंगे। पर साल एक नदिया दही लेके गइनी जज साहेब के कोठी पर। उ बेचारू भीतरे से बोलले- ड्राइंग रूम में बैठिए, जनसेर बाबू। अभी आते हैं। हम तुरंत बोले- प्लीज कम सून। तले नदिया बेंच पर रख दिया। एही बीच एगो खेल हो गया। एगो बिलाई आके सउंसे नदिया का दही सफाचट कर गई।

जनेसर भइया खड़ा हो गइले आ अपना डांड़ पर हाथ रखके कउड़ के आगे गा-गा के नाचे लगले- बिलइया दही खा गई ए मोरे बाबू। खा गई - खा गई बिलइया दही खा गई।

-फट से हमने चोरी पकड़ ली। पहले हम सी.आई.डी. के दरोगा रहनी। पुलिस से बोलनी - ए साहेब, उस जजिनी को पकड़ो। वही बिलाई बनकर आई थी। बड़ी चोट्टिन है। हमार दही खा नू गइलू। जा, तू उफ्फर पड़ऽ।

हँस-हँस के बेर-बेर उ इहे गीत गावस- बिलइया दही खा गई, ए मोरे बाबू। सिर पर के गमछा जमीन पर बिछा के बाबूजी से बोल ले- ऐ शिवरतन। भूख लागल बा हो। मुझे खाना खिलाओ। मंगवाव ऽ भाई, दाल भात तरकारी।

भोजन क के उ रात में ठहर गइले। बाबूजी हमरा के बतवनी कि मोकदमाबाजी में जनेसर भइया के दिमागी संतुलन बिगड़ गइल रहे। मेहरारू बहुत पहिले मर गइली। एगो बेटा रहे उ भाग के नागपुर चल गइल। ओहीजा नौकरी कके शादी बियाह के लेहलस। घरे ना आवेला। भइया कई गो मोकदमा हार गइले। सारा खेत जरपेसगी रखा गइल। आपन पुस्तैनी घर-दुआर तक बेच देहले। गांव में एगो कोला भर बचल बा। ओही में मड़ई डाल के रहेले। जियादातर त बाहरे छिछियात मांगत-खात रहेले।

बाबूजी के जनेसर भगया नियर समाज में आजो सैकड़ों लोग देखाई पड़ जइहें। अइसन हालत में आदमी के आपन घर-दुआर आछा ना लागेला। रोजे कोर्ट-कचहरी के कम्पाउंड में लोग घूमत-फिरत रहेला। केतना खराब नशा ह इ मोकदामाबाजी। जेकरा लत लाग गइल ओकर जिनिगी नरक बन गइल।

भीतर डर बइठ गइल कि एक दिन हमरो हालत ओही जनेसर प्रसाद नियर मत हो जाव। जहिया हम पागल हो जाएब त शकुन्तला के का होई। हमार दशा देख के प्राने त्याग दीहें। बेटा-बेटी दूअर हो जइहे सन। मंजरी के बात बेर-बेर मन में उगत रहे। जिनिगी में हर बात के तरजूई से ना तउलल जाला। जे नाप-जोख में ज्यादा डूबल रहेला ओकरा एक दिन गच्चा खाए के पड़ेला। मंजरी ठीके कह तारी कि मोकदमा त्यागिए देला में भलाई बा।

दिनेश अइले मंजरी के ले जाये। नौकरी पर खाना-पीना बनावे में दिक्कत रहे। गाड़ी पर चढ़े के पहिले मंजरी फेनु कही- बाबूजी, खेत-गाछ के मोह त्यागीं। शांति से रहीं। मोकदमा छोड़ दीं।

कुछ लोग दोसरा के लड़ाई-झगड़ा में बड़ा रस लेला। मन में आग-पाछ भइल रहे। दुनिया में लाखों लोग मोकदमा लड़त बा, रोजे कोर्ट-कचहरी दउड़त बा। उ लोग का बुरबक बा। अपना दुश्मन के जवाब दिहलो एगो धर्म ह। नरम बनल रहीं भा बिलाई नियर मियाउं-मियाउं करत रहीं त रउआ के के पूछी। दुनिया बलवान के पूजेला आ पूछेला। समझौता त एक मिनट में हो जाई बाकिर आदमी के आपन आन-बान खुदे दफना देवे के पड़ी। हमूं त एही दुनिया के एगो प्रानी बानी। जब कमर कसा गइल बा त

मोकदमा से पीछे ना हटेब। अपना पीठ पर दोसरा के धूरा ना लगावे देब। अब इहे हमार फैसला बा।

मंजरी के अभी उमिरे का बा। उ दुनियादारी जानते केतना बाड़ी। हम मोकदमा लड़ेब, इहे आखिरी फैसला बा।

फैसला लेते मन हलुक हो गइल। रात में ऊंघी नीमन से पड़ल। शकुन्तला कहली- आज के रात रउआ केतना दिन पर निश्चिंत होके सूतनी हं। हमरो एतना दिन ले तनाव झेलत आ सोचत-सोचत गर्दन में सिर बेंवच हो गइल रहे। दर्द से परेशान रहनी। फैसला लेते दर्द बिला गइल।

दिन में खाना खात रहनी तले पता चलल कि क्रशिंग सीजन खत्म भइला से मिल के नौकरी से एक सो से ऊपरे लोग के छंटनी हो गइल बा। अब एगो दोसरे फिकिर समाइल। फैक्ट्री के तनखाह से रूपिया पइसा के थोड़ा सुभीता रहल ह। आमदनी बंद भइला पर वकील, कोर्ट-कचहरी बिना फीस के कवन वकील तइयार होई। शकुन्तला कहली- का मोकदमा में पड़ल बानी ! पेट बान्ह के मोकदमा ना लड़ल जाला। दुनिया का कही एही लाज में रउआ गड़ल जात बानी। जे मोकदमा लड़ेला उहे समझौतो करेला। राउर पक्ष में फइसलो हो जाव त रउआ का पा लेब। उल्टे एह आग में जरत-जरत समूचा जिनिगी झंवरा जाई। अब त कवनो दोसरे नौकरी खोजे खातिर मीरपुर से बहरा जाए के पड़ी। तब कोर्ट के तारीख पर दउड़-दउड़ के कइसे आएब।

आपन मजबूरी अब सामने रहे। बाहर रहके मोकदमा लड़ल त अउर कठिन हो जाई।

अंत में हम मोकदमा में समझौता कर लीहनी। दुश्मन के घरे मिठाई बंटाइल।

शुगर मिल के नौकरी छूटला से केतना लोग हमरा पर तरस खाइल। जेकरा मालूम ना रहे उ पूछ बइठे- ए कंटा बाबू ! ए घरी गेट पर नइखी बइठत का ?

हमार बेकारी देख के लोग खल-बेखल के रास्ता सुझावे लागल। कुछ लोग के देखे में इ गांव अब पहिले नीयर ना रह गइल। आबादी बढ़ गइल। गांवे में छ-सात गो दोकानो खुल गइल। तू हू एगो दोकान खोल के बइठ जा। किराना के दोकान खूब चली। मन में अधसे त आटा के चक्की बइठा लऽ।

दोकान खोले वाला विचार मन में अधस गइल। दोकान खोल लेहनी। सउदा-सुलुफ में चाउर दाल, नमक तेल, साबुन आ बीड़ी के ज्यादा बिक्री रहे। केतना गाहक सांझ सबेरे इहे सब कीन के ले जास। इ बात तनिको झूठ नइखे कि दुनिया में खाहीं-पिये खातिर भाग दौड़ लागल बा। जिन्दगी चलावे खातिर हर आदमी के रोटी, दाल, भात चांही। गइबे करे ला लोग- 'दाल रोटी खाओ, प्रभु का गुन गावो।' एही खातिर मार-काट होत बा नीमन-बेजांय कौनो तरीका से आदमी के पेट भरे के चाहीं। एकरे लेके सब पाप-पुण्य बा। भांति-भांति के संघर्ष बा। हर काम जीए के एगो बहाना होला।

हमरा किस्मत में जोखहीं के लिखल रहे। मिल में कंटा पर ऊंख जोखनी आ दोकान में अब चाउर-दाल जोखे लगनी। एह जोख-जाख में कबो-कबो तीतो बात सुनेके पड़ जाव। नोनिया टोली में शिकायत होखे लागल कि मथुरा प्रसाद सौदा कम तउलेले। भरथा के बेटा हमरा दोकान से एक किलो मीठा कीन के ले गइल रहे। घरे जोखला पर उ तीने पाव भइल। एही बात पर भरथा से हमार केतना बाता बाती हो गइल। गांव के एगो पुरनिया आ के फइसला कइले कि तू दुनू जाना चल के ब्रह्म-स्थान तर किरिया खा लोग। हम त तइयार रहनी। एही बीच नोनिया टोलिए के एगो जनाना बतवली कि सबेर ही त देखनी हं कि भरथू के बेटा मीठा के भेली हबर-हबर खात जात रहलन ह। अब त सब भेदवे खुल गइल। भरथा के बेटा राहे में एक पउवा भेली खा गइल रहे।

भरथ तला गइले। आपने बेटा उनकर मूंडी नीचा करवा देहलस। लोग सांचे कहेला- जे केहू से पयमाल न होला उ अपने जमलका से पयमाल होला। गांव के दोकानदारी में अइसन छोट-मोट रगड़ा-झगड़ा चलते रहे। मन कहे कि अइसन बेइज्जती से त मिल के नौकरिये बेहतर रहे। केतनो धोकचा भेरनी तबो हमार दोकान मजगर ना चल पावत। परिवार के खोराकी दोकाने से चले लागल। साबुन, तेल, मसाला, चाउर, दाल लियात गइल। ओकर कवनो हिसाब ना राखाइल। कुछ सामान गांव के लोग के उधार-खाता में गइल। दोकान थउस गइल।

नौकरी फेन खोजाए लागल।

का ज़माना आ गइल। नौकरियों पावल दिन पर दिन कठिन भइल जात बा। बर-ब्यापार कइल सभके वश के बात नइखे। केतना लोग त लगावेला दस आ अगिले दिने बीस के उम्मीद क के आपन आत्मा के शांति खो बइठेला।

नौकरी कइल आसान बा बाकिर मिलल कठिन। इ समस्या बड़-बड़ पढ़वइया डिग्रीधारियो लोग के सामने बा। आ एगो छोट-मोट मजदूरो के आगे बा।

मन फिकिर में पड़ल रहे का कहीं, का ना करीं। मिल के नौकरी से छंटनी हो गइल, अब जइबो करीं त कहाँ जाई। शकुन्तला सोचत बाड़ी कि हमरा बहरा निकलते नौकरी भेंटा जाई। लोग से पूछीं त उ अपना-अपना ढंग से राह बतावत बा। दोसरा के राह बतावल त हमेशा सरल बा। खुद चल के देखीं त सच्चाई के सामना होखे लागेला। तबो आपन रोग दूर करे खातिर

दबा-वीरो अपने पास रखे के पड़ेला। मन के भीतर से आवाज उठल-मथुरा ! अब देर मत करऽ। उठऽ आ नौकरी के जोगाड़ में लागऽ।

●●●

छठवां कलछुल (छठवां अध्याय)

एक दिन मिल मैनेजर अपना बंगला पर बोलवले। पूछले- क्या बात है मथुरा प्रसाद, इधर तुम दिखाई नहीं पड़े ?

-- हां, सर जब नौकरिए नहीं है त फैक्ट्री में क्या करने आंएगे।

-- तुम आया करो । मैं कोई व्यवस्था करूंगा।

घरे लउटला पर इहां के खुशी के ठेकाना ना रहे। शकुन्तला, हेने आवऽ, एगो खुश खबरी बा। फैक्ट्री में हमार नौकरी लागे जात बा। मनेजर साहेब कहलन हा। इहे कहाला किस्मत। कहां हम नौकरी खातिर बहरा जाये के सोचत रहनी ह, तले अपने फैक्ट्री में चांस मिल गइल।

तीने दिन बाद इहां के नौकरी मिल गइल आ ड्यूटी करे लगनी। बीच-बीच में जब मैनेजर साहब फैक्ट्री के राउंड पर रहस त इहों से भेंट हो जाव। एक दिन ड्यूटी से छूट के सांझ बेरा इहां का घरे आवत रहनी तले मेन गेटे पर मनेजर साहब लउक गइले। इहां का सलाम कहनी त उ तनी मुस्कराइले। थोरिक आगे बढ़के रुक गइले, पुकरले- मथुरा प्रसाद, तुम कल सुबह बंगले पर आओ।

-- जी, सरकार।

इहां का रास्ता भर सोचत अइनी, पता ना कवन अइसन जरूरी काम पड़ गइल जे मनेजर साहेब बंगला पर बोलावत बाड़े। जरूरे कवनो खास बात बा। साधारण बात रहित त उ गेटे पर ना कह देते।

रात में इहां का हमरा से पूछनी- शकुन्तला, तनी आपन दिमाग दउड़ावत ऽ का बात हो सकेला।

हमरा मुंह से निकल गइल- आरे बात का होई, फैक्ट्री में किसिम किसिम के लोग काम करत बा। मनेजर साहेब बाहर के आदमी ठहरले, कवनो लोकल आदमी के बारे में कुछ पूछे के होई।

-- त एह फैक्टरिए में अधरी के लोकल लोग बा, का ओ लोग से ना पूछ सकत रहलन हऽ ? हमार मन एगो दोसरे बात पर दउड़त बा। अइसन त नइखे कि हमरा के नौकरी में बहाल क के उ कवनो फेर में पड़ गइल होखस।

-- चुप रहीं, पता ना राउरो दिमाग कहां-कहां माकत रहेला।

-- ना शकुन्तला, परसउंए चेफ एकाउंटेट साहेब हमरा से कहत रहले- मैनेजर साहब ने तुमको ज्वाइन तो करवा दिया मगर ऊपर से डायरेक्टर साहब का परमिशन नहीं आया। फिर तुम्हारा तनख्वाह कैसे बनेगा ? तबे से हमरो दिमाग चटकल बा।

- अब सूतीं चुपचाप। ढेर मत सोचीं। रात भर के बात बा, बिहने सब खुलासा हो जाई।

रात केहूं ते बीतल। सवेरे आठ बजे इहां का बंगला पर

हाजिर भइनी। मनेजर साहेब बरामदा में कुर्सी पर बइठल रहले। देखते कहले- मथुरा प्रसाद, मैंने तुम्हारे बारे मे एक बात सुनी है।

-- का सरकार, हमरा से कवनो गलती हो गइल बा का ?

-- नहीं-नहीं, बात यह है कि मुझे मालूम हुआ है कि तुम ओझा-गुनी का भी काम करते हो।

- आहि दादा, इ के कह दीहल ह रउरा से ? उहे तनी हड्डा-बिच्छी के मंतर पढ़के झार दीने। कबो-कबो डांड़ में के चोरो झारी ले।

-- नहीं, तुम अपना गुण छिपा रहे हो और यह अच्छी बात है। अपने गुण का ढिंढोरा नहीं पीटना चाहिए। उससे अपना ही मान घटता है।

-- नीमन बात कहतानी। त का हुकुम होता ?

मैनेजर साहेब आगे कहले- देखो मथुरा प्रसाद, मेरी एक विधवा बहन है। हमारे बहनोई शादी के एक साल बाद ही मोटर साइकिल की दुर्घटना में मर गए। तभी से सदमें के कारण मेरी बहन का दिमाग खराब रहता है। अनाप-शनाप बकती रहती है।

- सर, उनको कोई बाल-बच्चा भी है ?

- नहीं। एक बच्चा भी रहता तो शायद उसका, मन लग जाता।

- त उहां के दोसरकी शादी काहे नइखीं कर देत। अब त जैने-तेने विधवा बियाह चालू बा।

- मैनेजर साहेब इहां के ओर लगले ताके।

-- तुमसे क्या बताएं मथुरा प्रसाद ! मैंने कोशिश की थी। वह दूसरी शादी के लिए तैयार नहीं है। तीन साल तक डाक्टरी, हकीमी दवाइयां चलीं। दवा का असर थोड़ी देर तक रहता है, बाद में फिर वही बकझक। मेरे मन की शांति खतम हो चुकी है। दिन रात बहन की ही चिन्ता में रहता हूँ। कोई उपाय सोचो मथुरा प्रसाद।

एक दिन फजीरे-फजीरे इहां का बंसवारी में जाके चार गो कोइन काट ली अइनी। देखते हमार माथा ठनकल- इ का जी ? इ कोइन काहे के ?

- मैनेजर साहब कीहां तनी झाड़-फूंक करेके बा।

इहां के बात सुन के हमरा हंसी आ गइल। अनका के पांड़े दिन देले, आ अपने चलेले भदरा में। काल्ह तकले अपने नौकरी के कवना ठेकान ना रहे। तब अपने जानल मंतर काहे ना काम आइल ?

-- का भइल बा मैनेजर साहेब के ?

समूचा हाल इहां से मालूम भइल। नहा धो के पूजा कहनी। ओकरा बाद जलपान। कोइन के इनार के पानी से धो के मैनेजर साहेब के बंगला पर चहुंप गइनी।

उनकर बहिन के झाड़-फूंक भइल। पहिले त उ आंवके में आवत रहली। झाड़-फूंक के बाद कुछ दवो दियाए लागल। ध ीरे-धीरे हालत में सुधार लउके लागल।

मैनेजर साहेब खुश रहले। एक दिन उनकरा मन में का आइल कि बोला के कहले- मथुरा प्रसाद, आज तुम ज्यादा पढ़े-लिखे होते तो मैं इसी फैक्ट्री में तुमको कोई ऊंचा ओहदा दे देता। अच्छा, तुम एक काम कर सकते हो ?

- हुकुम दिया जाय हुजूर !

- तुम आगे की पढ़ायी की तैयारी करो।

उनकरा बात पर इहां के हंसी आ गइल- का सरकार, आप हमरो से मजाक करते हैं ? भला इस उमिर में पढ़ायी-लिखाई होगी ? बूढ़ सुग्गा कहीं पोस मानता है ? यह काम तो साफे असंभव है।

- नहीं, मथुरा प्रसाद। दुनिया में कोई काम असंभव नहीं होता। लोग साठ-पैंसठ की उमिर में भी पढ़ायी करके डिग्री पा जाते हैं।

घरे आके कुशल के बाबूजी हमरा के समूचा बात बतवनी- मनेजर साहेब चाहत बाड़े कि हम बी.ए. पास क लीं।

एह बात पर हमं चकरइनी। केहूं ते त धींच घांच के इहां का सातवां किलास पास कहनी। झूठ-सांच बोल के मामा बियाह करवले। हमरा बाबूजी से बतावल लोग कि लड़िका मैट्रिक पास बा। जे केहूं ते गड़ही लांघल ओकरा से अब समुन्दर लांघे के कहल जाता।

ओने मैनेजर साहेब रह-रहके जोर डालस- मथुरा बाबू, तुम आगे की पढ़ायी करो।

अउरी गत तब बन गइल जब इहें के साथी-संघाती राय देवे लागल- मथुरा भाई, ताहार दिमाग तेज बा। केहूं ते थोरिक अउरी पढ़ लऽ। तहरा भाग में कहीं अंजोरिए लिखल होखे।

का दोन मैनेजर साहेब एक दिन बोला के फेन कहले - अगर तुम बी. ए. कर लोगे तो तुम्हें एकाउन्ट्स आफिस में भेज देंगे। साथी लोग फेन समझावल- मथुरा, ताहार जिनिगी कंटे पर ऊंख जोखत ओरा जाई। आपन साहेब जब हर तरह के फेसिलिटी देबे के तइयार बाड़े त फेन देर काहे कहले बाड़ऽ। लाग-भीर के बी.ए. क लऽ।

बात के असर पड़ल आ कुशल के बाबूजी के दिमाग बदले लागल। किताब लेके कबो-कबो घर में बइठ के पढ़े लागीं। मार्केट में टीसन के लगे एगो कोचिंग सेंटर रहे, ओमें भी इहां का

आवे-जावे लगनी। एक दिन कहे लगनी- शकुन्तला, अब का कहीं आपन मन के हाल। कोचिंग सेंटर में नबछेड़िया जवनकन के बीच में एगो हमहीं पुरान-धुरान बानी। हमार कापी पर लिखल देख के इ लइकवा मुंह लुका के हंसे ले सन। हमूं कहिले, हंस लऽ ए बाबू। जवन गलती हम अपना लइकांई में कइले बानी ओकर सजाय त हमरे नू भोगे के बा। हमूं त फिचकाल में पड़ल बानी- ओने मनेजर साहेब के सुझाव बा आ एने तहरा लोगिन के बोली के तीर-तलवार बा। सब त हमरे नू सहे के बा। आपन कीमती समय गवां के हम आज पछतात बानी।

केतनों हुमच्चा मारीं तबो मैट्रिक के अंग्रेजी वाला किताब देख के हमार कपार बत्थी उपट जाव। इ पढ़ायी हमरा से पार ना लागी। सोचनी कि जाके मैनेजर साहेब से साफ-साफ कह दीं- सरकार, हम जहां बानी ओहीजा ठीक बा। अब हम पढ़ायी लिखाई करे लायक नइखीं। दिमाग भोथरा गइल बा। उसर पर कहीं खेती होला ?

तबो मैनेजर साहेब जोर देहल ना छोड़ले। उ सांच मन से इहां के भलाई चाहत रहले। जबे इहां में निराशा उपजे त कुछ ना कुछ समझा के नया उत्साह भर देस। कुशल भी एक दिन समझवले- मैनेजर साहेब ठीके त कहत बाड़े। रउआ पढ़-लिख के ऊंचा पोस्ट पर चल जाएब त समाज में इज्जत बढ़ी। दिनेश भइया आ हमरा के रउआ बी.ए. तक पढ़ा देहनी। निर्मला भी मैट्रिक हो गइली। आ रउआ सतवें पास क के संतोष क लेहनी। हमार एगो प्रोफेसर कबो-कबो कहस कि संतोष एक अच्छा गुण है किन्तु इसका एक दुर्गुण भी है कि संतुष्ट आदमी प्रगति नहीं करता। से ही हमरो लागत बा, मन में जब ले अपना स्थिति से असंतोष ना होई तबले आदमी आलस में बइठल रही।

कुशल के बात कवनो गलत ना रहे। उनकर बाबूजी कोचिंग सेंटर गइल त छोड़ देहनी बाकिर मन में इच्छा बनल रह गइल कि केहूं ते कुछ अउरी पढ़ लेतीं। मैनेजर एक दिन कह देले कि मथुरा प्रसाद कल से तुम एकाउन्ट्स आफिस में बैठकर छोटा मोटा काम देखो। बी.ए. करते ही मैं तुम्हारा प्रमोशन कर दूंगा। अइसन कृपा पर हम मैनेजर साहेब के मने मन धन्यवाद दीहनी।

●●●

सतवां कलछुल (सातवां अध्याय)

मीरपुर में खल-बेखल के लोग बा। नीमन सुभाव के लोग बा त बाउरो लोग कम नइखे। हमार नौकरी के समाचार सुनके केतना डाही लोग के हमार एकाउन्टस आफिस में गइल अच्छा ना लागल। केतना लोग त इहे चाहत रहे कि मथुरवा खाली कंटे पर टंगाइल रहो। अइसन लोग में एगो नगेसर महतो भी रहले। खेत के लेके उनकरा घर से पहिलहीं से मन मोटाव चलत रहे। उहे बुढ़उ इ बात फइलवले कि मथुरा झाड़-फूंक करत-करत मैनेजर साहेब के दिमाग फेर देहलन हा। नाहीं त उनकरा जइसन सैकड़ों आदमी एने ओने ढ़िमलात चलत बाड़े। सुबहित कवनो नौकरी नइखे मिलत। आ मथुरवा जाके आफिस के कुर्सी पर मजा काटे लागल। आ मथुरा के कवन भरोसा, कहीं मैनेजर साहेब के बहिनो के मति मत फेर देले होखे। जवान बड़ले बाड़ी, मथुरो कवनो बूढ़ नइखन। जादू-टोना, झाड़-फूंक के बहाने इ उनकरा बंगला के भीतर जाते-आवत रहेले। भगवान जाने कवनो कनेक्सने लाग गइल होखे। एमे अजगुत का बा। सूखल पुअरा आ आगी; लगे लहके कबले खेपी।

अइसन बात जब कान में पड़ल त हमरा भर देही चिनगारी छटके लागल। मन त कइल कि अबे जाके जूता से ओ बुढ़उ के थोबड़ा भुरकुस क दीं। आ बीस गो से उनकरे बेटा राजपति के भी सेवा क दीं। बिना पिटइले उ खानदाने सोझ ना होई। दोसरा के इज्जत माटी में मिलावे धंधा उहे लोग करेला। उ परिवरवे गांव के लपटा ह। पहिले त मोलायमे-मोलायमे सट जाई आ बाद में लागी खोभे।

बाकिर का कहीं शकुन्तला के। आपने जनाना हमरा खेलाफ रहली। बेर-बेर बोलस कि कुकुर के काम भूंके के ह, हाथी त आपना रास्ता ध के चलत जाला।

दुनिया के लोग दोसरा के भीतरी जिनगी में बड़ा रस लेला। आंख खोल के कान पतले रहेला कि केकरा घर में का

होता। प्रेम-मोहब्बत के ममिला होखे, भा खेती-बाड़ी के मर-मोकदमा होखे आपन सतुआ-पिसान लेके लोग पीछे पड़ जाला। सभके भीतरिया बात जाने खातिर ओ लोग के पेट-फूलत रहेला। कुछ ना भेंटाला त रातभर खटिया पर उल्हमेल करत रहेला।

मैनेजर साहब के विधवा बहिन के दशा देख के बड़ी तरस आवे। भगवानो कम टिसाह ना हउंए। आदमी के जिनिगी से खेलें में उनकरो मजा आवेला।

सोचीं त आदमी के जिनिगी ह का, सब त माटिए ह। माटिए से पैदा होके माटिए में मिल जाएके बा। तबो माटी में मिले खातिर एगो टाइम होला। बूढ़-पुरनिया दुनिया छोड़ेला त ओतना दुख ना होला मगर जब कवनो सुंदर खेलवना बीचे में टूट जाला त बड़ा संताप होला।

सरिता के सेनुर पोंछे खातिर भगवान हड़बड़ी में रहले। उनकर पति कलकत्ता शहर के बीच सड़क पर टैक्सी से कुचरा गइले। मोटर साइकिल के तीन टुकड़ा हो गइल। देह के हड्डी-हड्डी टूट गइल। अस्पताल पहुँपे के पहिले मौत आके उठा ले गइल। सरिता के दुख के कथा कहले ना कहाई। पति के निशानी एगो बेटी रहे त उहो छ महीना बाद चल गइल। तैंतीस-बतीस के उमिर में जवानी के भार हलुक ना होला। गोड़ बिछलाए के भारी डर रहेला। जवानी के चार अपना दांव खातिर आगे-पीछे ढूका लागल रहे ले सन।

पता ना हमरा का हो गइल रहे कि रह-रह के हम सरिता के ही बारे में सोचे लागीं। शकुन्तला के ओह दिन एक सौ तीन डिग्री बोखार रहे। वायरल के लछन रहे। हम एक दिन के छुट्टी लेहले रहनी। तले राते में मैनेजर साहेब हमरा के खबर भेजले कि मथुरा प्रसाद आके मिल लेस। जरूरी काम बा।

शकुन्तला के बोखारे के हालत में छोड़ के हम मैनेजर साहेब के बंगला पर चहुंपनी। बंगला फैक्ट्री के पूरब ओर रहे। ओने आन्हार पसरल रहे। जाड़ा के रात में चारों ओर सन्नाटा रहे। बंगला के सीढ़ी पर गोड़ धरते पीछे से मनेजर साहेब पुकरले- आ गए मथुरा प्रसाद ?

उनकरा चेहरा पर तकनी। तनी घबराहट रहे। - जरा अंदर चल के देखो। सरिता की तबीयत फिर खराब हो गई है।

हम उनकरा साथे अंदर गइनी। पलंग पर बइठल सरिता मूंड़ी हिलावत रहली। सब केस फइल गइल रहे। सामने के आलमारी खुलल रहे। ओमे रखल दवा के केतना शीशी डिब्बा-डुब्बी, तस्तरी-गिलास समूचा बहरा फेंकाइल रहे। मैनेजर साहब के कोट-पतलून मोड़-चमोड़ के जमीन पर बीगल रहे। लैम्प के शीशा टूट-फूट के छितराइल रहे। अखबार के बीसों टुकड़ा चिथरी-चिथरी होके पलंग पर पड़ल रहे। - देख रहे हो मथुरा प्रसाद ! इसकी हालत पागल जैसी हो गई है। दो घंटे से चिल्ला-चिल्लाकर न मालूम किसको पुकार रही है। कितना समान तोड़-फोड़ कर नष्ट कर दिया। मैं तो समझता था कि झाड़-फूंक से यह ठीक हो गई है। मगर पुरानी बीमारी फिर लौट आई है।

खड़े-खड़े हम सरिता जी के देखत रह गइनी। देह पर के कपड़ा एने ओने बिखर गइल रहे। उ जोर-जोर से हांफत रहली। हमरा ओर आंख फार के अइसन देखली जइसे साफे चबा जइहन। हे भगवान, इ बीमारी फेन कहसे उपट गइल। हमार गुन-मंतर काम ना कइलस त बगले के गांव के आपन गुरु शीतल मांझी के बोला के देखावले रहनी। उनकरा झाड़-फूंक में अइसन बल रहे कि दोसरे दिन से सरिता ठीक हो गइली। शीतल मांझी झाड़-फूंक करते बूढ़ हो गइले। जवन केस डाक्टर लोग के आंवक में ना आवे ओकरा के मांझी ठीक कर देहले रहले। उहे कहके गइल रहले कि एह जनाना के पोखरा पर के प्रेत सतावता। ओह पोखरा में इ अपना देही पर गंदा लूगा बीग आइल रहली। एही पर प्रेत खिसिया गइल। तीन एतवार के सेनुर नरियर के साथे दारू के बोतल चढ़ावल गइल तबे उ तनी नेवर भइल। बाकिर आज इ फेन का हो गइल।

- कोई उपाय करो मथुरा प्रसाद, नहीं तो मेरी बहन हाथ से निकल जाएगी। ऐसा लगता है कि यह ज्यादा दिन तक बचेगी नहीं।

- आप मन में तसल्ली रखिए साहेब जी, हम फेन कवनो ना कवनो उपाय करबे करेंगे। शीतल मांझी को फेन खबर करके बुलाना होगा।

शीतल मांझी के गांव मीरपुर से दू कोस से तीन जियतारे रहे। अब एह जाड़ा के अन्हरिया रात में ओहिजा के जाई। इहो ठिकाना नइखे कि उ अपना घरह होइहें कि ओझइती करे कहीं दोसरा जगेह चल गइल होइहें। दि रहित त कहीं से खोज-खाज के उनकरा के लीआवलो जाइत। गांवों में इ ओझागुनी, पंडित-पुराहित, भा अमीन लोग खाली कहां रहेला। जेकरा लगे जाई उ पहिलहीं से कहीं बाझल बा। पिछला बेर तीन बोलाहटा पर जब मांझी जी ना अइले त खुद हमरे जाएके पड़ल रहे।

मैनेजर साहेब कहले- जितना रूपिया-पइसा लगेगा, खर्चा किया जाएगा। डाक्टरों ने बताया है कि इसको अपने पति और बेटी के मरने का सदमा लगा है। इसकी दूसरी शादी कर दी जाय। शायद खुशी लौट आए। मैंने एक लड़का भी देख लिया था तब तक बीमारी फिर उभर गई।

- आप निसखातिर रहिए सर। भगवान सब ठीक करेगा।

अब बिहने कुछ किया जाएगा। हम घरे लवट अइनी। बिना खइले सूत गइनी। अब एतना रात के के जाव रोटी-तरकारी बनावे। शकुन्तला बोखारे में पड़ल पड़ल पूछली- रउआ कुछ खइनी हं ?

- हं, रोटी-तरकारी खइनी हं। - हम सांच कह देतीं त उ बेचैन हो जइती।

दोसर करवट फेरत पूछली- मैनेजर साहेब कवना बात खातिर बोलवले रहलन हा ?

हम समूचा कथा बता देहनी।

- बेचारी के करम फूट गइल।

- कहके उ फेन आंख मूंद लेहली। भोर होते हम साइकिल उठवनी आ शीतल मांझी के गांवे चहुंपनी। अभी पूरा फरछिन ना भइल रहे। तनी आन्हारे रहे। गली में ढूकते दूगो कुकुर भूंकले सन। कहीं-कहीं जागरन होखे लागल रहे। जेकरा दुअरा पर माल-मवेसी रहे उ सानी-पानी के तइयारी शुरू कर देले रहे। एक जगेह कउड़ा के आगे बइठल दूतीन आदमी हाथ सेंकत रहे। तीन दिन पहिले एनेहू पाला पड़ल रहे। सभे डेरा गइल रहे कि कहीं फसल मत मरा जाव। कुछ दिन पहिले लोग कहत रहे कि पते नइखे चलत कि पूस के महीना ह। ना त एह घनघोर पूस माघ में इहो दूचार लोग बहरा ना लउकित। रजाई-लिहाफ में सुटकल रहित।

एक आदमी हमरा के टोकते-एतना भोरे-भोरे साइकिल केने उठल बा ?

- तनी मांझी लोग के टोला पर जाए के बा। शीतल मांझी से मिले के बा। कहले- शीतल बाबा त बेराम बाड़े जी। परसउंए उनका के अस्पता चहुंपावल गइल रहे। सात बोतल पानी चढ़ल ह। काल्हे गदबेर के खटिया पर लाद के उनकरा के घरे ले आइल लोग।

खबर त नीमन ना सुनाइल बाकिर जब एहीजा तक ले आइए गइल बानी त उनकर हालचाल हेते चलीं।

दुआर पर उनकर बड़ बेटा से भेंट भइल। उ हमरा के देखते चीन्ह गइल। सभ हाल सुनके बोललें- एतना दूर से रउआ अइनी। बाकिर का कहल जाव, बाबूजी निरोग रहते त जरूरे जइते। पिछला मंगर के उनकरा तीन जगत प्रेत शमन करे जाएके पड़ल। ओही में कवनो उनकरा के दाब देहलस। घरे आवते बाबूजी के मुंह-पेट चले लागल। इ ओझइती बड़ा जोखिम के काम ह। इचिको-सा धियान चूकल भा गलत मंतर पढ़ा गइल त ओझे के माथे बीत जाला। हमरा बाबा के लंगड़ा पीपर वाला प्रेते नू घेंट दाब के मूआ देहलस। हम त उनकरा के देखले ना रहनी बाकिर सुनीले कि बाबा लोहू डकर के मूअले। अब इ धंधा बाबूजी उठवले बाड़े। केस समझे-बूझे खातिर कबो-कबो हमरो के साथे ले जाले। अब त इहे फिकिर बा कि बाबूजी के साथे कवनो नीमन-बाउर बीत गइल तब आगे का होई।

उ अंगना से मीठा के एगो भेली आ लोटा में पानी लेके अइले।

- रहे दीं, भोर-भोर अभी पियास नइखे। - हम कहनी।

- ना जी, मथुरा बाबू, एतना दूर से साइकिल चला के आइल बानी, दूइयो घोंट पानी पी लीं। मीठा अपने कोल्हूआड़ी के ह। बाबूजी निरोग रहतीं त बिना परांठा-भुजिया आ दही-चीनी खियवले रउआ के दुआर पर से जाए ना देतीं।

शीतल मांझी से भेंट ना भइल। चले खातिर साइकिल उठवनी त प्रमोद जी कहले - आरे केस त थोड़ा-बहुत हमहूं समझिए लीला। मनेजर साहेब कवनो भरोसे पर नू बाबूजी के बोलवले बाड़े। कहेब त हमहीं चल चलेब।

प्रमोदो जी एगो साइकिल उठवले। दुनू आदमी चल पड़नी सन। रास्ता में एगो पोखरा रहे। प्रमोद जी अपना साइकिल के हैंडिल दोसरा ओर मोड़ दीहले। तले हम पूछ पड़नी- ओने केने जी ? हमरा गांव के रास्ता त सीधा एने से पड़ी।

उ हमरा के सनकियवले- एहीजा से निकल चलीं त आगे बतावत बानी।

कुछ दूर गइला पर साइकिल रोक के प्रमोद जी बतवले- जहां से रास्ता मोड़नी हं उ पोखरवा बड़ी खतरनाक ह। ओने तीन गो बुडुआ भूत बाड़े सन। एकान्ता पाके राही-बटोही के ध के खून चूस लेले सन। हम जानी जे जब तक ले एही पोखरा में बीसन आदमी डूब के मर गइलन। जवना पछिमारी भिंडा से हमनी के रउआ गांव का ओर मुड़े के रहल ह ओहीजा एगो झूर बा। साइकिल के पहिया छुआते हमनी का दुनू जाना घड़ाम से गिर जइतीं सन। बाबूजी बतवले बानी कि एहं झूर-झंड़ार से होके कबो मत जइह। भोगपुरा के सत्यनारायण पंडित के सजाव दही से भरल नदिया एहिजा आवते फूट-फाट गइल। दस मिनट के बाद ओहीजा दही के नामो निशान ना रहे। हे पहलेज बाबा, हमनी के रक्षा करिह। कवनो गलती भ गइल होखे त माफ क दीह।

एतना बोल के लंबा सांस लेहले प्रमोद जी। हमनी का आगे बढ़नी सन।

साढ़े आठ बजत-बजत मैनेजर साहेब के बंगला पर चहुंपनी। प्रमोद जी हाथ-गोड़ धोवले, कुर्ता के पाकिट में से एगो पत्थल निकाल के अपना माथा से छूअवले। मनेमन कुछ बुदबुदइले। दू हाली आसमन के ओर तकले। अइसन बुझाइल जे उनकरा कुछ लउक गइल बा।

मालूम भइल कि सरिता रात में मुश्किल से दू घंटा सूतल बाड़ी। भोर से फेन उहे तूफान जोतले बाड़ी। आपन बक्सा निकाल के लॉन में बीग देहली ह। चाउर के टीन उलिट देहली ह। कबो हंसत बाड़ी त कबो रोअत बाड़ी। प्रेत साफे मूंड़ी पर सवार हो गइल बा।

प्रमोद जी मंतर बोलत कमरा में ढूकले। सरिता के देखते कहले- जल्दी से लोहबान आ सरसों मंगाई। दस मिनट में सामान आ गइल। लोहबान जरा के ओमें सरसो आ सूखल मरीचा डाल देहले। ओहिजा जे जे खड़ा रहे, सभे के खोंखीं उपट गइल। खोंखत-खोंखत लोग के आंख लाल हो गइल।

सरितो खोंखे लगली। प्रमोद जी टनकारे बोलले- ध्यान दीं लोगिन। इनकर खोंखी के आवाज बदल गइल बा। इ खोंखी प्रेत के ह। तनी दम धरी लोगिन, एह प्रेत के खोंखावत-खोंखावत हम गांव के सिवाना से बाहर ना चहेट देहनी त प्रमोद मॉझी हमारा नांव ना। सरिता जब-जब खोंखस त मांझी लोटा के पानी से उनकरा मुंह पर छींटा मार देस। सरिता रह रह के उजबुजा जास। तले सेकेंडो ना लागल कि सरिता पलंग पर से कूद के प्रमोद के घेंट किचकिचा के ध लेहली आ झूले लगली। प्रमोद चिलइले छोड़ ! छोड़ ! हमारा घेंट छोड़ ! ना छोड़बे त मार मंतर के तोहरा के एह देस से निकाल देब। हमरा लगे भगवान शंकर के त्रिशूल बा। खाली गोहरवला के देरी बा। हमार गर्दनिया काहे धइले बाड़े रे ! छोड़S तारे कि ना ?

सरिता चिल्लाए लगली- ये कौन है जी ? यही है, यही है, हावड़ा के पुल पर मिला था। यही है वो आदमी। हमारे हसबैंड को इसी ने मार दिया। भागो, नहीं तो सैंडल से तुम्हारा मुंह फोड़ दूंगी।

सरिता के आंख से जइसे लुती छूटे लागल। प्रमोद मांझी त हक-बक। का बोलस का ना बोलस। दोसरा घर के मेहरारू रहित त झोंटा ध के असइन नचइते कि जिनिगी भर इयाद रखित। बाकिर गम खा के रह जाए के पड़त बा। मनेजर साहेब के बहिन हई। फैक्ट्री के लोग सुनी त का कही।

प्रमोद मांझी बहरा आके हाथ गोड़ फेन धोअले। आंख पर पानी के छींटा मरले। मनेजर साहेब फिकिर फिकिर में चुपचाप खड़ा रहले, पूछले- कुछ पता चला ओझा जी ?

- आरे, सब पता चल गया साहेब। बीमारी तो दूरे से हमको मालूम हो गया था। मगर बात क्या है कि इ प्रेत एगो ओझा से आंवक में नहीं आएगा। एकरा के सतावे खातिर पांच गो ओझा के बुलाना पड़ेगा। दूगो त बंगाले से आएगा, वही मिदनापुर में है। उन दोनों को काली चंडी सिद्ध है। जल्दी कहीं आता-जाता नहीं है सब। अपने मठ में मस्त बइठा रहता है। लोग चाउर आ लौंग लेके मंतर पढ़वाने जाते हैं।

- तो हम भी चावल-लौंग भेज देते हैं - मैनेजर साहेब बोल पड़ले।

- ना साहेब, खाली चाउरे से काम थोड़े चलेगा। केहूं तरी उन दोनों को मीरपुर बोलाना पड़ेगा। उनका चार्ज तो है भी है मगर उ गुनी भी एक नंबर के हैं सब। एक बेर मरीज को अपना आंख से देख लेगा त मरीज के छटपटी मार दी। दुनिया भर के भूत-प्रेत, जीन-डायन ओह दुनू से पांच कोस दूरे रहेले सन। हम अपना आंख का देखा बात बोल रहे हैं।

- तो बोलिए क्या खर्च है उनको बुलाने में ?

प्रमोद जी कुछ देर ले सोचले। कागज-पेन लेके हिसाब लगवले। फेन बोल ले - आरे नाहियो त रेलगाड़ी के भाड़ा, बर-विदाई लेके दस हजार रूपिया लग ही जाएगा। आ एगो अलगा से खर्चा दारू का है। ओझवन के दूनू बेरा संझा-सवेरे दूदू बोतल दारू चाहीं। बाकिर हैं भारी जगता। राउर बहिन के बेरामी त जिनिगी भर खातिर ठीक कर दी लोग।

मैनेजर साहेब कुछ सोचे लगले। प्रमोद जी के नाश्ता-पानी करावल गइल। उनकरा हाथ पर सवा सौ रूपया ध के मैनेजर साहेब कहले-- हम आपको खबर करेंगे।

रूपया कुर्ता के बगली में सरकावत प्रमोद कहले- जइसन भी होखे खबर हमरा को कर दीजिएगा। चिट्ठी-फोन से काम नहीं चलेगा। केतना फोन चिट्ठी आवत रहेला। ओकनी का कुछ बूझेले सन। एक आदमी को खुदे कलकत्ता जाना होगा। आरे दूसरा कौन जाएगा, हमको ही जाना पड़ेगा। धान के कटनी लागे वाला बा। तबो का करेंगे आपके काम खातिर कवनो ना कवनो भांज तो लगाना ही होगा।

साइकिल पर सवार होके प्रमोद मांझी चल गइले। मैनेजर साहेब हमरा ओर ताक के कहले- अब आगे क्या होगा मथुरा प्रसाद ? कोई रास्ता निकालो।

- रास्ता जरूरे निकलेगा सर।

मैनेजर साहेब मिनट भर चुप रहला के बाद बोलले- मथुरा प्रसाद, हम अपने दिल की बात कहते हैं। इस ओझा-गुनी के नाटक-साटक में मेरा अब विश्वास नहीं रह गया। ओझा लोगों ने अपने कमाने का अच्छा धंध बना लिया है। कलकत्ते से फिर दो ओझाओं को बुलाना। इतना खर्च करने के बाद भी मुझे भरोसा नहीं है कि सरिता की बीमारी ठीक हो पाएगी। मैं अपनी बहन को लेकर हमेशा तनाव में रहता हूं इसलिए कहता हूं कि अंधविश्वास की इन गलियों में भटकने से अच्छा है कोई व्यावहारिक समाधान

निकले। इन देहाती टोटकों में धन ओर समय की बर्बादी के अलावा कुछ हाथ नहीं लगता।

मैनेजर साहेब के मन के दशा हम अच्छी तरह से महसूस करत रहनी। बेचारू अपना बहिन के ही लेके उ आपन घर ना बसवले। सांच पूछल जाव त सरिता के साथे-साथ मैनेजरों साहेब बीमार बाड़े।

चले के पहिले उनकरा से हम एतने कहनी- सर, ईश्वर बहुत बड़के शक्ति होले। उनकरे पर विश्वास करीं। उहे कवनो ना कवनो रास्ता निकलिहें।

हम घरे लौट अइनी। ओह दिन आफिस पहुंचे में देर हो गइल। मुखर्जी बाबू हमरा के देखते गाभी बोलले- मथुरा मैनेजर साहब के बंगला पर घंटा घंटा भर बैठकर साहब का बटरिंग करता रहता है।

अब हम उनकरा के का जवाब दीं।

●●●

अठवां कलछुल (आठवां अध्याय)

खटिया पर पड़ल बीमार आदमी ढेर कुल्ही अकट-बलाय सोचत रहेला। बेधरान बात मन में उपजेला। हम अइसन किस्मत खराब लेके अइनी कि ना अपना पति के सुख दे पवनी ना लइकन के। टायफायड में हमरा के लकवा मार देहलस। अब त उठलो-बइठल कठिन हो गइल बा। बीमार पड़ले सात महीना से ऊपरे हो गइल। एगो बेरामी के चलते केतना रूपया झोंका गइल। डाक्टर के कहनाम बा कि आखिर तक जिनिगी अब एहीं ते काटे के बा। इहां का कहिले- घबरा मत शकुन्तला, धीरज धरऽ। तहरा के हम निरोग करा के रहेब। चाहे खेतबारी-घर-दुआर तक बेच देबे के पड़े। तू फेन पहिलहीं जइसन चले-फिरे लायक हो जइबू।

कबो-कबो त सूतला रात में आंख से लोर ढरकेला- अब का रखल बा अइसन जिनिगी में। सूरत से तीन हाली बेटा-पतोह लोग आ चुकल। कुछ रूपयो-पइसा दे गइल। एह बेरी दिनेश जाते-जाते कह गइले- माई, हमं का करीं। ओहीजा तोहरे चिंता-फिकिर लागल रहेला। महंगाई में घर-गृहस्थी, लइकन के पढ़ायी-लिखाई में तनाइल रहे के पड़ेला। मन अइसन करेला कि नौकरी-चाकरी छोड़ के गांव ही आके रहीं। बाल-बच्चा एहीजा पढ़े लोग। खाली-पढ़ाइए-लिखाई में हर महीना हजारों रूपया ढ़कच देबे के पड़ेला।

हम मना कइनी- ना ए बाबू। लगल-लागल नौकरी छोड़े में कवनो बुद्धिमानी नइखे। तू आपन परिवार पालऽ पोसऽ। हमनी के चिन्ता-फिकिर छोड़ऽ। एहीजा लटत-बूड़त केहूं ते सब निबटिए जात बा। गांव में का धइल बा। खेत के अनाज-पानी खाहूं लायक पूरा नइखे पड़त हमार रोग त अब जिनिगी भर के बा। रेत में गिरल पानी नीयर सब रूपिया-पइसा सोखाइल चल जात बा। फायदा कउड़ी भरके नइखे बुझात।

पिछला बार दिनेश हमरा के अपना साथे सूरत शहर ले जाएके कहत रहले। कहले- अब ओहीजा ताहार इलाज होई।

उनकर बात पर हम कहनी- तू एतने पूछ देहलऽ हमनी खातिर बड़का बात बा। तू लोग बनल रहऽ। भगवान तहरा लोगिन के निरोग राखस। सभके बरकत होखे।

पतोहियो लगे बइठ के तिलतिल कहे- सूरत चलीं अमां जी। ओहिजा ठीक हो जाएब।

हम जानत रहनी कि एगो गृहस्थी उजाड़ के दोसरका बसावे में कम गंजन ना होला। गांव के आपन जोगावल गृहस्थी बर्बाद हो जाई। दिनेश के बाबूजी के मिल के नौकरी छोड़े के पड़ी। फेन दोसरा जगेह नौकरी मिलल कठिन होई।

रेलगाड़ी पर चढ़े के टाइम दिनेश आ मंजरी फफक-फफक रोअत रहे लोग। इहों के आंख डबडबा गइल। बाप-बेटा के बिछुड़त दुनिया देखत रहे।

दस-बारह दिन ले उ लोग एहीजा रहे। तब इहे घर भरल-भरल लागत रहे। छोट घर होखे भा बड़, घर के शोभा आदमिये से होला। घर-अंगना में चहल-पहल भइल रही। दिनेश के दुनू लइकवा खटिया पर आके हमार गोड़ जांतऽ सन। कबो हमरा लटियइला केस में ककही करऽ सन। हरमेसा इया-इया कहले रहऽ सन।

जब पहिला बेर अपना के इया सुननी त तनी लाज लागल। देखऽ ना, काल्हे डोली से उतरनीं आ आज हम इया बन गइनी। बिछावना पर से उठे लायक रहतीं त हम अपना बाबू के अपना हाथ से कुछ बना के खियइतीं। दिनेश के हमरा हाथ के बनावल लिट्टी-चोखा बड़ा पसंद ह। बाबू कहत रहले-माई, सूरत में लिट्टी-चोखा मंजरी बनावेली बाकिर तोहरा नियर कहां।

ओ लोग के गइला के बाद इ घर-दुआर केतना दिन ले भांय-भांय करत रहे। दिन में छोटकू लगे रहस, सांझा के उनकर बाबूजी आ जाई। खायेक बनावे खातिर पटीदारी के एगो बबुनी आ जास। बेचारी हमार चउका संभार जास। गांव में त अइसनो लोग बा जे दुख-सुख में आके मदद कर जाला। ओ शहर में के मिली।

अपना दुख के बारे में सोचत-सोचत मनेजर साहेब के बहिन पर धियान चल गइल। बेचारी के किस्मत फूट गइल। नीमन रहनी त उनकरा से हमार एक-दू-हाली भेंट ह। तब उदास त रहली बाकिर दिमाग ठीक रहे। उनकरो हर बात अब कथे-कहानी नियर सुने के मिलत बा। एक दिन बड़ी हंसी आइल। जब इहां का आके हमरा से उनकर कहानी सुनवनी। कातिक के महीना के आखिरी पख रहे। छठ-पूजा देखे खातिर सरिता जी के मन कुलबुलाइल रहे। मैनेजर साहेब त मेरठ के हउंए। यू.पी. में ओने छठ-व्रत ना होला। एहीजा सरिता जी नया साड़ी पेन्ह के छठ-तीरे जाए के प्रोग्राम बनवली। बनठन के तइयार भइली। त मैनेजर साहेब कहले- मथुरा बाबू, आप जरा इनको छठपूजा देखा आइए।

फैक्ट्री के कार ओह दिन खराब रहे। उ रेक्शा पर बइठली। पीछे-पीछे साइकिल पर कुशल के बाबूजी चलनी। एही बीचे रास्ता में साइकिल के टयूब भड़ाक से फाट गइल। उ लगली कहे- आप हमारे रिक्शे पर आ जाइए। इहां का कहनी- नहीं, हम एहीं तरे ठीक हैं। आप रिक्शा पर चलिए। मैं गोड़े-गोड़े चलता हूं। साथ में बैठूंगा तो लोग अच्छा नहीं कहेंगे। इ मीरपुर है। हर मीरपुरी तीर छोड़ने में आगे रहता है।

- जिसको जो कहना होगा वह अपने घर रहेगा। हमारा क्या बिगड़ेगा। लड़का लड़की राजी तो क्या करेगा काजी !- कहके सरिता हंसे लगली।

हे राम ! इ कइसन बोली कढ़ा देहली। जीभ पर तनिको लगाम नइखे ए मेहरारू के। विधवा हो गइली बाकिर जवानी के गर्मी अभी सेराइल नइखे। उ रिक्शा पर बइठे खातिर जिद करे लगली। आखिर में लजाते-लजाते इहां का बइठे के पड़ा। छठघाट अभी दूर रहे। बाते बात में पता ना उनकरा मन में कइसन जोश जागल कि पूछ बइठलीं- मथुरा बाबू ! मैं शादी कर लूं ?

- कर लीजिए। एमे कवनो बुराई है ? आजकल विध्वा-विवाह त होता ही रहता है। कवनो लइका तइयार है क्या?

- हां, तैयार है।

- कौन है लड़का ? इधरे का है कि आपके देस का ?

सरिता खूब जोर से हंसली-लड़का तैयार है। यह क्या मेरे पास बैठा है।

सरिता इहां के केहुनी छू के हुदका देहली। इहां का त लाजे गड़ गइनी। हे राम, इ कइसन बात बोलऽतारी। हम बाल-बच्चादार उमिरगर आदमी। परिवार में आपन बेटा-पतोह।

- चुप रहिए ! आप नीमन बात नहीं बोलती हैं ?

कुशल के बाबूजी सरिता के डंटनी। उनका चेहरा पर हंसी रहे।

अब सरिता के पगलाए में देरिए का बा। सारा कथा-पुरान इहां का सरिहार के हमरा के सुनवनी। ओतना देर खातिर हमार दुख-बीमारी सब बिला गइल। कइसन उ जनाना बाड़ी जे एगो बायली मरद से एतना बात बोले के हिम्मत कइली। इहां का हंसते पूछनी- तब बोलऽ ना शकुन्तला, बियाह क के एगो अउरी मेहरारू बइठा दीं एह घर में ? ताहार सेवा-टहल करी।

- बढ़नी मारो अइसन सेवा-टहल के। जहां ओ मुसमात के रउआ घर में बइठवनी, लोगवे रउआ के जीए ना दी। रउरा नाम पर थू-थू होखे लागी।

कुशल के बाबूजी मुसकी छोड़त खटिया पर बइठ के हमार कलाई ध के कहनी- हम मजाक कइनी ह शकुन्तला। अइसन करम भला हमरा से हो सकत बा ?

जेकर बांह एक बेर थाम लेहनी अब उहे हमरा के पार लगाई।

- उल्टा नाव मत खेंई। हम पार लगाएब कि रउआ।

- तहरा शायद मालूम नइखे। चुनाव प्रचार में शिवाला पर नगेन्द्र बाबू भाषण देत रहले-समय बदल रहल बा। पश्चिम देशन के सभ्यता अपनो देष में चहुंप गइल बा। जेंते बिलायत में मरद-मेहरारू एक बाड़े ओहीं ते भारत में भी स्त्री-पुरुष बराबर बाड़े। अब औरत भी अपना हक के लड़ाई लड़िहें। मेहरारू लोग के मुखिया-सरपंच बनावल जा रहल बा।

- रहे दीं, रउओ नगेन्दर जी के कहला में आ गइनी।

इ संब नेता लोग के आपन दांव-पेंच ह। जनाना के भोट हथियावे खातिर इ चाल ह। जीत गइला पर केकरा के; के पूछेला। सांच पूछीं त अपना हिन्दुस्तान में जनाना जनने रहिहें। मुखिया-सरपंच भइला से का।

- हम त नगेन्दर जी के बात कहत बानी। उ इहो कहले कि समाज में पुरुषों का अतियाचार बढ़ता जा रहा है। नारी जाति को अब जागना होगा। उनकरा बतिया पर जनाना समाज बड़ा बम-बम रहे।

हमनी का दुनू जाना हंसे लगनी सन। बिहाने भइला अभी आठो ना बजल रहे कि एगो लइका दउड़ल आइल- ए चाची ! ए चाची ! दुअरा पर एगो डकौतिया आइल बाड़े। हमरा चाची जी के बात इयाद पड़ल- अपना गांव में कबो-कबो एगो डकौतिया आवे ले। उनका देह पर हनुमान जी के सवारी बा। सब सांच-सांच उचारे ले।

मन बेचैन हो गइल। उठल-बइठल मुश्किल रहे। अब डकौतिया जी के कइसे भेंट होखो। एगो लइका के भेज के चाची जी के बोलवइनी।

पलंग के लगे आवते चाची जी पूछली- काहे के बोलवलू ह ए दुलहिन ? हमार त करेजे धक से हो गइल ह, का बात बा जे एतना सवेरे तहार बोलहटा पहुंचल ह।

हम कहनी-दुअरा पर डकौतिया जी आइल बाड़े। तनी हमरा बारे में पूछल ना जाव। पूरबारी ओसारा में बइठल बाड़े।

चाची जी कहली- इहें का दू साल पहिले भखले रहनी। इहां का काग भाशा जानी ले। जगदीश बो के बारे में गांव में हल्ला रहे कि बांझ हई। बियाह के आठ साल हो गइल अबले कुछ ना सुनाइल। उनकर हाथ के रेखा देख के इहें का भविष्यवाणी कहनी कि लइका के जोग बा। थोड़ा-बहुत खर्चा करे के पड़ल। आज जगदीश बो गोदी में साल भर के लइका खेलावत बाड़ी।

सुनते डकौतिया जी बोलले- आप लोगों से क्या छिपाना है। संसार मेरे बारे में जानता है कि पं० गंगाधर मिश्र के मुख से जो निकल जाता है वह ब्रह्मा का रेख होता है। सब पवन सुत हनुमान की कृपा है- जय जय जय हनुमान गोंसाई कृपा करहु गुरुदेव की नाई।

- त ए पंडी जी ! तनी दुलहिनो पर कृपा कइल जाव। केतना महीना हो गइल इनका खटिया धइले। ना उठल जाता, ना बइठ पावत बाड़ी। देसी-बिलायती कवनो दवा सुनत नइखे। - चाची जी कहली।

- सब सुनी मतवा, सब सुनी। आप चिन्ता मत करें। तनी हमरा ओर हाथ बढ़ाइए तो।

हम बायां हाथ उठावे के कोशिष कइनी। तनी सा हिल के रह गइल। उ दहिना हाथ देख ले। कबो हमरा लीलार पर देखस, कबो हाथ के लकीर। मनेमन कुछ बुदबुदइले। सभके मन हुलहुलात रहे- डकौतिया जी जरूरे कवनो भेद खोलिहें। दस मिनट से ऊपरे टाइम बीत गइल। सभे पलंग के आगे-पीछे सांस सधले चुपचाप खड़ा रहे। तले गोपाल बो के गोदी के लइका छरिया गइल। लोग डांटे लागल-लइका एहिजा मत रोआव ! ले जा दुअरा ! एहिजा कवनो मिठाई नइखे बंटात। डकौतिया जी के धियान अगर भंग हो गइल त उहां के मुंह से कवनो गलत बात निकल जाई। फेन भोगत रहिह लोग।

चाची जी के बात पर गोपाल बो छनक के कहली- चलऽ सन रे, चलऽ सन। बड़का भारी डकौतिया आइल बाड़े एहीजा। रूपिया पइसा खसोट से सभका के ठग के एहीजा से खेवर जइहें। पर साल बढ़ई टोला में इहे नकली सोना के असली कहके बेचले रहले। भेद खुलला पर खूब थूरइले।

बुदबुदात गोपाल बो बहरा चल गइली। डकौतिया जी पूछले- वह कौन औरत है। बहुत बकबकाती है। चाची जी कहली- आरे छोड़ल जाव ओकरा बात के। कवनो करम के मेहरारू ना हिय उ। चार साल से मरद छोड़ले बा। कबो कबो देवरा आ जाला। अब नइहरे में कूटनी-पीसनी करेले। हं त बतावल जाव, मथुरा बो के भाग में आगे का लिखत बा।

डकौतिया आंख मूंद के चुप रहले। एक छन खातिर अंगना के कोंहड़ा के लतर का ओर देखले। फेन बोललेे- बात कुछ पकड़ में आ रहल बा। अच्छा इ बताई सभे- इ कोंहड़ा के फरहरी अंगना में कबले बा ?

- फरहरी त परेसाल के ह। ओही जगहिया पर दोसर लतर रहे। एह साल बढ़ के देवाल छाप ले ले बा।

- तनी सरसों के तेल आ चुटकी भर सेनुर मंगाई लोगिन।

- सेनुर त सिन्होरा में होई ए पंडी जी।

- नहीं नहीं, सिंहोरा के सेनुर ना। अलग से मंगाई।

एगो लइका दस पइसा के सेनुर कीने गइल। थोड़े देर में खाली हाथे लउटल-दोकानदार कहत बाड़े कि दस पइसा वाला जमाना गइल। कम से कम अठन्नी के सेनुर मिली।

सेनुर आइल। तेल में सेनुर मिला के डकौतिया जी पलंग के पाटी पर अपना अंगुरी से कुछ लिखले, फेन पूछले- इ कोंहड़ा फरत बा कि ना ?

- परसाल त खूबे फरल। गांव के केतना घर में बंटइबो कइल।

- आ हा, इहे त जुलुम हो गइल। रउआ घर से दखिन

ओर कवनो कोंहड़ा भेजल गइल ?

- हां ओने त तीन घरे गइल। - हमारा जवाब रहे।

- का बात ह ए डकौतिया जी ? - चाची पूछली।

- अब पूछला में का बा। बात पकड़ा गइल। एने से कोंहड़ा गइल बा, आ ओने से कवनो बेयार बहल बा। ओही हवा के असर पड़ल जे रउआ के लकवा मरलस। जादू-टोना से बड़ा बड़ा रजवाड़ा माटी में मिल चुकल बा।

इ बात सुनके सभे हक बक रह गइल। दखिन टोला में एगो डाइन रहे। ओकरा से सभे फरकाह रहत रहे। हमरा बुझाइल जे डकौतिया जी असली बात पकड़ ले ले बाड़े। उनकरा कहला पर ओही बेरा कोंहड़ा के लतर काट के अंगना से उखाड़ दीहल गइल। खाए खातिर कुछ दवा बतवले आ जात-जात इहो कह गइले कि एक साल तकले दोसरा घर के बायन खइला के काम नइखे।

गांव के लोग कहल कि डकौतिया जी मथुरा बो के असली बीमारी पकड़ लेहले। मगर डकौतिया के गइले दू महीना पूरा होता। अभी कवना फायदा नइखे। पता ना भगवान के का मर्जी बा।

हंसते कुशल घर में ढुकले।

- कइसन तबीयत बा माई ?

- कइसन कहीं। डकौतियो जी के दवा फेल क गइल।

- हम त पहिलहीं कहले रहनी कि तहरा मरले बा लकवा आ तू डकौतिया के फेर में पड़ल बाडू। इ सब लोग के भीतर अंध विश्वास पैदा क के आपन उल्लू सीधा करे ले सन। हमार बात तहरा चाची के भी बेजायं लागल। खैर छोड़S इ सब बात। आज एगो खुश खबरी मिलल ह।

कुशल हमरा लगे बइठल-बइठल कौनो अखबार के खबर बतवले। सरकार बेकार बइठल ग्रेजुएट लोग के धंध व्यापार करे खातिर रूपया पइसा दी। एह बात पर हमरो खुशी भइल। अच्छा बा, सरकारी सहायता मिल जाव त हमरो बेटा कवनो राह पर आ जास। बेकार बइठल दिन काटत बाड़े। चिन्ता-फिकिर में कबो-कबो पितपितइले बोल देत बाड़े। एक दिन अपना बापे से बहस करे लगले। उहां का एतने कहले रहनी कि बी.ए. भइला के घमंड में तू मिल के नौकरी के लात मरलS। तहरा गरूर रहे कि जइसन चाहेब नौकरी मिल जाई। से कुछ भइल ना। अब उनकरा देस दुनिया के हाल लउकत बा। एक से एक पढ़ल-लिखल लोग एही शुगर फैक्ट्री के नौकरी खातिर कइसन कइसन सोर्स-सिफारिश में लागल बा।

ओह दिन त हम कुछ ना बोलनी। बाकिर थोड़े ही दिन बाद हमरा बुझाए लागल कि कुशल पहिले से तनी नरम भइल बाड़े। फैक्ट्री में नौकरी लाग जाव त करेके तइयार बाड़े। कुशल खुदे कहत रहले कि व्यापार उनकरा से ना होई। सरकार से लीहल कर्जो हेनमेन हो जाई। सरकारी कर्जा जब एक बार मूंड़ी पर चढ़ जाई त उतारे खातिर कइसन-कइसन नाच करे के पड़ी।

आजो कुशल कहत रहलन हा- माई, बाबूजी से कह दे कि हमरो नौकरी खातिर उहां का सोर्स पैरवी लगाईं। फैक्ट्री लेबर यूनियन में उहां के आपन दोस्त लोग बा। उ लोग जरूरे मदद करी।

आज कुशल जब नहाए खातिर कल पर जात रहलन त उनकर लम्बा-चौड़ा देह देख के त हम चिहा गइनी। देखS ना, देखते-देखते हमार बेटा सियान हो गइल। हमरा खेयाल से कुशल के अब बाइंसवां लागी। मोंछ भी जामे लागल। अब इनकरो बियाह करा देबे के चाहीं। जब हमार अइसन हाल बा। अब त आपने देह ढोअल भारी बा। घर में एगो बेकत चाहीं जे सभे के खियावे-पियावे के इन्तजाम करो।

कपड़ा लता पेन्ह के कुशल जब बड़का ऐनक के आगे खड़ा होके आपन बाबड़ी झारत रहले त खुशी में हमरा मुंह से निकल गइल- अब तोहरो शादी हो जाई त केतना नीमन होई।

- बड़का बेटा के शादी क के केतना सुख भोगत बाडू ? अभी इ सब मत सोचS। जब ले तू ठीक ठाक ना हो जइबू तब ले हमरा शादी-बियाह के सोचिह मत।

शेष अगिला अंक में पढ़ीं...

●●●

प्रसंगवश

'पाती' के जरिये एगो जरूरी पाती

'ब्राह्मणवाद' आ 'राउर भोजपुरी'

भाई हरिश्चन्द्र जी,

सादर प्रणाम !

हिन्दी में एक बेर 'एन्टी-ब्राह्मणवाद' के बँड़ेरा उठल रहे आ घोरवाद, अघोरवाद, दमितवाद, दलितवाद, हीनतावाद आ कृतघ्नतावाद जइसन दर्जनन वाद एह पर थपरी पीट के नाचत रहे लोग। एक बेर फेर एगो भोजपुरी - हिन्दी पत्रिका में एह सब के जरोह देख के उदासी बर गइल। बकौल फिराक -

"जिन्दगी क्या है, ऐ दोस्त,
आओ बैठें, सोचें
... ... और उदास हो जायें।"

भोजपुरी के करिहाँव त कैसेट वाला, फिल्मवाला, टी.बी. वाला आ गड़हा-गुड़ही महोत्सव करे-करावे वाला कहिए तूर दिहले स, रउआ नियर एगो बाउर-ना लेखक आ बुरबक-ना आदमी के जरिए, भोजपुरी में भइल 'ब्राह्मणवाद' के फूहर प्रयोग, बताईं, एकर जीभिए ना उखार दीं ? त¨ हम हँस त नाहिंए सकत रहीं ? 'सीजर' के शब्दन में कहत-कहत रुक गइलीं - 'इट टू ब्रूट ?'

खैर¨, सब केहू अपना सोभावे के मोताबिक नू आचरन करेला ? जाए दीं- "पयः पानः भुजXानां केवलं विषवर्द्धनम्" शेक्सपीयर अपना 'मैकबेथ' में कहऽ तारे -

There's daggers in men's smiles.
The nearer in blood, the nearer loody.

माने, एहिजा जे बा, ओकरा हँसी में कटारी लुकाइल बा। जिनका से हेमनी के खून वाला नाता बा, उहे हमनी के खून काढ़े प उतारू बा। इहे कम नइखे कि रउआ खून लेबे में इतना देरी कहनीं। हमार सोहाग-भाग -

दिन एक सितम, एक सितम रात करो जी।
हो दोस्त तुम तो दुश्मनों को मात करो जी।।
तुम साथ रहो हर घड़ी, पर ऐन वक्त पर,
सबकी नजर बचाके, भितरघात करो जी !!

आगे¨ हमरा लागल राउर 'एन्टी-ब्राह्मणवाद' हिन्दी-विन्दी से छाना माँग के सातू-के ढेंकार मारऽता आ जीवन-जगत के कुछ साँच-झूठ उचिला के, सरधा आ विश्वास पर थूकत, झट अपना सरला काने कागजी खोंस के चल देता।

रस्किन कहले रहे कि दुनिया में दू तरह के लोग होला। एगो त ऊ, जे सत्य के सँगे खाड़ होखे के हियाव राखेला आ अपना के खतमो क के सत्य के बचा लेला आ, दुसरका ऊ, जे सत्य के अपना सँगे खाड़ होखे के मजबूर क देला। निःसंदेह पहिलके तरह के लोग श्रद्धा आ विश्वास के संगे सत्य तक पहुँच पावेले। हमरा जरूर दुःख बा, कवना कारने रउआ दोसका जरोह (समूह) में शामिल भइनीं ?

राउर ब्राह्मणवाद माने का ? जिनिगी आ साहित्य में जतना अनेर, पइया, अधीरजी आ यथास्थिति पोषक बा, ऊ सब आ ब्राह्मण माने अपना कपारे मउर ध के अनकर चउंड़ फोरे वाला। इहे नूं ? हे नवीन सिरिजना के नवीन सिरजनहार ब्राह्मणवाद के व्याख्याकार ! अपना दुबिधा आ अभागती सुविधा पर एगो नया वेद रच दीं। पुरनका त कहिए बहि-दहि गइले स¨ प्रलयपयोधि जले !

पुरनका बेदन में ब्राह्मण प त ढेर कहाइल-सुनाइल बाकिर ब्राह्मणवाद प कुछो ना। मये शास्त्र एक सुर से कहऽ तारे स... जे ब्रह्म के जाने उहे ब्राह्मण। ऋग्वेद के अनुसार भगवान के मुँह से ब्राह्मण, भुजा से क्षत्रिय, जाँघ से वैश्य आ गोड़ से शूद्र लोग जनमल। ऋग्वेद ई नइखे कहत कि गोड़े धिरनई लगा के, मुँह के मूँजि अस थूरऽ भा मुँहे तेजाब घोर के गोड़े थूक दऽ। कवनो वेद आज ले ई ना कहत सुनल गइले स कि पनही कपारे ध के 'भाई-भाई' के नारा लगावऽ आ पलखत पावते नटई टीप के होहकारा मचा दऽ¨ पंडित बाद बदंते झूठा।

भारतीय जीवन में ब्राह्मणवाद, क्षत्रियवाद जइसन कवनो चीज कबो ना रहल। समाज में आचरण के पवित्रता आ सहजता के चलते ब्राह्मण विशिष्ट रहे आ ओकर बेसी मान-जान रहे। शुरू में कवनो वर्ण जातिगत भा कुलागत ना रहे। महर्षि पाणिनी, संस्कृत के महान वैयाकरण, अष्टाध्यायी के रचयिता, वैश्व रहले बाकिर अपना कर्म में ब्राह्मणत्व के अधिकारी भइले।

'श्रीमद्भगवद्गीता' में ब्रह्मनिर्वाण (ब्राह्मणत्व) के बारे में बतावत कहल गइल बा कि जे संशय से जामे वाला द्वैत से दूर बा, हरमेस आत्म-साक्षात्कार में डूबल बा, पाप रहित होके जे हर प्राणी के कल्याण करे में व्यस्त बा, ऊ ब्राह्मणत्व (मुक्ति) के प्राप्त करेला -

लभन्ते ब्रह्मनिर्वाणमृषयः क्षीणकल्मषाः।
छिन्नद्वैधा यतात्मानः सर्वभूतहिते रताः।।२५/५।।

रामायणकालीन क्षत्रिय विश्वामित्र के ब्रह्मर्षि कहाए के साध कवनो समृद्धशाली राज्य के हथियावे के साध ना रहे। महाराज त ऊ रहबे कइले। उनकर साध ओह श्रेष्ठत्व के पावे के

संकल्प रहे, जे में आत्म-साक्षात्कार से सबके प्रति कल्याण करे के भावना आ निस्वार्थ प्रेम के दरस-परस होला -

तदेतत् प्रसमीक्ष्याहं प्रसन्नेन्द्रियमानसः।
तपो महत् समस्थास्ये यद् वै ब्रह्मत्वकारणम्।।
२४/५६/बालकांड, वा०रा०

मगध के सिंहासन पर बइठे वाला शुंग आ कण्व शासक आ दक्षिण के सातवाहन राजा ब्राह्मण रहले आ अइसन कवनो स्रोत नइखे जे इहन लोग के दोसरा राजवंशन के तुलना में ओछा सिद्ध करत होखे। एगो मउगड़ राजा बृहद्रथ से मगध साम्राज्य के अस्मिता बचावे खातिर पुष्यमित्र शुंग सैन्य निरीक्षणे के बेरा ओकर (राजा के) हत्या क देलस आ राज्य के अपहरण क लेलस। एह तरह से देश आ धर्म के रक्षा खातिर पुष्यमित्र शुंग ब्राह्मण-वृत्ति के सर्वथा त्याग के क्षात्र-धर्म अपना लेलस।

एगो इतिहासकार के अनुसार, "पुष्यमित्र ने देश और ध र्म की रक्षा के लिए राज्य का अपहरण किया, न कि अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए। अपने छत्तीस वर्षों के शासनकाल में वह आपत्तियों से जूझता रहा और भोग-विलास से दूर रहा। राज्य हस्तगत करने पर भी इस वीर और निःस्पृह ब्राह्मण ने न तो कभी सम्राट की उपाधि धारण की और न कोई विरुद ही धारण किया, बल्कि सदैव सेनापति ही बना रहा। अयोध्या का अभिलेख गर्व से कहता है कि उसने दो बार अश्वमेघ यज्ञ किये थे; किन्तु उसके लिए इस अभिलेख में भी 'सेनापति' विशेषण ही प्रयुक्त किया गया है। देशहित में स्वार्थत्याग का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है ?"(कुमार एवं कुमार : प्राचीन भारत का इतिहास, पृ०सं०- १७३)।

ईशा के ३२३ बरिस पहिले मगध प राज करे वाला महान चन्द्रगुप्त ब्राह्मण चाणक्य के ऋणी रहल। 'अर्थशास्त्र' के रचयिता चाणक्य के बारे में कुछ कहला से चुपे रहल ज्यादा श्रद्धास्पद होई। निःस्वार्थ देश-प्रेम के अइसन प्रकाश-पुंज कवनो काल में कवनो देशे ना जनमल। आज जद्यपि समय के दनवा-दइत ब्राह्मण के हाथ से बहुत कुछ छीन चुकल बा तबो नीति, व्यवहार, धर्म-परिपालन आ संस्कार के मामला में ऊ अलगे से चिन्हा जाला।

बाकिर ब्राह्मण माने जाति त एकदमे ना। उद्दालक अपना बेटा श्वेतकेतु के समुझावत कहले, 'बाबू, तूँ खाली जनमे से ब्राहमण होके मत रहि जइहऽ। हमनी के खानदान में अइसन कबो ना भइल कि खाली जतिए से लोग ब्राह्मण भइल, (खाली जनेव पहिन के आ चिरुकी बढ़ाई के ना !)

तथाकथित ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, शूद्र.... ई सब का ह ? खाली दिमागी बेमारी। कवनो वाद बनवला से वोट मिल सक'ता, हो सकऽता नोटो मिल जाव, बाकिर एगो सुघर जिनिगी अइसहीं चल जाई, जेकरा हाथ में लागी सोना। एही से ऋषि-महर्षि लोग आगाह करत कहऽता-

यावत् स्वस्थो ह्ययं देहो
यावन्मृत्युश्च दूरतः।
तावत् आत्महितं कुर्यात्
प्राणानते किं करिष्यति ?

अर्थात्, जब ले जान में जान बा, आत्महित में लागल रहे के चाहीं। कुचराई के ठीका पाँच तत्वन प छोड़ देबे के चाहीं। ऊ सब के ठोक-ठेठा के ठीक क दीहें सऽ, बाकिर ई बिरले होला। धरनीदास कहऽतारे -

माई रे, जीभ कहल ना जाई।
नाम रटन को करे निठुराई,
कूदि परे कुचराई।।

जब नाम रटन के धुन, त कुचराई कहाँ ? संसार के थोरे सुनावे के बा !... आ तब ब्राह्मणत्व सहज हो जाला।

हँ... ब्राह्मण माने जाति त एकदमे ना। शास्त्रन के स्पष्ट घोषणा बा- सब केहू शूद्रे रूप में पैदा होला, कबो-कभार केहू ब्राह्मण बन पावेला। सत्यकाम जाबालि- वेश्यापुत्र... ब्राह्मण के उदाहरण बाड़े। ब्राह्मणो शूद्रे पैदा होला। जन्म से का ब्राह्मण ? ब्राह्मण त जीवन से होला आ ओकरा पर अतना वाद-विवाद। ब्राह्मण से संवाद क के ब्राह्मण बनल जा सकेला -

काँचकाचनसंसर्गाधत्ते मारकतिम् द्युतिम्।
यथातत्सनिधानेन मूर्खो जाति प्रवीणताम्।।

'महाभारत' में स्पष्ट कहल गइल बा कि आचरणे ब्राह्मणत्व के कसौटी ह, जाति जानकारी भा धन ना। जे जाति से ब्राह्मण बा, ओकरा विशेष रूप से आचरण के खेयाल राखे के चाहीं।

...आ एक बेर जे ब्रह्म-साक्षात् क लेलस, ऊ फेन अब्रह्म का ओर कइसे जाई ? एक बेर जे ब्राह्मण हो गइल, ओकरा जिनिगी में शूद्र होखे के कवना संभावने नइखे। जवना के रउआ ब्राह्मणवाद कहऽतानी आ जे कम बेसी हर जगहा पसरल-फुलाता। ओकरा के कवनो दोसर नाँव दीं... स्वार्थवाद, भ्रष्टवाद, अवसरवाद, पाखंडवाद भा गुहथरवाद। कुछ लोग मूत के 'शिवाम्बु' कहेला। कहो ! हम कइसे कहीं कि मूत माने गंगाजल ? शब्द आ अर्थ के बीचे कबो ओइसन सम्बन्ध ना होखे जइसन राजनीतिक पार्टी आ नेता के बीचे होला... छने अमरावती, छने उमरावती।पंडिजी लोग कहेला कि अशुद्ध शब्दोच्चारण आ शब्दन में अशुद्ध अर्थारोपण के बड़ा भारी दोष लागेला, बाकिर मोरार जी भाई के शिष्य लोग ई ना माने। उनका खातिर ऊल-जलूल बक के अखबार में फोटो

छपवा लिहल ब्राह्मण बने से बेसी महत्त्वपूर्ण बा। उनकर जिनगी ! ऊ जवना में खुश रहऽसु। हँ, चान पर मत थूकसु। का फायदा ?

ना जीवन में, ना साहित्ये में कबो ब्राह्मणवाद रहे। यूनानी दार्शनिक अरस्तू आ उनका पीछे चले वाला बौद्धिकन के विचारन के कालांतर में 'पंडितवादी' भा 'पुराणवादी' कहे के चाल चलल। ई 'पंडितवाद' भा 'पुराणवाद' तथाकथित सृजित आ माइक बान्ह के चर्चित करावल गइल शब्द 'ब्राह्मणवाद' के पूर्वज ना रहे।

भाई, रउआ गलथेथ से हमनी किहाँ ब्राह्मणवाद रहबो कहल, त हमरा जनते ऊ जातिगत ना, आस्था, विश्वास आ संस्कार से सँवरल अइसन जीवन पद्धति रहे जेकर हर दशा आ दिशा सुभावे से पवित्र रहे। मध्यकाल भा आधुनिको काल में भारत के ब्राह्मण ई घोषणा क सकत रहे कि .....

ञ साधु न बाँधे गाँठरी, पेट समाता लेइ !
□ संतन को कहाँ सीकरी सों काम !
निज प्रभुमय देखिअ सबहिं, केहि सन करौं बिरोध .. !

भा, भूमा के सुख और महत्ता का जिसे आभास मात्र हो जाता है, उसे ये नश्वर चमकीले प्रदर्शन अभिभूत नहीं कर सकते ..... आदि ! आदि !

महाराज, कुछ निःस्वार्थ, निंर्दून्द रैदास चमार कि जयशंकर प्रसाद तेली ? धन्ना, पीपा, नानक, दादू, मीरा, सहजो का ब्राह्मण ना रहे ?

आ, यदि ई लोग ब्राह्मण रहे त, ब्राह्मणवाद माने जवन रउआ कहऽ तानी तवन; कि जवन ई लोग कहल तवन ? तुलसी के संगे तनी प्लस प्वाइंट ई रहे कि ऊ जाति आ कर्म दूनो से ब्राह्मण रहले, बाकिर एकरा खातिर उनका का-का ना सहे, आ कहे परल, आज ई रहस्य नइखे रह गइल। रउरे नियर तथाकथित एन्टी-ब्राह्मणवाद के पैरोकार लोग ओह महामानव के मुँह में अँगुरी लगा के, ओकरा के ई कहे प मजबूर कऽ दिहल कि -

धूत कहौ, अवधूत कहौ,
रजपूत कहौ, जोलहा कहौ कोऊ।
काहू की बेटी सों बेटा न व्याहब,
काहू की जाति बिगार न सोऊ।
तुलसी सरनाम गुलाम है राम को,
जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ।
माँगि के खैबो, मसीत को सोइबो,
लेबै को एक, न देबे को दोऊ।।

मनुष्य-मात्र के हित खातिर तुलसी कहले, सुनले ना त जवन मंदिर, तवन मस्जिद। मंदिर से खेदा के मस्जिद के आश्रय का ? जवन मंदिर में बा, तवने मस्जिद में बा आ तवने हर जगह बा। बा त हर जगह ऊहे, ना त कहीं कुछ नइखे। ब्राह्मण, क्षत्रिय ... ई सब पेट के नीचे के धोखा ह। भाई, रउआ ब्रह्म के कृपा से कलम संभरले बानीं। हाथ आ मुँह दूनों प कंट्रोल राखीं। साँच के साँच आ झूठ के झूठ कहल सर्वोत्तम ह बाकिर हमनी में से केहू अइसन दावेदार नइखे जे ललकार के कह सके कि ओकरा सत्य से साक्षात्कार हो चुकल बा। आत्म-साक्षात्कारी भा सत्य साक्षात्कारी के भाषा कइसन हो जाला, देखे के होखे ते निराला के देखीं। निराला जे 'चतुरी-चमार' आ 'बिल्लेसुर बकरिहा' के संगे-संग 'राम की शक्तिपूजा' लिखले -

ये कान्यकुब्ज कुल कुलांगार
खाकर पत्तल में करें छेद !

साहित्य समाज के दरपने ना ह, समाज के निर्मातो ह। इतिहास बताव'ता कि फ्रांसीसी क्रान्ति (१७८९ ई०) के निर्माण में रुसो, बोल्तेयर, मान्तेस्क्यू, दिदरो जइसन लोगन के महत्त्वपूर्ण भूमिका रहे।

हिन्दी में जवन तथाकथित जनवाद पैदा भइल आ आजुओ अलग-अलग नामन आ रूपन में हुड़ुका रहल बा- सैकड़न सोरि आ पचखा में पसरत-पँवरत जातिवाद, धर्मवाद आ सेक्सवाद के दागदार थोबर लिइले शांत-चित्त लोगन के उत्तेजित करे में अगहर बा। तथाकथित ब्राह्मणवाद आ 'दलितवाद' एही 'तथाकथित' के कोखी में जामल ऊ विकृतवाद ह, जेमे पहिले से तय उपकरण, बस्तु आ निष्कर्ष पर रचना रचाले, जइसे -

'क' से 'ख' के मिलान करीं -

"क"	"ख"
(१) ब्राह्मण लालची, क्रूर, कुपदी, स्वार्थी आ भ्रष्ट होला।	ब्राह्मण-रहित समाज श्रेष्ठ समाज होई काहें कि अउरी कवनो जाति में कवनो दुर्गुण ना होला, आ यदि साइत-संजोग होखबो करेला त ब्राह्मणे के वजह से।
(२) अतीत काल में हर अत्याचार के पीछे ब्राह्मण के हाथ रहल बा।	मन, वचन आ कर्म से ब्राह्मण प अत्याचार क के क्षतिपूर्ति क लिहल बा। अ-ब्राह्मण के कर्त्तव्य बा।

इतिहास, मनोविज्ञान, मानवशास्त्र, साहित्य... सब एह

तयशुदा उपकरणन आ निष्कर्षन के वंचना के अलावे अउर कुछ ना कही। इतिहास आ मानव-विज्ञान के स्पष्ट कहनाम बा कि कवनो जाति बिशुद्ध रुप से ई दावा नइखे क सकत कि ओकरा में निखालिस ओकरे जाति के खून बा। भारत प त आक्रमणन के ध ुरंधर प्रवाह कहिए से जारी रहल··· यवन, शक, हूण, फारसी, मुस्लिम, अँगरेज··· आ ई मए लोग दाम आ देंहि के लालची रहे ··· त भाई का ब्राह्मण आ का शूद्र ?

जीवन आ जगत के ई साँच ह कि जवन देबि, तवने मिली। घृणा देबि, घृणा मिली; प्रेम देबि; प्रेम। समाज के बाँटे वाला साहित्यकार, जे झूठ के साँच के तरह परोसे, ऊ कतनो महान होखे; श्रद्धा आ विश्वास के पात्र ना हो सके। हिन्दी के 'निराला' आ 'प्रेमचंद' दूनो जाना महान बाड़े, बाकिर निराला राजनीति से ऊपर रहले आ प्रेमचंद राजनीति में सउनाइल बाकिर बड़ा अलक्षित रूप से। प्रेमचंद के पाछा चले वाला एगो साहित्यकार भोजपुरिओ में बाड़े। हूल मारेला त हाथ में रुल लिइले हड़कावत चलेले- इहाँ कुक्कुरन के कमी नइखे, भाग ! भाग ! शायद अंत तक सद्बुद्धि आ जाउ ! प्रेमचंद के 'सद्गति' लिखला के बाद होश आइल त जनले कीचड़ से कीचड़ ना धोवाला। यदि लेखक के लेखनी समाज के साँच उजागर करी त ऊ अपने आप जना जाई कि ई साँच लेखक के अनुभव आ दर्द के अभिव्यक्ति ह कि लेखक कवनो राजनीतिक पार्टी के प्रवक्ता बन के साँच के जरी-सोरी मरोर रहल बा ! प्रेमचंद के अनुभव आ अभिव्यक्ति महान बा बाकिर हमरा त अइसन कवनो पुरोहित सुने-जाने में ना आइल जे अपना जजमान चमार के मुआ के, ओकरा गोड़े रसरी बान्ह के, ठिठरावत बधार में फेंक आइल होखे ! कला के साँच के, जीवन के साँच से; बेसी दूर हो गइला से आखिरस समाज आ साहित्ये के नुकसान होला ! कतने प्रेमचंद, कतने निराला, कतने आउर-बाउर-खाउर पैदा होइहें, मर-खप जइहें बाकिर साहित्य के शाश्वत-धारा ओही तरह से बहत चलल जाई, जइसे ऋग्वेद के ऋषियन के बेरा सहजे बहत चलल जात रहे।

···· त भइया, ब्राह्मणवाद ना कहि के कवनो अउरी वाद कहीं आ कुछुओ कहीं त मंगल पाण्डे, चित्तू पाण्डे, 'बिस्मिल', आजाद आ सैकड़न अइसन पावन लोगन के जरुर स्मरण क लीं, जे सँचहूँ के ब्राह्मण होइयो के, कबो जाति के कारने केहू प ताना ना मरले रहे। इतिहास गवाह बा। मंगले पाण्डे प जाति के लेके केहू गाभी मरले रहे, अंततः जेकर सुफल परिणति रहे···· स्वाधीनता के प्रथम गदर। ···· आ तनी संविधान निर्माता अंबेदकरो जी के सलाम-नमस्ते क लेब ! अगर खुश लउकिहें त पूछब- ब्राह्मण माने का ? ···· आ अम्बेदकर माने का ? आ यदि जबाब देबे में भीम जी लजासु त उनकरा मलकिनी डॉ. शारदा कबीर जी से पूछब कि अंबेदकर माने ब्राह्मण त ना, जे भीम जी के रोटी खिआ के, अतना पढ़ा के अतना तेज क दिहले जेकरा आँच से गान्हियो बाबा के पधिल-पधिल जाए परत रहे !

आशा बा, स्वस्थ-सानंद होखब ! ई हमार अंतिम पत्र ना ह।

साहित्य में वाद, विवाद आ संवाद चलत रहे के चाहीं। अइलत साफ होत रहेले। रहल राउर साक्षात्कार ना छपला के सवाल ! - त 'पाती' संपादक के जानकारी में आजु ले ई सब कुछुओ नइखे। साक्षात्कार हम लेले रहनी आ ना छपवावे में हमरे योगदान रहे। आ आज राउर 'ब्राह्मणवाद के शब्दार्थ' पढ़ के हमार मन बड़ा खुश भइल कि हम खाली एगो गलती कइनी, राउर साक्षात्कार लिहनीं बस। 'पाती' संपादक से निहोरा क के राउर साक्षात्कार छपवावे के दोसरकी गलती हम ना कइनीं।...ई हमसे होइबो ना करी।

आदरपूर्वक ...

एगो ब्राह्मण

विष्णुदेव तिवारी

●●●

[, d] 'ठेंगा' : एगो विचार प्रधान कहानी संग्रह

❑ विष्णुदेव

भोजपुरी कहानी के क्षेत्र में तीन गो अइसन नाँव बा जेकरा हर कहानी में, इहाँ तक कि भावो प्रधान कहानी में, कवनो ना कवनो विचार स्वभावतः आइए जाला। जहाँ विचार स्वाभाविक रूप से आ जाला, ओहिजा कहानी क्लासिक बन जाले बाकिर जहाँ-जहाँ विचार भाव प हावी होखत जनाला, ओहिजा-ओहिजा कहानी कमजोर आ बेस्वाद हो जाले। भोजपुरी कहानी के ई तीन गो नाँव बा- कृष्णानंद कृष्ण, सुरेश कांटक आ भगवती प्रसाद द्विवेदी। एह त्रयी में भगवती प्रसाद द्विवेदी भाव आ विचार के संतुलन में बेसी माहिर बाड़े। कहानी में विचार त होइबे करी बाकिर ओके जिनिगी के आँच आ समय के साँच के आवाँ में पाकि के निकले के होला। चारि गो कहानी पढ़ के हिन्दी-उर्दू के लीखि पर धुँआधार कलम-खरोंच देला भर से कला के आत्मिक उत्थान संभव ना होई। हिन्दी आ भोजपुरी के यथार्थ, समय के माँग आ आवश्यकता आ विज्ञान आ कला के नवीनतम खोजन से प्रभावित होली स, एह से कलागत गरिमा के प्रभाव कम ना हो पावे। बाइस कहानियन के संग्रह 'ठेंगा' द्विवेदी जी के टटका कहानी संग्रह ह, जेमे इनकर कला के विशिष्टता आ सोच साफ भइल बा आ जेमे से अधिकांश कहानी भिन्न-भिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित-चर्चित हो चुकल बा।

'खोंता' में आरंभ आ 'तमाशा' प समाप्त बाइसो कहानी के मूल में शहरी छलावा, आधुनिकता के दंश, अर्थ के प्रति लोलुप-कट्टरता, प्रेम के वासनात्मक विकास, टुकी-टुकी में बँटाइल अधसँसू जिनिगी आ एह सब में डूबत-पिसात, सरत-खेदात मनुष्यता के अनवरत संघर्ष के दर्शन होता।

भगवती प्रसाद द्विवेदी नागरी जीवन के कथाकार हवन। भोजपुरी खातिर ई शुभ बा कहें कि एहिजा अधिकांश जाना गाँवे में कथानक खोजत फिरेला। अनुचित नइखे- जे जहाँ रही, जवन सोची आ जेकर अनुभव पाकी उहे नू ओकरा रचना में झाँकी !

'ठेंगा' सँग्रह में 'ठेंगा' नाँव से जबरजस्त कहानी बा। द्विवेदी जी के गिनल-चुनल कालजयी कहानियन में ई शामिल बा। भोजपुरी के ई पहिलकी कहानी ह जेमे हिजड़न के जिनिगी के व्यथा प अतना बढ़िया ढँग से फोकस कइल गइल होखे। हिजड़ा लाली के माध्यम से परत-दर-परत खुलत ओकरा जरोह के पीड़ा, भोजन खातिर मजबूरी आ लाचारी में करत बाउर काम- शरीर यातना एह तरी व्यक्त भइल बा कि इरैसमस के नरक-वर्णन के याद आ जाता। मैक्सिक गोर्की के ऊ कहानी याद आ जाता जेमे एगो जवान नारी से जर्मन सैनिक अतना व्यभिचार करत बाड़े स, अतना व्यभिचार करत बाड़े स कि ऊ बुढ़ा जा तिया। ओकरा पता नइखे। आ जब रुसी सैनिक आवऽतारे स आ ऊ धधा के उहनी के स्वागत करत बिया, हप्तन खिआवत-पिआवत बिया आ चले के बेर जब रुसी सैनिक महतारी कह के ओकरा से विदा माँगत बाड़े स त ऊ फफा के रो दे तिया। अबे त ऊ नीक से जवानो ना भइल रहे त महतारी ? एमे रुसी सैनिकन के दोष ना रहे। दोष रहे युद्ध के, दोष रहे पुरूष वर्ग का वासना आ बलात्कार के। 'ठेंगा' कहानी 'मैं' शैली में लिखाइल बा, एसे एमे आत्मीयता के गइराइयो बेसी बा।

अँग्रेजी में जार्ज बनार्ड शॉ प्राब्लेम-प्ले के पुरोहित मानल जाले। आज के जिनिगी में कदम-कदम प प्रोब्लेम बा, अउरी कुछ होखे भा ना होखे। द्विवेदी जी के कहानी भोजपुरी कहानी के एगो बन्हल-बन्हाइल घोरदवान से निकाल के स्वतंत्र आ बड़हन मैदान में ले आवत बाड़ी स आ प्राब्लेम प्रस्तुत करत अलक्षित रूप से समाधान का ओर ईशारो करत जनातारी स। जेकर जइसन सोच-समझ ओइसन ऊ अर्थ लगाई; ईशारा के। जइसे 'फील गुड' कहानी में अपने घर परिवार में नोंचाइल-चोथाइल आ दुत्कारल गइल सुकांत बाबू दिल के दौरा त झेल ले तारे बाकिर पड़ोस के घर में लइकी के शादी में सम्मिलित होत, अपना लइकी के बिआह के बारे में जब ऊ सोचऽ तारे आ दहेज के दू लाख में उनकर तन-मन अँटकि के छटपटा जाता त ऊ समस्या के समाधान आत्महत्या में खोज ले तारे। अपना देंहि प पेट्रोल छिरिक के ऊ माचिस बार दे तारे आ लेखक के शब्दन में, जब तक होश रहता, फील गुल करत रहऽतारे।

'खोंता' में गरीब-मजदूरा वर्ग के शारीरिक आ मानसिक शोषण करे वाला कुपदी छुटभइया लोगन के यथार्थ के सँगे-सँगे परभू अस बेबस आ अलचार बाप के स्नैप शॉट खींचे में द्विवेदी जी के कहानीकार बड़ा सँयमित, मर्यादित आ वैचारिक रहल बा। असिद्ध हाथ में पड़ के एह कहानी के भोंकार-फार हो जाए के डर रहे।

'ठेंगा' के कहानियन के विस्तार भोजपुरी कहानी के थीम के विस्तार के रूप में त देखले जाई, कलाकारी के टहकत लिलारो के रूप में एकर चिन्हार हमेशा रही। समय के साथ चले वाला

रचनाकारे शाश्वत होला। द्विवेदी जी के 'ठेंगा' समय के साथ चलऽता, एह से एह में टिकाऊपन जादा बा, जइसे 'पाती' कहानी में औरत के प्रेम आ ओकर स्वाभिमान। प्रेम जाति आ उम्र से परे होला, प्रेम बे-शर्त स्वीकार करत, पुरुष के शर्त के बेशर्त ठोकरिआ देले। 'पाती' कहानी प्रेम से लबरेज एगो आधुनिका के व्यथा के कथा ह, जे हास्मान के पति (जे पूर्व प्रेमी बा) के कोरा में गिरला के जगहा कर्तव्य के रेगिस्तान में भटकल बेसी सुंदर समुझत बिया।

द्विवेदी जी के लगे ना विषय के समस्या बा, ना शीर्षक रखे के, ना लिखे के। समस्या परक कहानियन के पुरोधा होखलो प खुद समस्या-ग्रस्त नइखन, ई बहुत बड़ बात बा। इनिकरे सहध र्मी काँटक आ कृष्णानंद के कहानियन में कबो-कबो लेखकीय भटकाव आ उलझाव साफ-साफ लउक जाला।

'खोंता' कहानी संग्रह के शीर्षका में आधुनिकता बा, जइसे- 'बूने-बून टिपटिपात मन', 'मुट्ठी भर सपना', 'एगो अउर मीरा', 'दरद के दरिआव' आदि।

●●●

[nw] 'चउका बइठल महादेव' : टेढ़ जिनिगी के बीच के सीधा डँड़ार

❑ विष्णुदेव

डॉ० विवेकी राय एक जगहा कहले बाड़े कि कला के घीव बिना टेढ़ अँगुरी के ना निकले। डॉ० रमाशंकर श्रीवास्तव के 'चउका बइठल महादेव' के सोरहो कहानी बिना टेढ़े भइले कला के महत्तम ऊँचाई प सहजे चहुँपल बाड़ी स, ई अचरज सुखद बा। का भाषा, का भाव आ कहे के लूर-सहूर··· सब अइसन सहज कि बुद्धि के कतहूँ से उठुक लागे के कवनो संभावना ना। 'चउका बइठल महादेव' से लेके 'जनाना पार्ट' तक सोहरो सिंगार पूरा जा लाता। गाँव के गरिमा-गरीबी, शहर के त्रास-स्वार्थपरता, प्रेम के आकर्षण आ सफलता, हँसी-व्यंग्य आ गुदुरावन, हँसी-लोर··· सब कुछ एह कहानियन में परसल बा। मोह लेबे वाली प्रस्तुति के संगे मार्मिक अंत··· कवनो कहानी कवनो दृष्टि से काट लाएक नइखी स। जेकर नाक बड़ होखे, ऊ सूँघत रहो कमी !

भोजपुरी कहानियन के क्षेत्र में प्रो० ब्रजकिशोर, डॉ० अशोक द्विवेदी, कृष्णानंद कृष्ण, तैयब हुसैन पीड़ित, पाण्डेय सुरेन्द्र, भगवती प्रसाद द्विवेदी, काँटक, बरमेश्वर सिंह आदि कहानीकार सुघर उद्यान लगवले बा बाकिर डॉ० श्रीवास्तव अपना संवेदनामय सुघर अभिव्यक्ति के चलते फइलवें से चिन्हा जा तारे। आज के जटिल आ झाड़-झँखाड़ से भरल जिनिगी के बीच से कहानयिन के माध्यम से एगो सोझ राह खोज लिहल आसान त नाहिंए बा। डॉ० साहेब के लगावल कहानी के एह उद्यान के हर बिरिछ प्रीत के मोंजर से महमह मँहकता, इहाँ तक कि हँसी आ व्यंग्य के धारदार कहानियनों में ई प्रीत-मंजरी आपन खास सुवास छींटत लउकी, जइसे 'आगे से दू लगा लेब' कहानी में- "राउर खीस-पीत में हमार प्रीत के दुर्दशा हो जाई। हमरा त अतने इयाद बा, कि राउर खिसिआइल चेहरा बड़ा सुंदर लागेला। खीस-पीत त्याग के हमरा से टेलीफोन प तनी बतिया लेब, बाकिर दू जरुर लगा लेब।"

लेखक के सामयिक यथार्थ पर जबरजस्त पकड़ बा। ई पकड़ नीमन-बाउर अनुभवन से गुजरला के बादे संभव हो सकेला। कवनो-कवनो कहानी के अप्रत्याशित अंत अचरज भरल बाकिर सुखद बा। एकाध कहानी छोड़ के··· जइसे, 'हारसिन दीरघिन'··· अधिकांश कहानी सुखांत बाड़ी स, एह से ओढ़ल पीड़ा आ जोड़ल दुखवाद से मुक्त बाड़ी स।

'नाच पार्टी', 'बेर-बेर बोलावतिया बसंतिया' भा 'जिलेबी' जइसन कहानयिन के अंत, ओ. हेनरी के कहानियन अस बा··· अप्रत्याशित··· जेमे कला के महिमा, संवेदना के मरम आ यथार्थ के तिंताई साफ पता चल जाता। 'नाच पार्टी' में नचनिया जगदीश के कपार छिलवा लेला के बाद आ बाबू भरत सिंह के ई कहला के बावजूद कि 'छिलमुंडा लउंडा के नाच भला केकरा नीमन लागी' केकरो ई विश्वास नइखे कि जगदीश अबो नचिहें। जगदीश के मेहरारू के लइका होखे के दिन नगिचाइल बा आ दवा-बीरो कीने के पइसा नइखे। चाचा के घरे गमी रहे आ लोग उनकर बार छिलवा देलस। कतनो रोवले, कतनो धिधिअइले चाचा इचिको ना सुनले। केतना लोगन के करजा कपारे। अब पइसा के दी ? नाच के मेठ के आदेश- 'तूं फाइनल हिसाब कऽ ल आपन, आ हमार नाच-पार्टी छोड़ द !' बाकिर जगदीश नाचऽतारे, अइसन नाच कि नाच के अदाकारी आ गीत के बोल प समूचा शामियाना खामोश

! मूँड़ी प के बिग नइखे गिरत। साज के सुर में जगदीश के कला अपना समग्र उठान प होता आ उनकर मन अपना बेमरिता मेहरारू के निष्कलंक चेहरा में अपना नृत्य के प्रतिबिंब झाँकता।

संस्कृत साहित्य के भवभूति करुणा के एकमात्र रस मनले बाड़े। डॉ० श्रीवास्तव के कहानियन में करुणा संवेदना के धारातल फोर-फोर परगट होत रहति बा। करुणा के एहसास आ उदासी के उसाँस 'बोरसी', 'चिलम', 'जिलेबी', 'हारसिन दीरघिन', 'चउका बइठल महादेव' आदि कहानियन में महसूसल जा सकऽता। 'जिलेबी' कहानी में करुणा के भीतर से व्यंग्य के उरेह बड़ा जीवंत हो सकल बा। प्लेटोनिक प्रेम के एह कहानी में लवंगी के बोल्ड होखला के बादो अधबूढ़ गनेस पंडित ओकरा से बियाह करे के हियाव नइखन जुटा पावत। समाज के भय उनका के पस्त क देता। लवँगी दोसरा से बियाह क के ससुरा त चल जा तिया बाकिर पंडित के भुला नइखे पावत। ओकर व्यंग्य आ दर्द गनेस पंडित के नाँवे भेंजल जिलेबी के खदोना में जइसे अँटियो के अँट नइखे पावत। नारी व्यथा के सँगे-सँग सामाजिक विद्रूप के प्रतीकात्मक रूप में व्यक्त करे वाली ई एगो सशक्त कहानी बा।

कुछ कहानियन में आधुनिकता आ परंपरा के द्वन्द बड़ा तिक्खर बाकिर देखनउक बा। एहिजा लेखक तटस्थ रहऽता। ऊ यथार्थ के नाँव प आदर्श के आ आदर्श के नेवरती यथार्थ के गरदन मरोरे के पछपाती नइखे। 'बेर बेर बोलावत बिया बसंतिया' भा 'चउका बइठल महादेव' अस कहानी एकर परतोख बाड़ी स।

साँच त एके होला बाकिर ओकरा अभिव्यक्ति के ढँग बदल जाला। 'बेर बेर बोलावतिया बसंतिया' में 'चीफ की दावत' आ 'वापसी' (ऊषा प्रियंवदा) के सत्य के झलक बा। शहरी कृत्रिमता आ देखाऊ प्रेम से मोहभंग के ई कहानी बुजुर्गन के दर्द के रचे में सफल बिया। कहानी के अंत कटु यथार्थ से होता। पन्द्रहों दिन ना बीतल तले हीरापुर से खबर आ जाता कि बसंतिया के बियाह में, हित-पाहुन से मजाक करे खातिर, पीसल हरदी लेके महतारी एगो मेहरारू के देबे जात रही तले पनरोह प गोड़ बिछिला गइल। अब बड़का अस्पताल में देखावल जरुरी बा।

सँग्रह के पहिलकी कहानी 'चउका बइठल महादेव' में, 'रेणु' के कहानियन अस सनसनात आदर्श यथार्थ के छाती चीर के निकल आवत बा। जंगला, जंगला से फेकल पान के पीक, पीक से उपजल रार आ अस्तित्व से उपजल सहज मान एह कहानी के प्राण बा। नगेसर बो के वत्सल-चरित्र में कौशिक के 'ताई' के सहज दीप्ति स्वाभाविक रूप से देखल जा सकऽता। उनकर स्वाभिमानी आ झगराह सोभाव कलावती के स्नेह, श्रद्धा आ विश्वास में धुँआ-धुँआ हो जात बा आ कई दिन के उनकर रुसल-फूलल ढोलक के थाप के उघिया बिला जात बा।

भोजपुरी कहानियन के विकास में 'चउका बइठल महादेव' के कहानी, अपना खुद के जोत से, जगर-मगर करत रहिहें स; ई कहे में हमके कवनो दुविधा भा संकोच नइखे।

●●●

[rhu] भोजपुरी व्याकरण के एगो बेजोड़ किताब : "भोजपुरी हिन्दी"

लेखक- डा० शुकदेव सिंह, पृ० २६२, मूल्य- १७५/=

प्रकाशक- विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

उत्तर भारत के लोक जीवन से निकसल-विकसल शब्दन, लोकोक्तियन आ मुहावरन के शोधपूर्ण संग्रह से सजल-धजल, भोजपुरी के व्याकरण पर प्रकाश डाले वाली संग्रहणीय किताब "भोजपुरी हिन्दी" डा० शुकदेव सिंह के बरिसन-बरिस के श्रुति-स्मृति, पढ़ाई-लिखाई आ अनुभवन के प्रतिफल हवे।

एह किताब में भोजपुरी के ध्वनि, रूप-रचना, संज्ञा, कारक, विश्लेषण; संख्यावाचक सर्वनाम, क्रियापद, अव्यय आ ओकरा विभेद के व्याख्या आ वर्णन त बटले बा; भोजपुरी के सह बोलियन- मैथिली, वज्जिका, अंगिका, मगही आ काशिका आदि के खासियत के समेटल गइल बा। इहाँ तक कि बनारस के घाटन पर बोलल जाए वाला "घटही बोली" के जिकिर उहाँ का कइले बानी। भाषा का लिहाज से भोजपुरी बहुत समर्थ आ पनिगर भाषा मानल जाले। एह किताब में भोजपुरी ध्वनियन क स्वर, व्यंजन, परिवर्तन, रूप रचना आ विश्लेषण के विभिन्न रूपन के खुलके समझावल

गइल बा। स्वरान्त आ व्यन्जनान्त का हिसाब से भोजपुरी, भोजपुरी भाषा के खासियत शुकदेव सिंह जी बतावत बतावत ओकरा कारक-चिन्हन के आ विशेषण एकरा अलावे भोजपुरी के मूल धातु अन के रूप में व्यौहार में आवे वाला क्रियारूपन के वर्णन करत विद्वान भाषाविद् डा० शुकदेव सिंह भोजपुरी के समानांतर अउर बोलल जाए वाली भाषा बोलियन के खासियत एह किताब में बतवले बाड़न।

भोजपुरी माटी के सपूत, डा० शुकदेव सिंह के कर्मभूमि भोजपुरिये क्षेत्र रहल बा। एसे भोजपुरी के ओराइल, हेराइल आ भुलाइल जात शब्द संपदा, मुहावरा आ लोकोक्तियन के सुभाविक समझ आ विवेक, लेखक के ज्ञान आ अभिव्यक्ति के अउर प्रामाणिक बना देले बा। डा० शुकदेव सिंह के ई पुस्तक एह दिसाईं अउर सर्जनात्मक हो गइल बा कि ऊ खाली खोज अनुसंधान आ विवरण नइखन परोसले, बलुक भाषा के स्वरूप, गति आ प्रभाव के अनुभव का स्तर पर, जियला जोगवला का बाद, चिन्तन-मनन से समझे समझावे के इमानदार कोशिश कइले बाड़न।

"भोजपुरी हिन्दी" नॉव के ई किताब भोजपुरी लिखे-पढ़े, बोले-बतियावे वालन खातिर एगो बेशकीमती उपहार बा।

❑ सान्त्वना द्विवेदी

लघुकथा

जात-बिरादर

❑ मोती बी०ए०

एगो गांव में अकाल परि गइल। पसु-पंछी अदिमी जन भूखि-पियास से तड़पे, मुरझाए, मुवे लागल। सभे गांव आ घर-दुआर छोड़ि अन्न-पानी आ आसरा के खोज में भागे लागल। ओही गांव में एगो कुकुर 'झबरा' रहे। भुखन मुवे लागल त ऊहो दोसरा गांव क डहर धइलस।

दोसरा गांव पहुँच के 'झबरा' एगो घर में चुपचाप ढुकि गइल। जवन-कुछ भेंटाइल, भर पेट खइलस आ अघा गइल। घर क लोग, ना त ओके मारल ना दुरदुरावल। बहरा टहरे निकलल त गांव क कुक्कुर ओक धेरि के गोंगियाए, गुरनाए लगलन। झबरा अकेल परि गइल। कूल्हि कुक्कुर ओके काट-काट के बेदम क दिहले सँ आ अधमरू जानि छोड़ि के चल गइले सँ।

झबरा कवनो तरे उठि के ठाढ़ भइल। सोचे लागल....."इहवाँ से नीमन आ भल त आपन उहे गाँव रहल हा, उहाँ खाली अकाले नू रहल हा, जान क दुश्मन कुक्कुर त ना रहले हा सँ।" ऊ लटकत झटकत गाँवे लवटि आइल। अवते, गाँव के कुकुर ओके धेरि के पूछे लगलन स, " कहऽ झाबर उहाँ, खाए-पिए क जोगाड़ आ बात- ब्यौहार कइसन बा ?"

- " भाई मत पूछऽ जा, खाए-पिए के त बढ़िया इंतजाम बा, घर क मलिकार-मलिकाइन दयालू बा; बाकिर बड़हन दोस बा अपने जात-बिरादरी। उहाँ क खूँखार कुक्कुर बड़ा निर्दयी बाड़ें सँ, दोसरा कुक्कुर के जियत ना छोड़िहें सँ।" झाबर, कँहरत-कँहरत कहलें।

लघुकथा

'घाटा के सउदा'

❑ विनोद द्विवेदी

एकहरिया सड़क। मोड़ पर बस के रफ्तार ज्यों मधिमाइल तले...धायँ! धाँय !! बस घसिटात रूक गइल। ड्राइवर बहरा झाँके के कइलस त खोंपड़ी पर करिया नाल लाग गइल। पाँच छव गो मुँह बन्हले बस का भितरी घुसि गइले सऽ। एकहीं ललकार पर सब केहू आपन खनतलासी दे दिहल। मय लूटल माल, गेट पर खड़ा सरदार का सोझा पहुँचल। जल्दी से गिनाइल- नगदी साढ़े तीन हजार, पाँच-छव गो घड़ी, दू गो अँगूठी बस। सरदार गरजल- "साला भुक्खड़ बाड़ें स, लवटा द स, उनहन के।"

एगो पसिन्जर डेरात-हकलात, घड़ी लवटावे वाला मुँहबन्हवा से पुछलस,- 'काहें ए भइया अब काहे लवटावत बाड़ऽ ?'
एक थपरा ओकरा गाल पर मारत ऊ कहलस- "अरे स्सारे, काल्ह अखबार में छपित कि बस लुटा गइल आ थाना पर पाँच हजार चहुँपावे के पड़ित। तोरा नइखे बुझात, ई घाटा के सउदा बा।"

पण्डित जी के पतरा

राउर भविष्यफल (राशिफल)

❑ डॉ. नरेन्द्र कुमार तिवारी

मेष – मेष राशि के लोगन खातिर ई समय अनुकूल नइखे चलत। महत्वपूर्ण कार्य में बाधा पड़े के योग बा। गोचर से दूसरा मंगल आर्थिक परेशानी पैदा करिहें। मिथुन राशि के शुक्र बीच बीच में कीर्ति तथा धन के बढ़ावे वाला बाड़न। आसान काम भी कठिन मालूम होई। ३० जुलाई से बृहस्पति वक्री होके मकर राशि पर अइहे तब मध्यम फल मिली। ६ सितम्बर के शनि के राशि परिवर्तन मेष राशि वाला लोग के शुभ होई। शत्रु तथा रोग पर विजय मिली। आर्थिक स्थिति मजबूत होई। परिवार में कलह के कारण नुकसान के सम्भावना बा। शुभ कार्य में धन व्यय होई। वृहस्पति के जप और वृहस्पतिवार व्रत से लाभ होई। हनुमान चालीसा के पाठ से रूकल काम पूरा होई।

वृष– वृष राशि के लोगन के शनि प्रतिकूल फल देबे वाला बाड़न। परिवार में विवाद के कारण नुकसान होई। वक्री गुरू के नवम भाव पर रहला के कारण स्थिति में सुधार होई। धार सम्पत्ति में बढ़ोत्तरी, पदप्रतिष्ठा तथा राजनीति में सफलता मिली। ३० जुलाई के बाद समय शुभकारी होई। सालभर शनि ठीक फल देबे वाला बाड़न। शनि के जप २३००० तथा हुनमान चालिसा के पाठ कइला से सब बाधा दूर हो जाई। सावन के महीना में श्री के प्राप्ति अउरी सुख मिली। भादो में मान सम्मान में कमी तथा रोग के सम्भावना बा। क्वार में ४ अक्टूबर तक आर्थिक परेशानी रही। रूद्राभिषेक शुभकारी होई।

मिथुन– मिथुन राशि वाला लोगन खातिर इस समय सामान्य सुखदायक बा। नया काम में बाधा आई लेकिन बाधा टलि जाई। अन्त में सुफलता मिली। अनचाही यात्रा करेके पड़ी। माता-पिता के तीर्थ यात्रा करेके तथा धार्मिक काम करेके योग बा। गृह, भूमि के काम में सुलता मिली। ३० जुलाई के बाद रूकल काम पूरा होई। ६ सितम्बर के शनि के राशि परिवर्तन के कारण लाभ होई। परीक्षा आ सन्तान पक्ष में सफलता मिली। दूसरा भाव के केतु और आठवां भाव पर राहु के कारण परेशानी के सम्भावना बा। राहु और केतु के जप कइला से बिगड़ल काम सुधरि जाई।

कर्क– शनि के साढ़ेसाती के चलते कर्कराशि वाला लो परेशान रही। पारिवारिक दायित्व पूरा होई। पढ़ाई, भूमि, मकान में धन खर्च होई। धन के तंगी रही। व्यर्थ में दौड़भाग से मन ऊबी जाई। परिवार में रोग के अधिकता के कारण मन चिन्तित रहे। केहू निकट के व्यक्ति के अशुभ से मन दुखित रही। कर्क राशि पर केतु तथा गोचर से दूसरा भाव पर शनि तथा सांतवां पर गुरू व राहु के कारण स्थानहानि, यात्रा में हानि, तथा पीड़ा रही। रूद्राभिषेक तथा बटुकभैरव के जय करवला से सब काम बनि जाई। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी। व्यापार में लाभ होई। बटुकभैरव के जप से पत्नी के स्वास्थ्य भी ठीक हो जाई।

सिंह– सिंह राशि वाला लोग सामान्य रूप से सुखी आ प्रसन्न रहिहें। व्यापार के कवनों नया योजना बनी। शारीरिक पीड़ा व उच्च रक्त चाप के कारण परेशानी होई। सांसारिक सुख सुविधा के साधन प्राप्त होई। सिंह राशि पर शनि तथा शनि सूर्य के एक साथ रहला के कारण १८ अगस्त से १६ सितम्बर तक के समय स्वास्थ्य खातिर ठीक नईखे। विभिन्न प्रकार के परेशानी विभिन्न प्रकार से लाभ मिली। इ समय मिली जुली स्थिति पैदा करे वाला बा। अपने लोग से अनबन होई, पत्नी के स्वास्थ्य बाधायुक्त रही। भगवान शिव के आराधना व शनि के जय से लाभ होई।

कन्या– कन्या राशि के लोगन के लिए ई समय सामान्य सुखदायक बा। पंचम भाव के राहु के कारण मन में चंचलता अऊरी क्रोध बनल रही। छठां गुरू के वजह से परिवार में रोग रही तथा स्वयं स्वास्थ्य खराब रहीं। नवम् स्थान के मंगल धनागम करइहें। दशम के शुक्र सम्मान बढ़इहें। शनि भी ठीक स्थिति में नइखन। क्लेश, चिन्ता रही। निरर्थक भागदौड़ में मन में व्याकुलता रही। व्यापार अऊरी नौकरी में लाभ होई। सितम्बर के बाद परिवार में शुभ तथा मंगलकार्य होई। शनिवार

के प्रातः सायं पीपल वृक्ष के पास तिलतेल के दीपक जलावें के चाही। सुन्दरकाण्ड के पाठ करेके चाही।

तुला– तुला राशि के लोगन खातिर इ समय सामान्य रूप से शुभ बा। परिवार में मंगलकाम होई। वाहन प्राप्ति तथा घर निर्माण के योग बा। अधिक यात्रा के कारण तवियत खराब के सम्भावना बा। न्यायालय के काम में बाधा उपस्थित होई। वृहस्पति अनुकूल बाड़े। प्रतियोगिता में सफलता मिली। नौकरी आदि के प्राप्ति होई। सितम्बर से शनि के साढ़ेसाती शुरू होई। शनि के साढ़ेसाती शुरू होते अनेक तरह के परेशानी आवे के सम्भावना बा। वृहस्पति और शनि के जप करके चाही।

वृश्चिक– वृश्चिक राशि के लोगन के लिए इ समय मध्यम फलदायी बा। निर्माण कार्य में सफलता मिली। विवाह के विषय में अनुकूल वातावरण बनी। कठिन परिश्रम अउरी संघर्ष कइला पर सफलता मिली। मन में उद्विग्नता बेचैनी बनी रही। सन्तान के क्रिया कलाप से मानसिक कष्ट होई। दाम्पत्य जीवन सुखमय रही। २३.६.२००६ के पूर्व अचानक अपमान या कवनो लाच्छन लागे के सम्भावना बा एह कारण मन बेचैन रही। राहु अऊरी केतु के कारण परेशानी रही। चोट चपेट से परेशानी होई। हनुमान जी के पूजा तथा चण्डी पाठ कइला से सब बाधा दूर हो जाई।

धनु– धनु राशि के लोगन के लिए इ समय सुखदायक बा। स्वास्थ्य में सुधार होई तथा आमदनी में बढ़न्ती योग बा। मुकदमा वगैरह में जीत होई। दुश्मन धराशायी हो जइहें। पारिवारिक दायित्व पूरा होई। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ी शनि मध यम फल दिहें। ६ सितम्बर से स्थिति और सुधरी ६ सितम्बर के शनि के राशि परिवर्तन के कारण शुभ होई। नौकरी व्यापार के क्षेत्र में बढ़िया समय बा। परिवार में मांगलिक काम होई। नया काम होई। सावन में रोग के सम्भावना बा। उदर विकास तथा वात रोग के सम्भावना बा। १०८ बार हनुमान चालिसा के पाठ कइला से सब ठीक होई।

मकर– मकर राशि के लोग खातिर वृहस्पति विपरीत बाड़े। पद प्रतिष्ठा में कमी तथा आर्थिक परेशानी के सामना करेके पड़ी। निर्माण काम में बाधा आई। लड़ाई, झगड़ा से बचे के चाही। भाई बन्धु से विवाद के सम्भावना बा। घर से दूर रहे के पड़ी। स्वास्थ्य में गिरावट के कारण मन अशान्त रही। वृहस्पति के जय अउरी रूद्राभिषेक कईला से सब बाधा दूर होई। परिवार में मंगल होई। छूटल काम पूरा होई। नौकरी, व्यवसाय के कवनो नया योजना बनी। विरोधी पराजित होइहें।

कुम्भ– कुम्भ राशि के लोगन के लिए इ समय सामान्य बा। विभिन्न प्रकार के झंझट से गुजरे के पड़ी। अपने विश्वास पात्र व्यक्ति से धोखा होई। बढ़िया काम में पैसा खर्च होई। सन्तान के तरफ से मन खुश होई। परिश्रम के अनुसार सफलता ना मिली। मन में हमेशा असंतोष बनल रही। केहू निकट सम्बन्धी के निधन के कारण मन में दुःख होई। ६ सितम्बर से शनि के ढैया शुरू होई। शनि अउरी गुरू दूनो अनुकूल नइखन। वृहस्पति के जप पूजा तथा सुन्दर काण्ड के पाठ कइला से सब कष्ट दूर हो जाई।

मीन– मीन राशि के लिए समय अनुकूल बा। वृहस्पति तथा राहु शुभ फलदायक बाड़न। एह समय में जमीन, घर, वाहन, सन्तान, स्त्री आदि सुख सुविधा के प्राप्ति होई। लइकन के उन्नति देखि के मन प्रसन्न होई। कवनो स्थाई व्यवसाय के योजना बनी। पद प्रतिष्ठा नौकरी व्यवसाय में उन्नति होई। शत्रु धराशायी होइहें। दाम्पत्य जीवन सुखमय रही। परिवार में रोग के अधिकता से मन विचलित हो जाई। अध्ययन अध्यापन व प्रतियोगिता में सफलता क योग बा। भाई से मनमुटाव होई। रोज 'सूर्यार्घ्य' लाभकारी रही।

लघुकथा

इमानदारी क सजाय

❑ भोला प्रसाद आग्नेय

परसोतिम एगो प्राइमरी इसकूल में मास्टर रहले। अपना इसकूले समय से आवे जाये आ पासकराई वगैरह ना लेवे खातिर मसहूर रहलन। लइका पढ़ि-लिखि के बेरोजगारन के लाइन में खाड़ा रहे, आ एने परसोतिम रिटायरो हो गइलन। आपन जी.पी.एफ. वगैरह क पइसा पावते अपना लइका से परसोतिम कहलन।

"ए बेटा, अब तूं नोकरी के असरा छोड़ि के घरहीं के बइठका में सिरमिट आ लोहा के दोकान खोल द। नया-नया पक्का घर सभकर बनते रह ता, एसे एह दूनों के बिक्री हरदम होत रही।"

कुछ सिरमिट आ गइल आ कुछ लोहा के छड़ दुआरी पर रखि के दुकान चालू हो गइल। रोज कुछ न कुछ बिक्री होखे लागल। एसे रिटायरो भइला पर परसोतिम के घरे नून-रोटी के जोगाड़ हो जात रहे।

एक दिन परसोतिम अकेले दोकान खोल के बइठल रहलन। परसोतिम के एगो पुरान सँघतिया अइलन आ देखते बोल पड़लन- 'का हो, परसोतिम मास्टर ? लोहा आ सिरमिट के दोकान कइले बाड़S ? बुझाता कि तोहरो लइका जूनियर इन्जीनियर हो गइल। चलS, ठीके बा। ईमानदारी के चोला ढेर दिन ले ना रहि पावेला।' नोकरी में लूटल ई सब माल हवे न?

परसोतिम मास्टर मुँह लटकवले घर के भीतर चल गइलन।

किरकिटिया बोखार

❑ चितरंजन भारती

'देखीं साहेब, आज पँचवा दिन ह, उ फाइल देख लेतीं, त हमार काम हो जाइत। गाँव के नत्थू पहलवान दफ्तर में गिड़गिड़ात रहे- 'दू कोस दूर गाँव से पैदल आइल हई हजूर ? खेती के समय हS, परिवार बड़ा बाटे, दया करीं तनी हमरा प'।

'देखS, हमनी के तंग जिन करS, काल्ह आ जइहS, आज किरकेट मैच के आखिरी दिन हS, आज फुरसत नइखे। बाबू बोलले। उ फिर गिड़गिड़ाइल, -'काल्ह खेते में पानी देवे के बा हजूर। आजुवे कामवा क देती तS...'

- ठीक बा, तS दुपहरिया ले रूकS :' नथू पहलवान बाबू प विश्वास कके खइनी बनवलस, मुँह में दबलस आ बहरा जाके बइठ गइल। तनकी देर बाद एगो दोसर बाबू ओइजा पहुँचलन, - 'सब आफिस के इहे हाल बा सब त किरकेटे कमेन्टरी सुन रहल बा, आ हमनी के फाइल देंखी जा कि किरकेट सुनीं जा। सउसे देस, एही बोखार से परेशान बा।' एगो जोरदार ठहाका लागल फेर तनी रह के बाबू बोलल ऐ बेरी भारत हार जाइ का हो? ओही बेरा नथू पहलवान अन्दर घुसि अइलन बाबू चिचियाके बोलल अरे गँवार तोरा बुझात नइखे, इहां देस हार रहल बा, आ तोरा फाइल के परल बा।'

- 'बाबू अब कहीं त ओकरा के जिता दी!' नथू बोलल तS फेरू एगो जोरदार ठहाका लागल। बाबू फेरू बोलल, 'तू कपिल हउव कि अजहरूदीन ? कि तन्तर मन्तर जानेलS ? कि बस अइसही गांजा चढ़ा के चलल बाड़S ?

नथू पहलवान झट से मेज पर से ट्रांजिस्टर उठवलन आ जमीन प' पटक दिहलन। फेरू फाइल उठा के उनका सामने रखलन आ बोललन - 'उतरल कि ना किरकिटिया बोखार? अब देखिहS, देस जीत जाई। बस तू आपन कामवा करS !

बदरा रे बदरा !

(एक) ❑ अशोक द्विवेदी

जाए के कहवाँ,
धधाइल गइलऽ, कहवाँ ?
हाय राम बदरा, बन्हाइ गइलऽ कहवाँ ?

गँउवाँ-गिरउवाँ के
जगहा शहरिया
तहरो के नीक लागे माया-नगरिया
फिल्मी तरज प' हेराइ गइलऽ कहवाँ ?

हदसल लोगवा
हकासल माटी
छछनल धरती पियासल बाटी
निर्दय बररू, भुलाइ गइलऽ कहवाँ ?

काठ क करेज कइलऽ
उजड़ेला खोंता
धनवा के जगहा, पसरि गइले मोथा
बदरू हो बदरू, पराइ गइलऽ कहवाँ ?

गरमी जगावेले
संझा पराती
तलवा-तलइयन क
दरकेला छाती
हुड़के में सब, तूँ लुकाइ गइलऽ कहवाँ ?

बम्बइया धुन प तूँ
कबले थिरकलऽ ऽ
सुनलीं कि ओइजाँ झमाझम बरिसलऽ
आवे के एइजा, उँघाइ गइलऽ कहवाँ ?

●●

(दू) ❑ कन्हैया पाण्डेय

भइया, लड़िकवन के मन भइले अदरा
आइ के झमकि जइतऽ, केनियो से बदरा !

नदिया, पोखरवन क सूखि गइल पानी
अबले चुवल नाहीं, कतों ओरियानी
तनि एक भेंइ जइतऽ, धरती के अँचरा !

सगरी बिरउवन क जरल जाता पाती
चिरई-चुरूंगवो ले पीटऽतारे छाती
घेरले बा सुखला क सगरो से खतरा !

भइले बेहाल जन, तड़पेली धरती
आधे बोआइल, अधवा बा परती
आइ के बनाइ देतऽ खेतिया क जतरा !

अबकी उजरि जइहें, गरिबा के दुनिया
परले अफदरा में होरी अउर धनिया
झूठ कइ देतऽ आके बम्हना क पतरा !

आइ के झमकि जइतऽ, केनियो से बदरा !!

●●

केहू निबाहे न साथ

❑ हरिशंकर पाठक 'गुमनाम'

मन काँच मटिया क धरिला ए बाबा
पानी ससुरवा क रीत
भिहिले धरिलपन, पनिया परसले
बिसरत नान्हे क गीत।

अँगना क खँड़रिच, बगिया क कोइलरि
पोसलि सुगिया तोहार
पिंजड़ा क दुखवा न सहले सहाला
केकरा के लाईं गोहार ?

तनिको न सूझे इ जिनिगी अन्हरिया
कहवाँ बा आपन हाथ
घरवा क लोगवा न बूझे दरदिया
केहू निबाहे न साथ।

रतिया सहेजत, दिनवाँ अँगेजत
जिनिगी उमिरि अस जाय
मुहवाँ क उपरा घुघुटवा क तरवाँ
एक रंग आवे एक जाय।

सासु जे समझेली बेसहलि चेरिया
ननदी जे ओहू से हीन
पियवा जोगावेला सबकर नाता
दिनवाँ भइल मोर छीन।

तोहरो दुलार बाबा चित से न उतरे
माई क सहज सनेह
नइहर-सासुर दुइ टूक जिनिगी
बिधना क अजब उरेह !

●●

केहू निबाहे न साथ

❑ (स्व०) विश्वरंजन

सुख के अँखुवाइल छन, टोहे पाखी मन
चोंच में दबवले चुप, एगो धुन राम !

कवनो अँगना चुन ले दाना भा तिनका
बरखा-बूनी में ऊ डाढ़ि प' गझिनका
नेह के बना लेबे खोंता सुख-धान !

जमल बइठ, भीती पर परत उबासी के
सुलह का दरारन में फँसल, निकासी के ?
छाजन भर के उड़ान में उमिर तमाम !

झिरियन से साँसन के स्वर सुरराएला
दिन सोनहुला क्षितिज पर जब भुरभुराएला
पाँख सँगे डगरे तब सुरूज भोर-शाम !

सुख के अँखुवाइल छन, टोहे पाखी मन
चोंच में दबवले चुप, एगो धुन राम !

●●

दू गो गीत

(एक) केहू निबाहे न साथ

❑ हरिशंकर पाठक 'गुमनाम'

मन काँच मटिया क धरिला ए बाबा
पानी ससुरवा क रीत
भिहिले घरिलपन, पनिया परसले
बिसरत नान्हे क गीत।

अँगना क खँड़रिच, बगिया क कोइलरि
पोसलि सुगिया तोहार
पिंजड़ा क दुखवा न सहले सहाला
केकरा के लाईं गोहार ?

तनिको न सूझे इ जिनिगी अन्हरिया
कहवाँ बा आपन हाथ
घरवा क लोगवा न बूझे दरदिया
केहू निबाहे न साथ।

रतिया सहेजत, दिनवाँ अँगेजत
जिनिगी उमिरि अस जाय
मुहवाँ क उपरा घुघुटवा क तरवाँ
एक रंग आवे एक जाय।

सासु जे समझेली बेसहलि चेरिया
ननदी जे ओहू से हीन
पियवा जोगावेला सबकर नाता
दिनवाँ भइल मोर छीन।

तोहरो दुलार बाबा चित से न उतरे
माई क सहज सनेह
नइहर-सासुर दुइ टूक जिनिगी
बिधना क अजब उरेह !

● ●

(दू) पाखी मन

❑ (स्व०) विश्वरंजन

सुख के अँखुवाइल छन, टोहे पाखी मन
चोंच में दबवले चुप, एगो धुन राम !

कवनो अँगना चुन ले दाना भा तिनका
बरखा-बूनी में ऊ डाढ़ि प' गझिनका
नेह के बना लेबे खोंता सुख-धाम !

जमल बइठ, भीती पर परत उबासी के
सुलह का दरारन में फँसल, निकासी के ?
छाजन भर के उड़ान में उमिर तमाम !

झिरियन से साँसन के स्वर सुरसुराएला
दिन सोनहुला क्षितिज पर जब भुरभुराएला
पाँख सँगे डगरे तब सुरुज भोर-शाम !

सुख के अँखुवाइल छन, टोहे पाखी मन
चोंच में दबवले चुप, एगो धुन राम !

● ●

रजि0 नं0– आर0एन0 3548/79 (वर्ष 1979)

'पाती'/सितं0, 2009

स्वामित्व, प्रकाशक– सम्पादक डॉ0 अशोक द्विवेदी, 47– टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया (उ0प्र0)
खातिर रवि आफसेट, बलिया से मुद्रित।